



मई-जुलाई, 2021 ■ वर्ष : 66 ■ अंक : 08-10 ■ पृष्ठ : 76 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अप्रत

संयमः खलु जीवनम्



उपहार

योजना

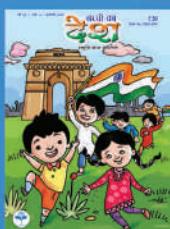
15 सितंबर, 2021 तक

अणुविभा की दो राष्ट्रीय पत्रिकाओं



आहिसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत



बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

के सदस्य बनिए और पाइए...

12 माह पर

13 अंक

36 माह पर

39 अंक

60 माह पर

65 अंक

120 माह पर

130 अंक

अणुव्रत समितियों के लिए

10 सदस्यता पर **20** ग्राम चौंदी का स्थिका ('अणुव्रत' के लिए) एवं

10 ग्राम ('बच्चों का देश' के लिए)

★ सदस्यता शुल्क की कुल राशि 10 हजार ('अणुव्रत' के लिए) एवं 5 हजार ('बच्चों का देश' के लिए) या इससे अधिक होने पर 10% की अतिरिक्त छूट।

★ सर्वाधिक सदस्य बनाने वाली 10 अणुव्रत समितियों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

बैंक विवरण

ANUVRAT VISHWA
BHARATI SOCIETY

बच्चों का देश

IDBI BANK

Rajsamand

A/c - 104104000046914

IFS Code - IBKL0000104

अणुव्रत पत्रिका

CANARA BANK

DDU Marg, New Delhi

A/c - 0158101120312

IFS Code - CNRB0000158

सदस्यता शुल्क

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	600	300
3 वर्ष	1500	800
5 वर्ष	2500	1200
10 वर्ष	5000	2400
15 वर्ष *	11000	7000

*15 वर्ष 'योगक्षेमी' - फोटो व संक्षिप्त परिचय पत्रिका के 1 अंक में प्रकाशित किया जाएगा।



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

समर्पक : +91 98112 42365, +91 91166 34512, +91 91166 34515

संजन्य : श्री कन्हैयालाल राजेश मयुर चिप्पड़, बंगलुरु



वर्ष 66 • अंक 08-10 • कुल पृष्ठ 76 • मई से जुलाई, 2021

सम्पादक संचय जैन

सह-सम्पादक मोहन मंगलम

:: कार्यालय ::

अणुव्रत विश्व भारती

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-23233345, मो : 9116634512

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 50	₹ 350
एकवर्षीय	- ₹ 600	का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर
त्रैवर्षीय	- ₹ 1500	आप अपनी प्रति कोरियर से
पंचवर्षीय	- ₹ 2500	मंगवा सकते हैं।
दसवर्षीय	- ₹ 5000	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
योगक्षेमी (15 yrs.)	- ₹ 11000	केनरा बैंक

A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गई प्रकाशन सामग्री को Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी।
- वाट्सअप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी वित्तन है।

— पं. जवाहरलाल नेहरू



अणुव्रत | मई-जुलाई 2021 | 03

॥ अनुक्रमणिका ॥

प्रेरणा पाठ्येय		कहानी	
* मानव-मानव का धर्म... आचार्य तुलसी	06	* अविश्वास का नश्तर एस.भाग्यम शर्मा	30
* नैतिकता का त्रिकोण आचार्य महाप्रज्ञ	08		
आलेख			
* अणुव्रत : एक जीवन दर्शन मुनि सुखलाल	16	* शिखरों के हकदार रामनारायण हलधर	11
* अणुव्रत का संदेश है नैतिकता डॉ. मुनि मदन कुमार	18	* अगर जिन्दगी में रिश्ते... अशोक अंजुम	19
* प्रामाणिकता व्यावसायिक... पुष्पा हिरण	20	* जिंदगी है कितनी मजबूर डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र	35
* भगवान महावीर और अहिंसा डॉ. दिलीप धींग	22	* फिर क्यों उदास है? राजेन्द्र वर्मा	45
* बच्चों तक पहुंचने दें... मानस रंजन महापात्र	24	❖ संपादकीय	05
* उठो, जागो, भागो द्वारिका प्रसाद अग्रवाल	26	❖ अतीत के झारोंसे से	12
* आइए, सुनें पक्षियों की पुकार श्रुति पाण्डेय	27	❖ परिचर्चा	38
* करुणा ही साहित्य का धर्म गिरीश पंकज	29	❖ कदमों के निशां	41
* संघर्ष : जीवन का एक हिस्सा कीर्ति श्रीवास्तव	33	❖ फॉरेस्ट मैन ऑफ इण्डिया	46
* सत्य ही सुंदर है परिचय दास	34	❖ अणुव्रत संवेदन	51
* पत्रकारिता का बदलता स्वरूप... राजेन्द्र बोड़ा	36	❖ अहिंसा यात्रा समाचार	52
* भौतिकवाद और मानवीय... जयप्रकाश नारायण	42	❖ 25वां महाप्रयाण दिवस (एक रिपोर्ट)	54
* बचाएं बीमार होते बचपन को दिनेश प्रतापसिंह चित्रेश	44	❖ चुनावशुद्धि अभियान	56
* Gandhi and Communal... Anil Dutta Mishra	48	❖ अणुव्रत संसदीय मंच वेबीनार	57
		❖ पत्रिका उपहार योजना	59
		❖ अणुव्रत समाचार	62
		❖ जीवनशैली कार्यशाला	65
		❖ पर्यावरणशुद्धि अभियान	70
		❖ परिणाम Q10 प्रतियोगिता	74



संकट से मुक्ति का मंत्र ‘संयमः खलु जीवनम्’

अज भारत एक असाधारण संकट से गुजर रहा है। जिन्दगी का यह संकट झकझोर देने वाला है। जिन्होंने अपने परिजनों को खोया है, उनके लिए तो यह महामारी किसी दुःख से कम नहीं है। उस से भी तकलीफदेह हैं लाचार कर देने वाली वो असहनीय परिस्थितियाँ जिनसे लोग गुजरे हैं और गुजर रहे हैं। आज के इस वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति के युग में भी इनसान इतना मजबूर हो जाएगा, यह कल्पनातीत है।

कोरोना महामारी से जनित परिस्थितियाँ इतनी भयावह क्यों बन गईं? इस दिशा में जब चिन्तन मुड़ता है तो अनेक कोण उद्घाटित होते हैं। देश की राजनीति आज जिस दौर से गुजर रही है, उसमें सबसे पहले सिस्टम पर सवाल उठना स्वाभाविक ही है। दूसरा प्रश्न उठता है स्वार्थपरकता पर! क्या इस संकट की घड़ी में भी किसी की जान से खेलकर कोई अपनी स्वार्थपूर्ति में व्यस्त रह सकता है? ऐसी घटनाएँ हमारी मानवीयता पर गम्भीर प्रश्न खड़ा करती हैं। तीसरा प्रश्न हमारे अपने आचरण को कठघरे में खड़ा करता है। हमारा आचरण संकट से मुकाबला करने में सहायक रहा है या संकट को बढ़ाने में!

यह जानते हुए भी कि हमारा असंयमित आचरण न केवल दूसरों की बल्कि हमारी अपनी जान को भी जोखिम में डाल सकता है, हम गैरजिम्मेदाराना आचरण करते चले गए। यह आशा थी, और अपेक्षा भी, कि कोरोना काल में हम संयम के महत्व को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे। लेकिन, कोरोना की दूसरी लहर ने स्पष्ट कर दिया कि हमने यहाँ भारी चूक की है। अपने अनुशासनहीन रवैये के कारण हमने संकट को अपने घर में घुसने का आमंत्रण दे दिया।

आज की परिस्थितियों को देख कर तो लगता है कि सात दशक पूर्व आचार्य तुलसी द्वारा दिया गया मंत्र – ‘संयमः खलु जीवनम्’ अर्थात् ‘संयम ही जीवन है’, मानो कोरोना संकट से बचाव के लिए ही दिया गया हो। महापुरुषों की दूरदर्शिता हमें वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की आहट देती है। आने वाली पीढ़ियाँ उससे कितना लाभ उठा सकती हैं, यह उस पीढ़ी की अपनी समझ पर निर्भर करता है। संयम ही जीवन है—अणुव्रत का यह ध्येय वाक्य कोरोना ही क्यों, इनसान के सामने उपस्थित होने वाली, आन्तरिक और बाहरी, हर एक समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है।

यह महामारी तो मानवता को लहूलुहान कर के एक दिन चली जाएगी लेकिन क्या हम इससे कोई सीख ले पाएँगे? क्या हम पुनः संयम प्रधान जीवनशैली की ओर लौटेंगे? एक ऐसी जीवनशैली जो प्रकृति के नजदीक है, एक ऐसी जीवनशैली जो मानवीयता से ओतप्रोत है और एक ऐसी जीवनशैली जो शान्ति और सुकून देने वाली है! आने वाली पीढ़ियाँ हमें इसलिए याद करेंगी कि हमने अपनी गलतियों से सीख ली या फिर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर अपनी ही पीठ थपथपाते रहे!

सं.जै.

sanchay_avb@yahoo.com



नै

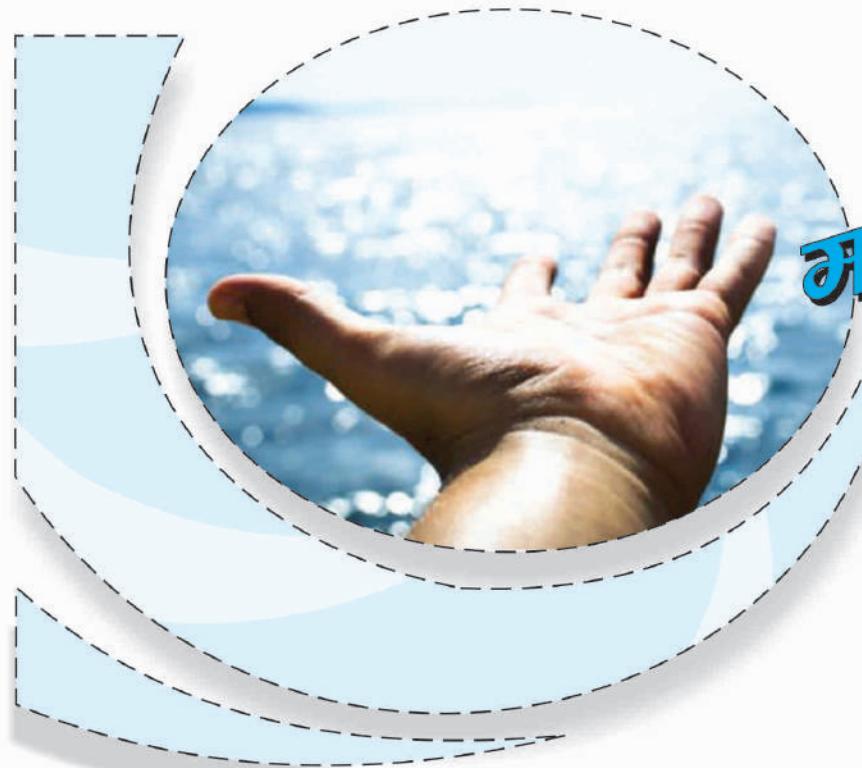
तिक और सांस्कृतिक मूल्यों की खोज करने वाला समाज प्रकाश की खोज करता है, अमृत की खोज करता है और आनन्द की खोज करता है। जिस समाज में नीति और संस्कृति का वर्चरच है, वह समाज उन्नत एवं समृद्ध समाज है। उन्नति और समृद्धि का मानदण्ड बड़े-बड़े भवन, मिलें, कारखाने या लम्बी-चौड़ी सड़कें नहीं होतीं, उनका मानक है नीति और संस्कृति से भरा हुआ लोक-जीवन।

भारतीय लोक-जीवन को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य विरासत में मिले हुए हैं। विरासत में प्राप्त मूल्यों की सुरक्षा और विकास का दायित्व वर्तमान पीढ़ी पर होता है। भारत की वर्तमान पीढ़ी के सामने एक जीवित और प्रतीक्षातुर सन्नाटा छाया हुआ है। उनके सामने एक ओर है अपने पुरखों द्वारा बोयी गयी नीति की फसल तथा दूसरी ओर है दूर-दूर तक फैला हुआ अनैतिकता का मरुस्थल। उस मरुस्थल में नीति की लहर लाने के लिए दृढ़ संकल्प और तीव्र प्रयत्न की अपेक्षा है। संकल्पहीनता एवं अकर्मण्यता जीवन के लिए अभिशाप हैं। जिस समाज या देश में संकल्पहीनता और अकर्मण्य व्यक्तियों की संख्या बढ़ने लगती है, उसकी प्रगति के आगे प्रश्नचिह्न लग जाता है।

दशकों तक भारतवर्ष राजनैतिक दासता के धेरे में बंदी रहा। देश के अधिसंख्य लोगों ने उस दासता को सहज भाव से अपने ऊपर ओढ़ लिया था। उनके मन में भारत को स्वतंत्र देखने का न तो कोई स्वप्न था और

न कोई संकल्प। कुछ चेतनाशील युवकों में अन्तर्दृष्टि जगा। उन्होंने देश को दासता की गिरफ्त से मुक्त कराने का संकल्प किया और वे अहिंसक शक्ति का आलम्बन लेकर मैदान में उतर आये। वर्षों तक शारीरिक और मानसिक यातना भोगकर भी उन्होंने हिंसा का सहारा नहीं लिया। आखिर अहिंसा की जीत हुई, भारत स्वतंत्र हुआ और भारतीय जनता स्वतंत्रता की खुशियों में झूम उठी। अणुव्रत आंदोलन का इतिहास काल के उसी बिंदु पर जाकर रुकता है।

अणुव्रत का लक्ष्य है—व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में पनपने वाली बुराइयों को दूर कर, एक नीतिमान और चरित्रनिष्ठ पीढ़ी का निर्माण। इसकी संरचना असाम्रदायिक और मानवीय दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि पर की गयी है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् संकल्प और सम्यक् आचरण—अणुव्रत का कार्यक्रम है। यह अपराध—चेतना को बदलने का आंदोलन है। अपराधी मनोवृत्ति का शोधन इसे अभीष्ट है। इसके लिए यह किसी दण्ड या कानून से भी अधिक महत्व हृदय परिवर्तन को देता है। इसमें देश, काल, परिस्थिति, जाति और मजहब आदि को गौण कर सर्व—धर्म—सम्मत तत्वों का समाकलन किया गया है। निःशस्त्रीकरण, मानवीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक कुरुदियों का बहिष्कार, व्यसन—मुक्ति और नैतिक मूल्यों की स्थापना इस युग की समस्याओं का सीधा समाधान है। अणुव्रत मनुष्य को यही समाधान देने का उपक्रम है।



मानव-मानव का धर्म अणुव्रत

आचार्य तुलसी



अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन एक सुचिन्तित विचार—यात्रा की निष्पत्ति है। उस यात्रा के कुछ विचार—बिंदु ये हैं—

■ धर्म और सम्प्रदाय एक नहीं हैं। यह एक मान्यता है। किंतु सम्प्रदायविहीन धर्म का कोई रूप नहीं है। धर्म के दो रूप हैं—चरित्र और उपासना। चरित्र का पालन कठिन है, उपासना की प्रक्रिया सरल है। फिर भी चरित्र मुख्य है और उपासना गौण है। उस चरित्र—प्रधान धर्म को उपासना—प्रधान बनाकर मनुष्य क्रियाकांडों में ही उलझ रहा है। इससे धर्म रुढ़ बन रहा है और उसका प्रायोगिक रूप विस्मृत हो रहा है।

■ धर्म के क्षेत्र में भय और प्रलोभन को स्थान नहीं है। नरक का भय और स्वर्ग का प्रलोभन—यदि इसी प्रेरणा से धर्म का आचरण किया जाता है तो इससे वर्तमान को क्या लाभ मिलेगा? वर्तमान जीवन की शुद्धि के अभाव में परलोक सुधार के रंगीन सपने मन को कब तक आश्वस्त करते रहेंगे।

■ धर्म पर किसी जाति, प्रांत, वर्ग या मजहब का आधिपत्य नहीं होना चाहिए। धर्म की प्रभुसत्ता अखण्ड है। जब—जब उसे बांटने का प्रयत्न होता है, धर्म के नाम पर संघर्ष खड़े हो जाते हैं। इस आत्मघाती रिथित से बचने के लिए धर्म को सब सीमाओं से मुक्त रखना चाहिए।

■ कुछ ऐसी जातियां हैं, जिनका कोई धर्म ही नहीं है। शास्त्रों की दुहाई देकर उन्हें धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। क्या कोई ऐसा धर्म नहीं हो सकता, जो मानव मात्र को गले लगाकर उसका मार्गदर्शन कर सके।

■ मनुष्य दिनभर करणीय और अकरणीय का भेद किये बिना कर्म करता रहता है क्योंकि उसके सामने सबसे बड़ा आलम्बन है 'धर्म—रथान'। बुरे से बुरा काम करने वाला भी मन्दिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्म स्थानों में जाता है, पूजा—पाठ करता है और सोचता है कि मेरे सारे पाप धुल गये। यह धर्म और भगवान के साथ खिलवाड़ है। क्या कोई ऐसा धर्म नहीं हो सकता, जो व्यक्ति के इस भ्रम को तोड़कर उसे अपने प्रति प्रामाणिक बना सके?

इन्हीं सब बातों की परिक्रमा करते—करते अणुव्रत की परिकल्पना सामने आ गयी। अणु और व्रत—इन दो शब्दों के योग से अणुव्रत बना है। अणु का अर्थ है सूक्ष्म और व्रत का अर्थ है संकल्प। संकल्प कितना ही सूक्ष्म या छोटा क्यों न हो, उसकी शक्ति असीम है। अणुबम के इस युग में अणुव्रत जैसे धर्म की ही अपेक्षा थी। आकार में सूक्ष्म होने पर भी अणुबम एक शक्ति—सम्पन्न अस्त्र है। इसी प्रकार अणुव्रत में भी असीम शक्ति है। यह दूसरी बात है कि अणुबम की

अणुव्रत का लक्ष्य है—
व्यक्ति, समाज और राष्ट्र
के जीवन में पनपने
वाली बुराइयों को दूर कर,
एक
नीतिमान और चरित्रनिष्ठ
पीढ़ी का निर्माण।

शक्ति विध्वंसात्मक है और अणुव्रत की शक्ति सृजनात्मक है। अणुबम मानवजाति का संहारक है, जबकि अणुव्रत मानव—जीवन का निर्माता है।

■ अणुव्रत एक धर्म है, किंतु इसके पीछे कोई सम्प्रदाय नहीं है। सभी सम्प्रदायों के लोग इसे अपना धर्म मानते हैं, किंतु इस पर किसी सम्प्रदाय विशेष की मुद्रा नहीं है।

■ अणुव्रत में उपासना का तत्त्व गौण है और चरित्र की प्रधानता है। यह धर्म को रुद्धियों और आळम्बरों के घेरे से मुक्त कर प्रयोग का धरातल देता है।

■ अणुव्रत वर्तमानजीवी है। यह परलोक—सुधार का आश्वासन नहीं देता है, पर इस जीवन को शांत, स्वस्थ एवं सुखमय बनाने का दिशादर्शन देता है।

■ अणुव्रत एक मानवीय आचार संहिता है। मुख्य रूप से इसकी जितनी धाराएं हैं, उनका संबंध वर्तमान परिस्थितियों और जीवन की शुद्धि के साथ है।

■ अणुव्रत जाति, प्रांत, भाषा आदि संकीर्णताओं से जकड़ा हुआ नहीं है। इसका द्वार मानव मात्र के लिए खुला है। कोई भी मनुष्य अणुव्रती बनकर सही अर्थ में मनुष्य बन सकता है।

■ अणुव्रत का धर्म—स्थान है व्यक्ति का कार्यक्षेत्र। कोई व्यक्ति मंदिर, मस्जिद आदि धर्म—स्थानों में जाए या नहीं, उपासना करे या नहीं, पर अपने कर्म के प्रति ईमानदार रहे, यही उसकी धार्मिकता है।

■ बढ़ती हुई आकांक्षाएं दुःख का प्रमुख कारण हैं। अणुव्रत ने आकांक्षाओं को सीमित करने का मार्गदर्शन देते हुए एक घोष दिया—‘संयमः खलु जीवनम्’—संयम ही जीवन है। इस आदर्श की स्वीकृति जीने की सबसे बड़ी कला है।

अणुव्रत की शीतल छाया के नीचे मानवजाति अपना नया इतिहास लिखे और भावी पीढ़ी के लिए एक ऐसी स्वस्थ यादगार छोड़ जाए, जो उसको युग—युग तक दिशा—दर्शन देती रहे, यह अपेक्षा है। ■





नैतिकता का त्रिकोण

आचार्य महाप्रङ्ग

एक हमारा अपना जगत् है, जिसकी सीमाओं को हम व्यक्तिगत जीवन कहते हैं। वे सीमाएं हैं, शरीर, इन्द्रिय और मन। इन सीमाओं में एक चेतना है, जो आज भी रहस्यपूर्ण है। एक हमारा बाहरी जगत् है, जिसके साथ हम अपना सम्पर्क बनाए रखते हैं। सम्पर्क के माध्यम हैं – शरीर, इन्द्रिय, मन और वाणी।

जब हमारी इन्द्रियां और मन अपने जगत् (या अन्तर्-जगत) में लीन रहते हैं, बाहरी संबंधों या सम्पर्कों से प्रभावित नहीं होते, बाहर की ओर नहीं दौड़ते, वह स्थिति अध्यात्म है। परिभाषा की शब्दावली में कहा जा सकता है – चेतना जगत् की बाह्य जगत् से असंबंध की जो स्थिति है, वह अध्यात्म है। चेतना जगत् का बाह्य जगत् के साथ जो सम्पर्क स्थापित होता है, वह सामुदायिक जीवन है। उसका आधार संबंध है। संबंध का शुद्धि का नाम नैतिकता है।

नैतिकता का अर्थ है संबंध-शुद्धि का विज्ञान। संबंध के वर्गीकृत रूप तीन हैं, जो संबंधनीय तत्त्वों के आधार पर निश्चित किए जा सकते हैं। संबंधनीय तत्त्व –

- १ चेतना जगत्
- २ भौतिक जगत्
- ३ भावनात्मक जगत्

व्यक्ति और चेतना जगत्-व्यक्ति और परिवार, व्यक्ति और जाति, व्यक्ति और समाज, व्यक्ति और राष्ट्र, व्यक्ति और जगत्।

व्यक्ति और भौतिक जगत्-व्यक्ति और सम्पदा।

व्यक्ति और भावनात्मक जगत्-व्यक्ति और शासन, व्यक्ति और स्वतंत्रता।

शुद्धि की कसौटी के बारे में मतैक्य नहीं है, फिर भी हर विचारक उसे प्रस्तुत करता है। हमारे मतानुसार संबंध-शुद्धि की कसौटी है – ऋजुता, मृदुता, शांति और त्याग से समन्वित मनोवृत्ति।

हर व्यक्ति में चार प्रकार की वृत्तियां हैं :-

- १ संग्रह
- २ आवेश
- ३ गर्व (बड़ा मानना)
- ४ माया (छिपाना)

चार वृत्तियां और होती हैं। वे उक्त चार प्रवृत्तियों की प्रतिपक्षी हैं :

- १ त्याग या विसर्जन
- २ शांति
- ३ समानता या मृदुता
- ४ ऋजुता या स्पष्टता

ये दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां वैयक्तिक हैं, इसलिए इन्हें अनैतिक और नैतिक नहीं कहा जा सकता। इन्हें आध्यात्मिक (या वैयक्तिक) दोष और गुण कहा जा सकता है। इन वृत्तियों के परिणाम समाज में संक्रांत होते हैं, उन्हें अनैतिक और नैतिक कहा जा सकता है।



पहले प्रकार की वृत्तियों के परिणाम ये हैं –

- १ संग्रह की मनोवृत्ति के परिणाम –
शोषण, अप्रामाणिकता, निरपेक्ष व्यवहार, क्रूर व्यवहार, विश्वासघात।
- २ आवेश की मनोवृत्ति के परिणाम –
गाली-गलौज, युद्ध, आक्रमण, प्रहार, हत्या।
- ३ गर्व की मनोवृत्ति के परिणाम –
धृणा, अमैत्रीपूर्ण व्यवहार, क्रूर व्यवहार।
- ४ माया (छिपाने की मनोवृत्ति) के परिणाम –
अविश्वास, अमैत्रीपूर्ण व्यवहार।

दूसरे प्रकार की वृत्तियों के परिणाम ये हैं –

- १ त्याग (विसर्जन) की मनोवृत्ति के परिणाम –
प्रामाणिकता, सापेक्ष व्यवहार, अशोषण।
- २ शांति की मनोवृत्ति के परिणाम –
वाक्-संयम, अनाक्रमण, समझौता, समन्वय।
- ३ समानता की मनोवृत्ति के परिणाम –
सापेक्ष व्यवहार, प्रेम, मृदु व्यवहार।
- ४ ऋजुता की मनोवृत्ति के परिणाम –
मैत्रीपूर्ण व्यवहार, विश्वास।

मैं सोचता हूं कि नैतिक धारणाओं को सामाजिक नियमों के साथ जोड़ने से वे सामयिक या उपयोगिता-निर्भर बन जाती हैं, इसलिए उनका योग वैयक्तिक वृत्तियों के साथ होना चाहिए।

नैतिकता के प्रेरणा स्रोत

नैतिकता के छह प्रेरणा स्रोत हैं –

- १ आध्यात्मिकता
- २ राष्ट्रीयता
- ३ मानवता
- ४ सामुदायिक जीवन
- ५ शांत जीवन
- ६ सुखी जीवन

अनैतिकता का मूल 'स्व' की संकुचित सीमा है। व्यक्ति जिसे अपना मानता है, उसका हित चाहता है और जिसे पराया मानता है, उसके हित की अपेक्षा नहीं करता। एक व्यक्ति शोषण करता है, पर वह उसी का करता है, जिसे अपना नहीं मानता। सामान्य रिथ्ति में कहा जा सकता है कि अनैतिकता का आधार परत्व का विस्तार है। इसका अर्थ है 'स्व' या 'ममत्व' की सीमा का संकोचन। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्तिगत दिलचस्पी का विसर्जन बहुत जटिल समस्या है। पर यह भी बहुत बड़ा सत्य है कि उसका एक सीमा तक विसर्जन किए बिना अपेक्षित नैतिकता विकसित नहीं होती।

**वस्तुतः पचास प्रतिशत
बीमारियों का कारण मनुष्य
की अनैतिक प्रवृत्तियां हैं।
मानसिक उद्गुनता, भय और
चिंता - ये बीमारियों के मूल
कीटाणु हैं। कोई भी
अनैतिकता ऐसी नहीं है, जो
इन कीटाणुओं से मुक्त हो।**

आध्यात्मिकता

मेरे विनम्र अभिमत में नैतिकता का सर्वोत्तम आधार आध्यात्मिकता है। 'अनैतिकता से अपनी आत्मा या अपने व्यक्तित्व का हनन होता है', इस आस्था की भूमिका पर जो नैतिकता का प्रासाद खड़ा होता है, वह बाह्य स्थिति से अप्रभावित होता है। मैं नहीं कह सकता कि इस स्थिति तक कितने लोग पहुंच सकते हैं, पर यह कह सकता हूं कि जहां पहुंचना है, वह बिंदु यही है। कुछ लोगों के सामने मैं इस आधार की चर्चा कर चुका हूं। पर वे मेरे अभिमत से सहमत नहीं हुए। उनका मानना है कि यह आधार सूक्ष्म और अभौतिक है। हमें नैतिकता का कोई स्थूल और भौतिक आधार चाहिए, जिसे हर आदमी देख सके। उनके मतानुसार वह आधार है राष्ट्रीयता।

राष्ट्रीयता

यह सही है कि व्यक्ति का 'स्व' राष्ट्र की सीमा तक विस्तार पाता है तब तक वह उसके प्रति अनैतिक व्यवहार करना नहीं चाहता। मेरे व्यक्तिगत जीवन, परिवार, जाति या राष्ट्र को हानि होगी-इस प्रकार 'स्व' या 'ममत्व' जहां समान रूप से संघन होता है, वहां वह अनैतिकता का नियामक बनता है, पर इसमें खतरा छिपा हुआ है। परिवार के प्रति ममत्व का संघन रूप जैसे जाति या राष्ट्र के प्रति बरती जाने वाली अनैतिकता का नियमन नहीं करता, वैसे ही राष्ट्र के प्रति बरती जाने वाली नैतिकता अंतरराष्ट्रीय अनैतिकता का नियामक नहीं होती। मुझे लगता है कि राष्ट्रीय अनैतिकता की अपेक्षा अन्तरराष्ट्रीय अनैतिकता कहीं अधिक है। जिन राष्ट्रों में व्यावहारिक सच्चाई है, प्रामाणिकता है, वे भी अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में सत्य-निष्ठ और प्रामाणिक नहीं हैं।

मानवता

मैं इस तथ्य की ओर आपका ध्यान खींचकर यह समझाने का प्रयत्न नहीं कर रहा हूं कि राष्ट्रीयता



नैतिकता का आधार नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूं कि राष्ट्रीयता की तुलना में मानवता नैतिकता का अधिक सुदृढ़ आधार है। हर मनुष्य दूसरे मनुष्य को अपने ही समान समझे और उसके प्रति अन्याय करने को अपने प्रति अन्याय करना समझे तो अनैतिकता कहां से आएगी और कैसे टिकेगी? एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति अनैतिक व्यवहार कर यह सोचे कि मेरे प्रति कोई अनैतिक व्यवहार नहीं करेगा, वह आत्म-भ्रांति में जी रहा है। द्वार खुला है तो उसमें से कोई भी आ सकता है। जो मानव किसी एक मानव के साथ अन्याय कर रहा है, वह सब मानवों के साथ अन्याय कर रहा है। इसका तात्पर्य है – वह समूची मानवता के प्रति अन्याय कर रहा है। इस मान्यता का विकास होने पर अनैतिकता की सीमा अपने-आप सिमट जाती है।

सामुदायिक जीवन

जीवन का सामुदायिक प्रकार भी नैतिकता की आधारभूमि है। व्यक्ति अकेला ही होता तो उसके लिए अनैतिकता या नैतिकता की कोई कल्पना ही नहीं होती, पर जब वह सामाजिक जीवन जीता है तब उसके लिए यह कल्पना स्वयं महत्वपूर्ण हो जाती है। वह समाज स्वस्थ समाज नहीं होता जहां हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का हक हड्पने की चेष्टा में हो, जहां छीना-झपटी का बाजार गर्म हो और सब एक-दूसरे को धोखा देने की धुन में हों। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की मर्यादा और अधिकार को समझकर चले, वही समाज स्वस्थ समाज होता है।

शांत जीवन

हर व्यक्ति चाहता है कि मेरा जीवन शांत और सुखी हो। सुखानुभूति की पहली शर्त है शांति। अग्नि के बिना धुआं नहीं हो सकता, वैसे ही अशांति के बिना दुःख नहीं हो सकता। पहले मानसिक अशांति होती है, फिर दुःख की अनुभूति। मन शांत हो तो दुःख आस-पास घूम सकता है, पर वह उस व्यक्ति पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। अर्थात् उसे दुःख की अनुभूति नहीं हो सकती। जिसका मन अनैतिक चिंतन से मुक्त रहता है, वही शांत हो सकता है। जिसके मन में अनैतिक कल्पना या चिंतन ही नहीं है, वह अनैतिक प्रवृत्ति कैसे करेगा? मैं यह देखकर स्तब्ध रह जाता हूं कि मनुष्य अनैतिक प्रवृत्तियों से अपने मन को अशांत बनाकर अपने लिए दुःख का द्वार खोल रहे हैं। वे जिन साधनों की उपलब्धि के लिए अनैतिक आचरण करते हैं, वे ही साधन उन्हें अधिक अशांत और दुःखी किए हुए हैं। प्राण-रक्षा के लिए श्वास जितना अपेक्षित है, उतना ही शांति और सुख की रक्षा के लिए नैतिक आचरण अपेक्षित है।

स्वस्थ जीवन

जीवन का पहला सुख है स्वास्थ्य। अस्वस्थ आदमी शेष सारी सुखानुभूतियों से वंचित रह जाता है। अनैतिक आचरण का स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः पचास प्रतिशत बीमारियों का कारण मनुष्य की अनैतिक प्रवृत्तियां हैं। मानसिक उद्विग्नता, भय और चिंता – ये बीमारियों के मूल कीटाणु हैं। कोई भी अनैतिकता ऐसी नहीं है, जो इन कीटाणुओं से मुक्त हो। इसलिए इस स्थापना में कोई त्रुटि नहीं देख पा रहा हूं कि स्वस्थ जीवन जीने के लिए नैतिकता आवश्यक है।

नैतिकता का सूत्र

इन्द्रियों की तृप्ति पदार्थ से होती है और पदार्थ धन से मिलते हैं। इसलिए मनुष्य की सहज प्रेरणा है धन अर्जित करना। वह धन का अर्जन कैसे करे और कैसे न करे, यह सहज प्रेरणा नहीं है। यह सैद्धांतिक पक्ष है, जो मानवीय विवेक द्वारा निश्चित होता है। इसके प्रयोग की दो धाराएं बन जाती हैं – आत्मानुशासन और राजकीय शासन।

1. नैतिकता की सुरक्षा के लिए ऐन्द्रियिक तृप्ति का त्याग कर दो, धन का अर्जन मत करो – इस सूत्र के आधार पर नैतिकता को विकसित नहीं किया जा सकता।

2. इन्द्रियों की तृप्ति, पदार्थ की प्राप्ति और धन का अर्जन करते हुए भी नैतिक विकास किया जा सकता है। इस सूत्र के आधार पर नैतिकता का विकास किया जा सकता है।

3. नैतिकता की सुरक्षा करते हुए जो आदमी धन का अर्जन करता है, वह इन्द्रिय की तृप्ति या सुखानुभूति अधिक अच्छे ढंग से कर सकता है। यह सूत्र नैतिक विकास को सर्वोत्तम भूमिका प्रदान करता है।

अनैतिक मनुष्य इन्द्रिय-तृप्ति या सुख-सुविधा की दृष्टि से घाटे में रहता है – ऐसी अनुभूति होने पर कोई मनुष्य क्यों अनैतिक बनेगा? आज अनुभूति यह है कि नैतिक मनुष्य सुख-सुविधा की दृष्टि से घाटे में रहता है, इसलिए नैतिकता के प्रति मनुष्य में सहज आकर्षण नहीं है। इन्द्रिय-तृप्ति या सुख-सुविधा के प्रति विराग उत्पन्न कर हम जनता को नैतिक बनाना चाहें तो यह संभव नहीं होगा।

इस प्रक्रिया से जनता नैतिक नहीं बनेगी, कुछेक लोग नैतिक बन सकते हैं। नैतिकता का सामूहिक विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि तीसरे सूत्र को आधार मानकर अनुसंधान किया जाये और उनकी उपलब्धियों का जन-साधारण में प्रचार किया जाये, प्रशिक्षण दिया जाये।



बाधक तत्त्व

नैतिकता की चर्चा करते समय उसके बाधक और साधक तत्त्वों की चर्चा करना भी आवश्यक है। हम कितना ही क्यों न चाहें और कितना भी प्रयास क्यों न करें किंतु तब तक नैतिकता की पुनःस्थापना नहीं हो सकती, जब तक उसके बाधक तत्त्व उन्मूलित और साधक तत्त्व प्रतिष्ठित न हों। नैतिकता के बाधक तत्त्व ये हैं—

- | | |
|---------------------|-------------------------|
| ■ प्रदीप्त आकांक्षा | ■ बुरी आदतें |
| ■ प्रदीप्त स्वार्थ | ■ विलास भोग की प्रचुरता |
| ■ मिथ्या मान्यता | ■ अभाव |

इनमें प्रथम चार मानसिक बाधाएं हैं। मिथ्या मान्यता दोषपूर्ण सामाजिक मूल्यों पर आधारित और अभाव परिस्थितिजनित बाधा है।

साधक तत्त्व

नैतिकता के साधक तत्त्व ये हैं—

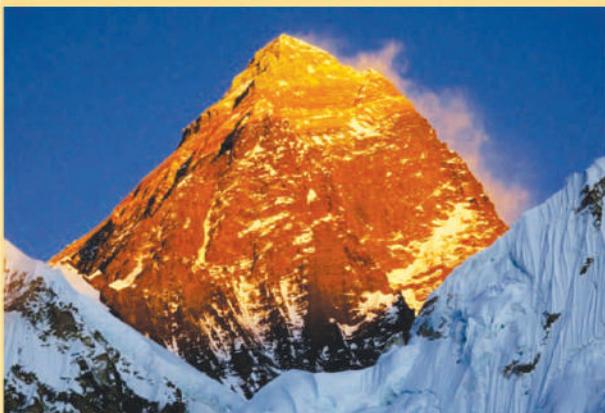
- | | |
|------------------------------------|----------------|
| ■ परमार्थ | ■ संयत जीवन |
| ■ शुद्ध जीवन | ■ संतुष्ट जीवन |
| ■ जीवन-निर्वाह के साधनों की सुलभता | |
| ■ सही मान्यता | |

नैतिकता के बाधक तत्त्वों में प्रथम पांच के साथ अनैतिकता की व्याप्ति है—जहां अनैतिकता है, वहां ये हैं और जहां ये हैं वहां अनैतिकता है। छठे के साथ अनैतिकता की व्याप्ति नहीं है। वह उसका हेतु बन सकता है। ऐसे व्यक्ति भी आपको मिलेंगे जो अभावग्रस्त होने पर भी अनैतिकता की ओर नहीं झांकते और ऐसे व्यक्ति भी कम नहीं हैं, जो सम्पन्न होने पर भी नैतिक नहीं हैं।

नैतिकता के साधक तत्त्वों की चर्चा करते समय जो पहला प्रश्न उपस्थित होगा, वह यह है कि स्वार्थ का प्रतिपक्ष परार्थ है, तब परमार्थ कैसे? किंतु क्या हम परार्थ को विरोधाभास से मुक्त कर सकेंगे? ऐसे अनेक परार्थवादी लोग हैं, जो एक हाथ में परार्थ का झण्डा लिए हुए हैं और दूसरे हाथ में शोषण की कलम थामे हुए हैं। जो मनुष्य की सेवा करना चाहे, वह मनुष्य का शोषण करे, यह संभव नहीं, पर परार्थवाद की विरोधाभासपूर्ण धारा में अमुक मनुष्य की सेवा और अमुक मनुष्य का शोषण संभव हो रहा है। परमार्थवादी अनैतिकता और आत्म-पतन को एक साथ देखता है, इसलिए उसकी नैतिकता के साथ व्याप्ति है।

नैतिकता के साधक तत्त्वों में प्रथम पांच तत्त्व नैतिकता के साथ व्याप्त हैं—जहां नैतिकता है, वहां ये हैं और जहां ये हैं वहां नैतिकता है। अंतिम तत्त्व नैतिकता का संभावित हेतु है। ■

शिखरों के हक़दार



■ रामनारायण हलधर ■

कवि, व्यंग्यकार तथा आकाशवाणी में वरिष्ठ उद्घोषक

जीवन भर हावी रहे, पेट और परिवार।
वर्ना कितने लोग थे, शिखरों के हक़दार॥

जब से कच्ची गेलि पर, डामर दिया डुलाय।
पुरखों के पद चिह्न अब, कहीं नजर नहिं आय॥

शाइर ढूँढे काफिया, गायक संगतकार।
हमने ढूँढे इस तरह, अपने सच्चे यार॥

मेरे दुःख की दास्तां, उसका चैन करार।
हाल हमारा पूछता, दिन में दस दस बार॥

आँगन में रुकते नहीं, पल भर उसके पाँव।
पर्वत पर बैठा रहे, सुख, बादल की छाँव॥

मत बतलाओ पीठ पर, कौन करे है वार।
वैसे ही इस शहर में, गिनती के हैं यार॥

जब तक रहा पड़ोस में, हँसा न बोला कोय।
जब उसकी बदली हुई, सारी बस्ती रोय॥

अहसानों का सिलसिला, इतना नहिं बढ़ जाय।
तेरी नीयत पर मुझे, शक होने लग जाय॥

चाँदी की टकसाल से, लौटे लिए थकान।
बाट जोहती सो गई, उम्मीदें अरमान॥

उनका दावा बढ़ रही, है प्रति व्यक्ति आय।
हमने कुर्ते हर बरस, जेब रहित सिलवाय॥

बार बार देता नहीं, होरी अपनी जान।
एक बार दिल्ली अगर, पढ़ लेती गोदान॥

जिन खेतों पर था कभी, पुरखों का अधिकार।
आज वहाँ इक मॉल में, हम हैं चौकीदार॥



अनीत के छालौख्वे द्ये

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अद्वशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के मई 1971 के दोनों अंकों से ली गई है।

विसर्जन से सूजन

साध्वीश्री जतनकुमारी

वसंत आता है पतझड़ चला जाता है। वसंत में पतझड़ के स्मृति-चिह्न नहीं रहते, उसी प्रकार विसर्जन में वासना के स्मृति-चिह्नों का नहीं रहना ही त्याग है।

भगवान् महावीर ने कहा है—“न से चाइति बुच्चई” अर्थात् किसी व्यक्ति को वस्त्र, अलंकार और विलास की सामग्री अप्राप्त है अथवा प्रयास करने के बावजूद वह प्राप्त नहीं कर रहा है तो वह त्यागी नहीं कहलाता है। ऐसे व्यक्ति के अवचेतन मन में भोग की अन्तःधारा बहती है, वह भोग के सपने देखता रहता है।

दमन से आकांक्षाएं भरती नहीं, उभरती हैं। भोग की भटकन की तरह दमन भी एक प्रकार की भटकन है। जिस प्रकार पहाड़ी नदी के बहते हुए पानी को बांध देने पर भी एक दिन ऐसी बाढ़ आती है कि सब छिन्न-भिन्न हो जाता है। इसी प्रकार दमन की गंभीर प्रवृत्तियां जीवन में एक न एक दिन सब बंधनों को तोड़ देती हैं और उसके व्यक्तित्व में उथल-पुथल मचा देती हैं।

डॉक्टर फ्रायड ने

मनोविश्लेषण द्वारा यहां तक सिद्ध कर दिया है कि न केवल हमारे स्वज्ञ अपितु हमारी समस्त मनोविधियां और हमारे शिष्टाचार, व्यवहार की त्रुटियां प्रभृति हमारी अचेतन इच्छाओं अर्थात् दबी हुई इच्छाओं के कारण होती हैं।

मनोविश्लेषक यह मानता है कि दबी हुई इच्छा अथवा अचेतन मनोवृत्ति को चेतना के स्तर पर लाने से 'भावना-ग्रंथि' का प्रतिकार हो सकता है। 'व्यक्तिगत-अचेतना' के द्वारा बहुत-सी भावना ग्रंथियां उत्पन्न हो जाती हैं, दमन की हुई इच्छाओं के कारण स्वज्ञ आते हैं। यदि हम अपने स्वप्नों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करें तो हम उन सभी दबी हुई इच्छाओं की खोज कर सकते हैं। इस प्रकार छुपकर प्रकट होने के ढंग को मनोविश्लेषण में संकेतवाद कहा गया है। भोग और दमन दोनों के बीच संयम उपलब्ध करने में त्याग है।

'एक वृद्ध संन्यासी और एक युवा संन्यासी किसी पहाड़ी नदी को पार कर रहे थे। तट पर युवती खड़ी थी, वह भी नदी पार करना चाहती

थी, किंतु उतरने का साहस नहीं था। वृद्ध संन्यासी द्वारा हाथ का सहारा देने की सोचते ही वासना रोयें-रोयें में व्याप गई। शरीर वृद्ध था, पर वासनाएं अभी भी युवा थीं। उसने ज्यों-ज्यों नदी पार की, पीछे नहीं देखा। किंतु मन पीछे की ओर भाग रहा था। युवती मन के आगे थी, वृद्ध संन्यासी को युवा संन्यासी की याद आते ही मुड़कर देखा, आंखें फाड़े देखते ही गया। आंखों पर विश्वास करना मुश्किल था, वह युवती को कंधे पर लिए नदी पार करा रहा था। वृद्ध संन्यासी की जलन क्रोध में परिणत हो गई।

आश्रम में प्रवेश करने लगे तो वह अपने को रोक न पाया। वह बोला—“आज तुमने बहुत पाप किया। विकारों के उस ढेर को कंधों पर क्यों लिया? युवक ने कहा—‘क्षमा करें, उस युवती को मैं नदी के तट पर छोड़ आया हूं। लेकिन प्रतीत होता है कि आप उसे अब भी अपने कंधों पर लादे हुए हैं।’” दमन छिपी हुई आग है जो भीतर ही भीतर सुलगती रहती है और समय पाकर बाहर आ जाती है।



अतीत के छापोंवें से...

आचार्य रजनीश लिखते हैं—“सुबह सूरज उगता है घास पर, वृक्षों के पत्तों पर पड़ी ओस की बूँदें उसकी किरणों के आते ही बिलीन हो जाती हैं। भीतर ज्ञान के सूरज का जन्म होता है, तब वासना की बूँदें वाष्णीभूत हो जाती हैं। वहां दमन की जरूरत नहीं, उन्हें मिटाने को कुछ करना नहीं होता है, बस वे नहीं पाई जाती हैं। जिसने सिर्फ छोड़ा, कुछ पाया नहीं, उसका चित्त त्याग को याद करता है। अज्ञानी जो छोड़ता है उसको स्मृति नहीं पहुंचती। अभाव में किये हुए त्याग-पके पत्तों का गिरना नहीं, कच्चे पत्तों का तोड़ना है।”

त्याग का मूलाधार मनुष्य की मनःस्थिति है, ‘मम’ का त्याग ही सबसे अधिक मूल्यवान है। गृह त्याग से धर्म नहीं सधता, वह सधता है, मानसिक विसर्जन से।

महर्षि व्यास ने लिखा है—“जिसने इच्छा का त्याग किया, उसे गृह त्याग की आवश्यकता नहीं, इच्छा के वशीभूत व्यक्तियों का बन में जाना सार्थक नहीं, अपनी इच्छा

से कामना को त्यागने वाला त्यागी है।”

भगवान महावीर ने कहा—“स्वाधीन भोगों का मन से विसर्जन करने वाला ही सच्चा त्यागी है, वह भोग के लिए त्याग नहीं करता, वैराग्य के लिए त्याग करता है।”

जिसने विसर्जन की प्रक्रिया विधि समझी और समझने पर विसर्जन किया, उसे उस विसर्जन में ही अमित आनंदानुभूति होती है, उसकी उपलब्धि में नहीं। उपलब्धि होने पर भी उसका भोग नहीं करना, यही सच्चा त्याग है।

“एक राजा ने वृद्ध अवस्था में प्रभु भजन के लिए राज त्यागना चाहा। खाद्य, पेय, शयन की कुछ सामग्री ले नौकर के साथ बन की ओर चल पड़ा, चलते-चलते प्यास लग गई। नौकर पानी लाने निझर की ओर दौड़ा, नृप भी मन्थर गति से वहां पहुंचा। निझर के निकट एक भिक्षु मिला जिसने आहार ग्रहण कर अंजुरी भर-भर कर जल पी लिया और प्रशांत मुद्रा में भूमि पर लेट गया। नृप के मानस पर इसकी

प्रतिक्रिया यों हुई—“हाथ से काम चलता है।” उसने भी यही किया। इस वृत्ति को अपनाने में आनंद आया, अनुचर को विदा दे दी।

सेवक भोजन सामग्री लिए सतत उपस्थित होता। राजा ने उसका भोग नहीं किया। राजा की देखादेखी एक दरिद्र ने भी अपनी दरिद्रता निवारण के लिए यही तरकीब सोची। संन्यासी बना, भूखा मरा, मगर उसे कुछ नहीं मिला। त्याग अप्राप्य था कैसा? त्याग जीवन शोधन का राज मार्ग है, प्राप्ति और प्रगति का नया चरण है। अशुभ का त्याग करने पर ही शुभ की प्रतिष्ठा संभव है। कपाट खोलते ही सूर्य का प्रकाश सहज ही भवन को प्रकाशित कर देता है, त्यों ही जीवन से अशुद्ध तत्वों के निष्कासन से शुभ का उदय होता है। शुद्ध वायु को ग्रहण करने के लिए फेफड़ों में स्थित अशुद्ध वायु को विसर्जन करना पड़ता है। उसी प्रकार त्याग की शुद्ध वायु को ग्रहण करने के लिए वासना की अशुद्ध वायु को निकालना होगा।

मु क्त क

उस दरखत को पानी कौन देगा जो फलता नहीं है,
उस दीपक को तेल कौन देगा जो जलता नहीं है।
परवरिश उसकी होती है जो जग में काम आता है,
उस साथी को कौन पूछे जो साथ चलता नहीं है।

मुनिश्री चौथमल

मुनिश्री धनराज (लाड्नु)

मैं संसार में रहता हूं लेकिन संसारी नहीं हूं।
नित बाजार में बहता हूं लेकिन व्यापारी नहीं हूं।
साथियो! बताने का आशय इतना-सा है कि मैं-
अधिकार की भाषा में कहता हूं पर अधिकारी नहीं हूं।



अतीत के छापौर्खे से...

अचूक विज्ञान और भ्रामक राजनीति

अनुपम मिश्र

“मज़हब और सियासत-ये दो शक्तियां खत्म हो चुकी हैं। कल जो दो शक्तियां काम करने वाली हैं, उनमें एक है विज्ञान और दूसरी रूहानियत।”

-विनोबा

आदमी का चांद पर कदम रखना विज्ञान की अचूक सफलता है। वैज्ञानिकों की आश्चर्यजनक योजनाएं एक के बाद एक सफल होती जाती हैं, लेकिन राजनीतिज्ञों की परिकल्पनाओं में, योजनाओं में, एक अजीब भ्रांति देखने को मिलती है। एक ओर विज्ञान अचूक बनता जा रहा है, तो दूसरी ओर पूरी दुनिया की राजनीति अनिश्चित होती जा रही है। कुछ लोग कहेंगे कि चूक तो विज्ञान में भी होती है-उदाहरण के लिए वे चन्द्रयात्रा की ही एकाध दुर्घटना को सामने रख देंगे। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि विज्ञान अपनी भूलों को सुधार लेता है, फिर उसकी गलती का असर भी क्षणिक होता है। वहाँ, राजनीति में पहले तो गलती को गलती माना ही नहीं जाता और मान भी लिया जाए तो उसे सुधारने के बदले और उलझा दिया जाता है। वियतनाम गलती नहीं है, उसे सुधारा ही क्यों जाए। हमारे देश में साम्प्रदायिकता को गलती मान भी लिया तो उसे दूर तो कर नहीं पाये। राजनीति में साम्प्रदायिकता और विज्ञान में कैंसर इन दोनों में भी अंतर करना होगा। ऐसा नहीं है कि वैज्ञानिकों का एक हिस्सा कैंसर को बढ़ा रहा है और एक हिस्सा उसको नष्ट करना चाह रहा है। मगर साम्प्रदायिकता को तो कुछ राजनीतिज्ञ बढ़ाते हैं, कुछ घटाते हैं।

एक अपरिहार्य प्रश्न उठता है कि आदमी का दिमाग विज्ञान के क्षेत्र में इतना निश्चित और राजनीति में इतना अनिश्चित क्यों होता है? वह कौन-सी शक्ति है जो विज्ञान को लगातार सफलता की ओर तथा राजनीति को असफलता और कुंठा की ओर ले जा रही है? इसका सीधा-सा जवाब हो सकता है कि वैज्ञानिक अपने साधनों पर प्रायः नियंत्रण रखता है, उनकी थाह जानता है। उसकी निर्णय शक्ति तथ्यों पर आधारित होती है, तथ्यों के अनुकूल ही वह अपने साध्य और साधन निश्चित करता है। इस सबके बाद वह उपलब्ध सर्वाधिक कुशल लोगों को नियुक्त

करता है। लेकिन एक राजनीतिज्ञ न तो अपने साधनों को नियंत्रित रख पाता है न उनकी थाह ही ले पाता है, उसके निर्णय तथ्यों पर आधारित न होकर प्रायः दंभ, कुंठा आदि से प्रेरित होते हैं। फिर राजनीति में ‘कार्यकुशलता’ तो प्रायः धूर्ता का पर्याय होती है।

लेकिन यदि हम राजनीति और विज्ञान के बीच इस तरह की तुलना को जरूरत से ज्यादा आगे ले जाएं तो कोई यह निष्कर्ष भी निकाल बैठेगा कि सर्वाधिकारवादी ही ठीक थे, और केवल ‘राज्य’ के हाथ में ही साध्य-साधन के निर्णय का अधिकार होना चाहिए, राज्य ही कुशल लोगों को चुन ले, शोष का त्याग कर दे। इस तुलना से हमारा इरादा निस्सन्देह इस छोर तक पहुंचने का नहीं है। लेकिन बिना किसी साम्यवादी ‘राज्य’ या तानाशाह के माध्यम से वैज्ञानिक प्रक्रिया की कुछ चीजें राजनैतिक क्षेत्र पर लागू की जानी चाहिए।

कुछ समझदार लोग एक हद तक विज्ञान और राजनीति की इस खाई को देखकर व्याकुल हो उठे हैं। प्रथम महायुद्ध के आसपास एच.जी. वेल्स विज्ञान और राजनीति के दोनों छोरों को छूते रहे, उनकी दूरी से चकित भी होते थे।

वेल्स सत्ता का विरोध करते थे, शुद्धता, ईमानदारी को पसंद करते थे। उनका प्रयत्न सत्ता को अलग रखकर शुद्धता पाना था। अन्ततोगत्वा उन्होंने यह आशा की कि वैज्ञानिक प्रक्रिया कुछ हद तक राजनैतिक समस्याओं पर नियंत्रण करेगी, और कुछ नहीं तो इससे भयंकर विनाश तो रुक ही सकेगा।

एक उल्लेखनीय पुस्तक, ‘कॉमन सेंस ऑफ साइंस’ के लेखक जेकोब ब्रोनोवस्की ने कहा है कि ‘जो चीज काम दे उसकी स्वीकृति और जो काम न दे उसकी अस्वीकृति ही विज्ञान है।’

इस परिभाषा से हम राजनीति और विज्ञान की खाई को समझ सकते हैं। विज्ञान केवल उन्हीं तत्वों का प्रयोग करता है जो उसकी धारा को आगे बढ़ाते हैं, लेकिन समाज व राजनीति में उन तत्वों को भी आश्रय मिल जाता है जो



अतीत के द्वारोदर्शक...^१

समाज की गति को ही रोक कर उसे पीछे की ओर ले जाते हैं। विज्ञान सिलसिलेवार सिद्धांत और कर्म है। वैज्ञानिक को भूत की अनुभूति, वर्तमान का ज्ञान और भविष्य का दर्शन होता है। वह आत्मालोचक होता है। राजनीतिज्ञ से हम आत्मालोचना की उम्मीद नहीं रख सकते।

ब्रोनोवस्की ने लिखा है कि 'विज्ञान का यही संदेश है कि हमारे विचार वास्तविक हों, उनमें नई-नई परिस्थितियों

के अनुकूल बनने की क्षमता हो, निष्पक्ष हों-यदि किसी विचार में यह गुण हो तो फिर वह किसी भी क्षेत्र का विचार हो, वह वैज्ञानिक माना जायेगा।' बहुत धीरे-धीरे, लेकिन दृढ़ता के साथ यह विचार प्रयोगशालाओं से निकल कर राजनीति और समाज में फैल रहा है। मानवता को अभी वह दिन देखना है जब विज्ञान और राजनीति दोनों का ही एक लक्ष्य होगा-मानव प्रगति।

आंदोलन समाचार

समाज के स्थ को आगे बढ़ाने के लिए नारी जागरण का कार्य महत्वपूर्ण

छापर में अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी

- 20 अप्रैल को अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी सुजानगढ़ से विहार करके 21 अप्रैल को छापर पधारे। छापर में आपके स्वागत का आयोजन कालू कल्याण केन्द्र में प्रारंभ हुआ। आचार्यश्री ने अपना मंगल प्रवचन करते हुए धर्म व अध्यात्म को जीवन के प्रत्येक पहलू में उतारने पर बल दिया।
- 22 अप्रैल को प्रातःकालीन कार्यक्रम में विसर्जन आश्रम-इंदौर के संचालक श्री मानवमुनि ने आचार्यश्री के महान व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा-अणुव्रत के पास त्यागियों की शक्ति है तो सर्वोदय के पास कार्यकर्ताओं की शक्ति, यदि दोनों मिलकर कार्य करें तो कुछ दिशाओं में महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।
- 25 अप्रैल को आचार्यश्री तुलसी ने कहा कि समाज व राष्ट्र के निर्माण में नारी जाति की सदा से ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वह अपने त्याग एवं बलिदान से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में समाज को प्रभावित करती रही है। आचार्यश्री ने नारी जागरण का कार्यक्रम विशेष रूप से चलाने का निर्णय लिया और छापर से ही वह प्रारंभ भी कर दिया गया। साध्वीश्री चन्दनबालाजी के सान्निध्य में नगर के दूसरे तथा तीसरे वास में दो गोष्ठियां सम्पन्न हुईं, जिनमें क्रमशः 150 तथा 200 महिलाओं ने भाग लिया। साध्वीश्री ने सामाजिक कुरीतियों के विनाशकारी परिणामों की चर्चा करते हुए महिलाओं को उनसे मुक्त होने की प्रेरणा दी, फलस्वरूप अनेक महिलाओं ने दहेज की प्रेरणा न देने, तपस्या पर प्रदर्शन न करने, प्रदर्शन में भाग न लेने आदि की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कर्त्ता तथा जो सामाजिक मापदण्ड निर्धारित किये जाएंगे, उन पर चलने का निर्णय घोषित किया।
- 25 अप्रैल को साध्वीश्री मंजुलाजी के सान्निध्य में महिला सम्मेलन हुआ, जिसमें 300 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। साध्वीश्री ने रूढ़ियों से बचने के साथ ही फैशन परस्ती से भी दूर रहने की प्रेरणा दी।
- 28 अप्रैल को मुनिश्री कन्हैयालाल जी के सान्निध्य में छापर के युवकों की एक विशेष गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए एक आचार संहिता तैयार की गई।





अणुव्रत एक जीवन दर्शन

■ मुनि सुखलाल ■

यह सच है कि अणुव्रत व्यक्तिगत सुधार का आंदोलन है, पर व्यक्ति—सुधार ही तो अंततः सामूहिक सुधार की पृष्ठभूमि बनता है। यह एक उलझा हुआ सवाल है कि मनुष्य परिस्थितियों का निर्माण करता है या परिस्थितियां मनुष्य का निर्माण करती हैं। कुछ लोगों का बल्कि अधिकांश लोगों का अभिमत है कि परिस्थितियां ही मनुष्य का निर्माण करती हैं। पर सचमुच वे लोग कोई भी बड़ा काम नहीं कर सकते, जो परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते हैं। दुनिया का इतिहास उन लोगों का इतिहास है जो परिस्थितियों की छाती को चीरकर आगे बढ़ जाते हैं। असल में ऐसे लोग ही वीर्यवान् और आत्मवान् होते हैं। अणुव्रत ऐसे ही लोगों की प्रतीक्षा में है तथा इस दिशा में अपना नम्र प्रयास भी कर रहा है।

अणुव्रत एक आचार संहिता मात्र नहीं है, अपितु एक पूरा जीवन दर्शन है। आचार संहिता का भी अपना महत्व है, पर उसका अर्थ आदमी को केवल कुछ विधि—निषेधों में उलझाना नहीं है, अपितु उसमें सोयी हुई संकल्प—शक्ति को जगाना है। जब चेतना जाग जाती है तो आदमी में इतनी ऊर्जा प्रकट हो जाती है कि वह हर अवरोध से लड़ने के लिए खड़ा हो जाता है। अणुव्रत में निखार तभी आ सकता है, जबकि अणुव्रती लोग परिस्थितियों के सामने झुकें नहीं, अपितु उनसे संघर्ष करें।

अणुव्रत का एक नियम है कि मैं किसी पर आक्रमण नहीं करूंगा तथा आक्रामक नीति का समर्थन भी नहीं करूंगा। वास्तव में यह किसी को नहीं मारने

की प्रतिज्ञा मात्र नहीं है अपितु पूरे शस्त्रीकरण के विरोध में खड़े होने का संकल्प बल है, विश्व—शांति के पक्ष में अपना वोट देने का विचार—प्रयत्न है। इस तरह आज जब भी कोई आदमी शांत भाव से विचार करता है तो उसे लगता है वह चारों ओर से समस्याओं से घिरा हुआ है। यह कोई निराशावादी चिंतन नहीं है, अपितु एक सत्य है। भले ही विज्ञान ने जीवन को सुखी—समृद्ध और आनन्दित बनाने के लिए विपुल साधन प्रस्तुत किए हैं, पर लगता है उन साधनों का भी अपना एक घेरा बन गया है। निःसंदेह दुनिया के अधिकतम लोग आज भी धरती पर नारकीय जीवन जी रहे हैं। कुछ लोगों ने अपनी बौद्धिक क्षमताओं का फायदा उठाकर अपने—आपको सुख—सुविधाओं से सम्पन्न बनाने में सफलता हासिल की है, पर लगता है वह आदमी को बहुत तृप्त नहीं कर पा रही है। यह ठीक है कि आज गरीब की झोपड़ी में भी बिजली की रोशनी पहुंच गई है। पर उस रोशनी में उसे अपनी प्रभुता का नहीं, अभाव का ही अधिक एहसास हो रहा है। यों विशेषज्ञों के सर्वेक्षण यह भी बता रहे हैं कि आज दुःख और अधिक फैला—पसरा है, गरीब और अधिक गरीब हुआ है।

जो लोग मध्यवर्गी हैं, उनकी समस्याएं तो स्पष्ट रूप से बढ़ी हैं। अपने चारों ओर उन्होंने कल्पित मान्यताओं का जो घेरा बना लिया है इससे वे गरीब की तरह गरीबी में तो जी नहीं सकते, पर साधनों का अभाव उनके जीवन को नीरस बना रहा है। चोटी के कुछ लोगों के पास यदि सुख—सुविधाओं का ढेर है भी



तो उनकी प्राप्ति—प्रतियोगिता इतनी संघर्षमय है कि वे अपने आपको और भी अधिक अशांत अनुभव करते हैं। कोई शक नहीं कि कुछ धनाद्य लोग आर्थिक—भौतिक दृष्टि से अतिशय सम्पन्न हुए हैं। उनका तन सशक्त हुआ है, पर मन और अधिक बीमार हुआ है, इसमें कोई शक नहीं है।

फिर भी भौतिकता की यह अंधी दौड़ इस कदर बढ़ रही है कि उसके दुःखद परिणाम भोगता हुआ भी आदमी उस खुजलाहट से विरत नहीं हो पा रहा है, बल्कि उसी दिशा में आगे बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि आखिर इसका इलाज क्या है? सुख—सुविधाओं को छोड़ने की बात किसी के गले नहीं उत्तर सकती। पहली बात तो यह है कि जब सभी लोग इस दौड़ में शामिल हैं तो इसके विरोध में आवाज कौन उठायें? वैसे आज राजनीति ने पूरे जीवन पर इतना अधिकार जमा लिया है कि उससे बचकर आदमी का अस्तित्व ही नहीं रह गया है। वह पूरी तरह से उसकी फांस में आ गया है। राजनीति उस पर इस तरह कुंडली मारकर बैठ गई है कि उससे मुक्त होना चाहकर भी वह मुक्त नहीं हो पा रहा है। ऐसी स्थिति में जबकि सारा सामर्थ्य राजनीति के हाथ में आ जाए और उसका संचालन करने वाले लोग भी ऐसे ही हों, जिन्हें अपनी सुख—सुविधा से ही ज्यादा वास्ता है, तो दुःख से मुक्ति की आशा दुराशा मात्र रह जाती है।

समाधान का सूत्र

ऐसी स्थिति में वे ही लोग आगे आ सकते हैं जो राजनीति से ऊपर उठे हुए हैं। निश्चय ही ऐसे लोग वे ही हो सकते हैं जिन्हें सारी मानवता की चिंता हो। राजनीति से ग्रस्त आदमी अपने परिवार या ज्यादा से ज्यादा अपने देश की सीमा के पार नहीं जा सकता। वह यदि उससे ऊपर उठकर कोई बात करता भी है तो उसका सिंहासन ही डोल जाता है। उसकी भाषा भले ही मानवता की हो, कर्म अपने स्वार्थ से ही घिरा रहेगा। यहीं पर आध्यात्मिक नेतृत्व की बात सामने आती है। शब्द भले ही अध्यात्म की जगह दूसरा आ जाए, पर भाव—भूमि उसकी यहीं रहेगी कि वह पूरी मानवता के

प्रति समर्पित हो। यों आज अध्यात्म के नाम पर भी अनेक दुकानदारियां चल रही हैं, तरह—तरह का आकर्षक माल उनमें बेचा जा रहा है। कहीं यह बिल्कुल रुद्धिग्रस्त है तो कहीं बिल्कुल उन्मुक्त। ऐसे में

उसकी चेतना समस्त के संवेदन से कट जाए, तो यह स्वाभाविक ही है। यद्यपि अध्यात्म का मूल केन्द्र व्यक्ति ही है, पर जब तक व्यक्ति समस्त की चेतना से नहीं जुड़ जाता, वह तब तक पूरा आध्यात्मिक नहीं हो सकता।

आज यहीं तो हो रहा है। धर्म के लोगों ने अध्यात्म को परलोक के साथ जोड़कर उसे वर्तमान की समस्याओं से विरत कर दिया। अणुव्रत का मानना है कि वह मोक्ष किस काम का जो हमारे इस जीवन को शांत न बना सके। पर साथ ही साथ हमें इस बात से भी सचेत रहना होगा कि शांति अंतः पदार्थ में नहीं है।

पदार्थ की भी अपनी एक भूमिका है। पर यदि उसके साथ अध्यात्म नहीं जुड़ा तो जैसा कि आज हो रहा है, उससे मनुष्य और अधिक अशांत बन जाएगा। अणुव्रत स्वार्थ और पदार्थ के अतिवाद से बचकर एक समन्वित भूमिका प्रस्तुत करता है। वह व्यक्ति और समष्टि के बीच एक संतुलन बनाने का प्रयास है। यहीं वह धर्म और नैतिकता से जुड़ जाता है।

नैतिकता का सवाल आज का अहम सवाल है। हो सकता है कि कुछ लोग अनैतिक होकर भी अपनी आकांक्षाएं पूरी कर लेते हों, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि उससे राष्ट्र निर्बल होता है, आम आदमी दुःखी होता है। इसीलिए अणुव्रत आंदोलन ने नैतिकता की आवाज उठाई है। यह आवाज किसी धर्म—संप्रदाय की आवाज नहीं, अपितु मानव—धर्म की आवाज है। अणुव्रत को केवल नियम से नहीं पकड़कर भावना से पकड़ा जाए तो निश्चय ही यह जागृति का एक पूरा आंदोलन है। अणुव्रतियों को इस दिशा में ठोस प्रयत्न करना आवश्यक है।

स्वर्गीय मुनिश्री सुखलाल अणुव्रत आंदोलन के एक सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। अणुव्रत प्राध्यापक के रूप में उन्होंने अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरक अभिभावक की भूमिका निभाई।





अणुव्रत का संदेश है नैतिकता

■ डॉ. मुनि मदन कुमार ■

एर्म और संप्रदाय को एक मानना विडम्बना है तो धर्म और नैतिकता को अलग मानना भी कम विडम्बना नहीं है। अणुव्रत ने इन दोनों समस्याओं पर विचार किया है। धर्म के तीन रूप हैं – अध्यात्म, नैतिकता और उपासना। इन तीनों के समन्वय से जीवन सर्वांग सुंदर बनता है। उपासना को गौण कर अध्यात्म और नैतिकता की चेतना को पुष्ट करना ही अणुव्रत का पुनीत ध्येय है। वर्तमान युग में ईमानदार मनुष्य के निर्माण का कार्य सबसे अधिक जरूरी है और यह अणुव्रत के द्वारा ही संभव है। यह निर्विवाद तथ्य है कि धर्म को समझने के लिए नैतिकता को और नैतिकता को समझने के लिए अणुव्रत को समझना चाहिए। आज मनुष्य के जीवन में नैतिक निष्ठा घट रही है और पदार्थ–निष्ठा बढ़ रही है, यह चिंतनीय है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने कहा था कि तुम नैतिकता के प्रति कभी आस्थाहीन मत बनो। वस्तुतः नैतिकता सार्वभौम तत्त्व है, अतः यह मनुष्य का आदर्श होना चाहिए।

सत्य और अहिंसा हमारे जीवन मूल्य हैं तथा इनसे ही मानवता सुरक्षित रह सकती है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शब्दों में अनैतिकता का मूल कारण है नैतिक निष्ठा का अभाव। उनकी दृष्टि में ममत्व के विसर्जन या ममत्व के विस्तार से ही अनैतिकता की समस्या को सुलझाया जा सकता है। यों लगता है कि अनैतिकता सबसे बड़ा अभिशाप है। इस दृष्टि से नीति निष्ठ लोग ही प्रकाश रत्नं बन सकते हैं। कर्म के साथ धर्म को जोड़ने वाले लोग निश्चय ही प्रेरणादायी बन जाते हैं।

सौराष्ट्र में वनस्थली गांव के सेठ सवाचंद पीढ़ियों से अपार वैभवशाली थे। भाग्य ने पलटा खाया तो माल से भरे हुए बारह जहाज तूफान में भटक गये। महीनों तक उनका पता नहीं लगा। व्यापार चौपट हो गया। परिस्थितियां बिगड़ गयीं। व्यापारिक संबंध क्षीण हो गये। पास में जितना धन था, सब कुछ देने पर भी ऋणमुक्त नहीं हो पाये। पास के गांव का एक राजपूत सेठ का मित्र था। उसने सेठ के पास एक लाख रुपये जमा करा रखे थे। नुकसान का पता लगते ही वह आ धमका। सेठ ने उससे तीन दिन का समय मांगा। मुनीम को पुरानी उगाही के लिए भेजा जिससे राजपूत का ऋण चुकाया जा सके, किंतु उगाही सहित मुनीम भाग गया।

तीसरे दिन वह राजपूत फिर आया और तलवार की नोक पर रुपये मांगे तब विवश होकर सेठ ने अहमदाबाद के सेठ सोमचंद अमीचंद के नाम एक लाख की हुण्डी लिखी। न जान–पहचान थी और न लेनदेन था। मन में बड़ी चिंता थी कि वह हुण्डी कैसे सिकरेगी? इसी चिंतन और विचार में दो आंसू हुण्डी पर टपक गये। उन्हें राख की चिमठी से सुखाकर हुण्डी राजपूत को दे दी।

वह अहमदाबाद की जवेरी गवाड़ में सेठ सोमचंद की कोठी पर पहुंचा। उन्हें हुण्डी दी। उन्होंने वनस्थली के सेठ सवाचंद का नाम पढ़ा तो सही, पर कोई परिचय याद नहीं आया। मुनीम को भी याद नहीं आया। कोई खाता भी उनके नाम से नहीं मिला। सेठ सोमचंद ने तब राजपूत से कहा—बड़ी रकम की हुण्डी हमारे यहां तीन दिन में सिकारी जाती है। आप इतने



समय तक हमारे यहां ठहरिये। वह ठहर गया। सेठ सोमचंद ने हुण्डी पर पड़े दो आंसुओं से सेठ सवाचंद की विपत्ति का कुछ अनुमान लगाया। कुछ राजपूत से बात करके पता लगाया।

उदारमना सेठ ने अपने मुनीम से कहा—किसी इज्जतदार के दो आंसुओं को दो मोती मानकर हमें उनकी लाज रखनी है। यह हुण्डी विवशता में राम भरोसे ही हमारे नाम से लिखी गयी है, अतः खर्च खाते लिखकर रुपये अभी चुका दो। सेठ के आदेश से मुनीम ने रुपये चुका दिये तथा भुगतान की रसीद ले ली। राजपूत भुगतान लेकर आ गया है, यह पता सेठ सवाचंद को भी लग गया। वह बड़ा प्रसन्न हुआ। चित्त सेठ सोमचंद के प्रति अहोभाव से भर गया।

कुछ ही महीनों बाद तूफान में भटके जहाज भी तट पर आ लगे। माल में भयंकर तेजी आयी और दोगुने मूल्य में माल बिका। सेठ सवाचंद का सितारा फिर चमक उठा। सेठ ने राजपूत मित्र को साथ लिया और अहमदाबाद आकर सेठ सोमचंद के चरणों में पगड़ी रखकर समय पर लाज रखने का आभार माना। ऋण मुक्ति के लिए सेठ सवाचंद ने तीन लाख की थैलियां सामने रख दीं, पर सेठ सोमचंद ने कहा—हमारे यहां खाते में आपके नाम से कोई लेनदारी नहीं है अतः बिना हक की रकम मैं नहीं ले सकता। सेठ सवाचंद देकर ही जाना चाहता था तो सेठ सोमचंद लेने को तैयार नहीं था। आखिर पंचों ने कहा—आप दोनों ही महान् हैं, अतः इस रकम से दोनों के संयुक्त नाम पर नगर का दरवाजा बना दिया जाये।

आखिर में वैसा ही हुआ और तब की बनी 'सवा सोमा पोल' आज भी विद्यमान है। ईमानदारी का यह ज्वलंत उदाहरण है जो मनुष्य को नैतिकता का संदेश दे रहा है।

ईमानदार व्यक्ति की छाप अमिट होती है वह स्व पर कल्याणकारी होता है। नीति निष्ठ लोगों का जीवन स्वयं एक मूल्यवान ग्रंथ होता है। पवित्र जीवन से बड़ा ग्रंथ कौन—सा होगा? जैन परंपरा में सर्वज्ञ को ही आगम (महाग्रंथ) कहा जाता है। उन्नत जीवन सचमुच एक जीती—जागती मशाल है। इस दृष्टि से जीवन सुधार का अभियान ही सर्वोत्तम है।

आचार्यश्री तुलसी ने कहा था—“जिस व्यक्ति, समाज, जाति या राष्ट्र का चरित्र ऊँचा नहीं होता, वह किसी भी दिशा में सफल नहीं हो सकता।”

लेखक जैन तेरापंथ परम्परा के महाब्रती संत हैं। अणुव्रत के प्रति उनकी अभिरुचि लेखनी के माध्यम से सामने आती रहती है।



अगर जिन्दगी में रिश्ते न होते...

■ अशोक अंजुम ■

गीतकार और ग़ज़लकार

न जीवन में खुशियों की होतीं फुहारें,
न मन को लुभातीं कभी भी बहारें,
नहीं धूप में हमको छाया ही मिलती,
न मन में जमी बर्फ फिर—फिर पिघलती,
जो जीवन में दुःख हमको रह—रह सताता—
तो सिर किसके काँधे पे रखकर के रोते ?
अगर जिन्दगी में ये रिश्ते न होते !

ये रिश्ते हैं, धागों से बाँधे रहे हैं,
ये रिश्ते हैं, जो हमको साधे रहे हैं,
कभी वक्त ने ठोकरों से गिराया,
तो रिश्तों ने ही बढ़के हमको उठाया,
हम अपनी सलीबें उठाते स्वयं ही—
हम अपने ही कंधों पे खुद उसको ढोते!
अगर जिन्दगी में ये रिश्ते न होते !

रुदन में भी रिश्ते हैं, कलरव में रिश्ते,
जीवन के हर एक उत्सव में रिश्ते,
है रिश्तों की महिमा का कोई न सानी,
है रिश्तों से जीवन की मधुमय कहानी,
किसी रास्ते पे न दिखता उजाला—
न आशाएँ होतीं, न सपने सँजोते!
अगर जिन्दगी में ये रिश्ते न होते !



प्रामाणिकता

व्यावसायिक सफलता का आधार



■ पुष्पा हिरण ■

जी

वन उन्हीं का सार्थक है जो नैतिक और चारित्रिक मूल्यों के प्रति जागरूक रहते हैं। दूसरों के बजाय स्वयं को सुधारने के लिए कृत संकल्प होते हैं। वह समाज श्रेष्ठ, उन्नत, समृद्ध और संस्कारी माना जाता है, जिसकी हर इकाई का अपना एक विशिष्ट चरित्र होता है।

जहां जीवन मूल्यों को प्रामाणिकता से जीया जाता है, जहां सबके विचारों को सम्मान मिलता है, जहां समन्वय नीति से सापेक्ष चिंतन कर समस्या का समाधान खोजा जाता है, जहां अमीरी और गरीबी की भेदरेखा व्यक्ति को आपस में नहीं बांटती, जहां गुणों को पैसे से ज्यादा महत्व मिलता है। वही व्यक्ति वास्तव में सही अर्थों में सफलता प्राप्त कर सकता है, जिसके जीवन में संयम, प्रामाणिकता व प्राणी मात्र के प्रति मैत्री का भाव होता है।

सुख का मूल स्रोत संतोष है। संतोष से अभिप्राय है – सहजता, सरलता, प्रामाणिकता एवं श्रम-परिश्रम से जितना प्राप्त हो जाये, उससे आगे की इच्छा न करना, अधिक महत्वाकांक्षाएं मन में न पालना, सामर्थ्य से बाहर की इच्छाओं के पीछे दौड़ न लगाना तथा न्याय से उपार्जित विभव से ही तृप्त रहना। वस्तुतः दूसरों को पीड़ित किये बिना, भ्रष्टाचार से दूर रहते हुए, सदाचरण से जो प्राप्त हो जाए उसे बहुत समझना, यह न्यायोपार्जित विभव है और उसी में तृप्त रहना ही संतोष है।

आज व्यक्ति बहुत बेचैन है। अपने सामर्थ्य, क्षमता, योग्यता व शक्ति को बिसारकर भौतिक सुख-सुविधाओं के साधनों के पीछे दौड़ लगा रहा है। धन की चकाचौंध में आज मानव की आंखें चुंधिया गई हैं, वह उसे उजाला समझकर उसकी 'येन केन प्रकारेण' प्राप्ति के लिए पागल सा बना हुआ है, किंतु उसके परिणामों से बेखबर है। इसका अर्थ यह नहीं कि धन का उपार्जन नहीं करना चाहिए। धन का महत्व गृहस्थ जीवन में सदा रहा है। वह वस्तुओं को प्राप्त करने का एक सक्षम और प्रभावी माध्यम है, किंतु आज

की विडम्बना यह है कि धन सर्वसत्ता सम्पन्न बन गया है। इसलिये धन प्राप्ति के लिए अंधी दौड़ चल रही है, और व्यक्ति व्यवसाय में अप्रामाणिकता करने में भी हिचक नहीं रहा है, पर अप्रामाणिकता से व्यक्ति व्यावसायिक जगत में क्षणिक सफलता तो प्राप्त कर सकता है, परंतु स्थायी सफलता कभी नहीं। झूठ का पर्दा एक न एक दिन जरूर हटता है, तब वह घोटाले व कर चोरी के जुर्म में फंसकर जीवन के हर क्षेत्र में असफलता को प्राप्त होता है।

सफलता के आधारभूत तत्त्व

सफलता—एक छोटा सा शब्द है, मगर यह अपने में बड़ी-बड़ी उमंगें, ढेर सारी प्रतिष्ठा और दुनिया भर की खुशी समेटे हुए है। ऐसा कौन—सा व्यक्ति है जिसे यह शब्द न लुभाता हो। सफलता एक विशिष्ट घटना है और हम सभी चाहते हैं कि यह घटना हमारे जीवन में बार—बार घटित हो। सफल व्यक्ति उगते सूरज की भाँति होता है जिसे चहुं ओर से लोग नमस्कार करते हैं। हर व्यक्ति की सफलता अपने मानदंड में होती है जो कि उम्र के साथ बदलती रहती है। कक्षा में प्रथम आना या प्रतियोगी परीक्षा में उत्तीर्ण होना एक विद्यार्थी की सफलता है। मैच जीतना एक खिलाड़ी की सफलता है। अच्छा सा कैरियर पा जाना एक युवा की सफलता है तो व्यवसाय में उत्तरोत्तर तरक्की करते जाना एक उद्यमी की सफलता है। और भी बहुत से उदाहरण हैं सफलता के। व्यावसायिक जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य को तत्काल निर्धारित कर सही दिशा में समर्पित और प्रयासरत रहें तो सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। नैतिकता, प्रामाणिकता, धैर्य और दृढ़ संकल्प से व्यक्ति अपने व्यवसाय में निरंतर सफलता प्राप्त करता हुआ एक सफलतम व्यवसायी बन सकता है। इतिहास के पन्नों में अनेक ज्वलंत उदाहरण इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

आज व्यक्ति के खातों में स्नेह और सद्भाव की पूंजी के नाम पर मात्र शून्य है। दुकानों की साख है, पर इंसानियत की राख उड़ रही है। अमीरी की अग्रिम



अणुव्रत
नैतिक
व
संयमित जीवन
जीने की
संजीवनी है।

पंक्ति में आने की धुन में लोग जीवन की वास्तविक पूँजी सदगुणों को नकली सिक्कों की भाँति कहीं भी फेंक देते हैं। ऐसे व्यक्ति चाहे व्यवसाय में शीर्षस्थ भले ही बन जाएं, पर आंतरिक समृद्धि के अभाव

में उनकी स्थिति दयनीय ही रहती है। अनैतिकता को प्रश्रय देकर व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना, समस्याओं को खुला निमंत्रण देना है। इस प्रकार की सफलता मात्र बाहरी दिखावा हो सकती है, अन्तर्मन को इससे खुशी व शांति कभी प्राप्त नहीं हो सकती। आकाश के तारे आपस में टकराये बिना अपनी स्वतंत्रता को कायम रखना जानते हैं। कांटों में रहकर भी फूल अपनी पंखुड़ियों को अक्षत, विकसित रखना जानता है तो फिर मनुष्य जैसा बुद्धिमान प्राणी व्यवसाय में प्रामाणिकता रखता हुआ कैसे सफल नहीं हो सकता?

अणुव्रत का एक नियम है – 'व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।' अणुव्रत नैतिक व संयमित जीवन जीने की संजीवनी है। नियम हमारे सामाजिक जीवन का आधार हैं। नियमों की धुरी पर ही सारा जीवन—चक्र घूमता है। नियम ही हमारे जीवन को हर क्षेत्र में व्यवस्थित, मर्यादित और नियंत्रित रखते हैं तथा दिशा प्रदान करते हैं। जहां नियम नहीं, वहां अव्यवस्था होना निश्चित है। बात घर-परिवार की हो अथवा उद्योग-व्यापार की, नियमों की पालना से सुव्यवस्था बनी रहती है एवं नियमों की अवहेलना से बहुत भारी हानि भी उठानी पड़ती है। जितने भी घपले, घोटाले, गबन होते हैं, सब अधिकांशतः स्थापित नियमों की अवहेलना के कारण ही होते हैं जिससे धन, समय व श्रम का अवमूल्यन होता है। अतः व्यावसायिक सफलता के लिए व्यवसाय के आधारभूत नैतिक नियमों की पालना अति आवश्यक है। जो व्यक्ति व्यवसाय में प्रामाणिकता बरतता है, उसे लाभ भले ही कम होता है पर वह चिररथायी होता है, इससे जीवन भी शांत व सुखी बन जाता है। इसके विपरीत जहां अप्रामाणिकता होती है वहां पर पल-पल कभी सेल टैक्स वालों का कभी इन्कम टैक्स वालों का भय बना रहता है एवं असत्य वचन का प्रयोग, हिंसा, चोरी आदि भी करनी पड़ती है और इसके परिणामस्वरूप कभी-कभी तो स्थिति ऐसी भयावह हो जाती है कि सलाखों के पीछे भी जाना पड़ जाता है एवं इज्जत-आबरू सब मिट्टी में मिल जाती है। व्यक्ति हमेशा तनावग्रस्त रहता है एवं अति लालच के कारण धंधे में बड़ा घाटा लग जाता है। करोड़पति रोड़पति बन जाता है। यह सब होता है अनैतिकता एवं अप्रामाणिकता के कारण। व्यावसायिक

सफलता का आधार तो प्रामाणिकता ही है। यह अक्षरशः सत्य है। तौल-माप में अनियमितता न करना, मिलावट आदि न करना व दूसरों की वस्तु को अपना न बताना प्रामाणिकता है।

व्यावसायिक सफलता का अर्थ

भोजन जीवन का अनिवार्य अंग है। प्रत्येक गृहस्थ अपनी रोजी-रोटी की व्यवस्था के लिए आजीविका की खोज करता है। व्यावसायिक सफलता का अर्थ यही है कि वह व्यापार में नैतिकता व प्रामाणिकता रखता है और व्यापार में भी ऐसे विकल्प स्वीकार करता है जिससे उसका जीवन यापन आराम से हो सके और समाज में किसी प्रकार की विकृति भी न फैले। पर आज भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह एक ऐसी घातक बीमारी है जिससे चरित्र की गरिमा धूमिल होती जा रही है। चरित्रहीनता के कारण व्यक्ति निकृष्ट से निकृष्ट कार्य के लिए निःसंकोच तैयार हो जाता है फिर भले ही देश और समाज का अहित ही क्यों न हो। चांदी के चंद टुकड़ों के लिए अपनी ईमानदारी को निःसंकोच ताक पर रख देता है। एक-दूसरे को छलने की मनोवृत्ति पनपती जा रही है। इनसे तभी छुटकारा पाया जा सकता है जब इस समस्या का सम्यक् इलाज हो। अणुव्रत आचार संहिता तथा भारतीय संस्कृति मानव को मानव बनने का सन्मार्ग बताती है। वह सबको नैतिकता की सुरसरिता में स्नात होने का सफल सुव्यवस्थित राजमार्ग प्रदान करती है।

जीवन को अमृतमय बनाने वाली संजीवनी बूटी है – नैतिकता। आचार्यश्री तुलसी का मानना था कि जो व्यक्ति अहिंसा और सत्य, प्रामाणिकता और पवित्रता का आचरण करता है, वह भले ही भगवान को न मानने वाला हो, लेकिन सही अर्थों में वह भगवान का भक्त है और सच्चा धार्मिक है। अणुव्रत प्रामाणिकता का आंदोलन है। जो व्यक्ति जितना नैतिक और आचारनिष्ठ होगा वह जीवन में उतना ही अधिक सफल होगा और समाज उतना ही उन्नत और समृद्ध होगा। व्यावसायिक जीवन की सफलता का आधार प्रामाणिकता ही है। यही महावीर का अर्थशास्त्र भी है। महावीर के अर्थशास्त्र की बुनियाद है साधन-शुद्धि। इस बुनियाद पर नियंत्रित इच्छाओं का महल खड़ा होगा तभी व्यक्ति सुख-चैन से जी सकेगा।

लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं। वे चेन्नई में रहती हैं व नैतिक मूल्यों से जुड़े विषयों और समसामयिक मुद्दों पर लिखती हैं।



भगवान

महावीर

और

अहिंसा



■ डॉ. दिलीप धींग ■

अहिंसा के सर्वोच्च उद्घोषक, जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर भगवान महावीर का स्मरण प्रत्येक कालखण्ड में प्रासंगिक रहा है। हिंसा और विषमता के दौर में उनकी प्रासंगिकता निस्सन्देह बढ़ जाती है। मौजूदा वक्त में सभ्यता, शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के इतने विकास के बावजूद भय और अतृप्ति का बढ़ते जाना बहुत बड़ी विभीषिका है।

सारी समस्याओं का मूल है – हिंसा। प्राचीनतम आगम ग्रन्थ आचारांग सूत्र में वर्धमान महावीर कहते हैं – सब दुःख हिंसा में से उत्पन्न होते हैं। प्रश्नव्याकरण सूत्र में उन्होंने कहा, प्राणिवध चण्ड है, रौद्र है, क्षुद्र, अनार्य, करुणारहित और महाभयंकर है। सूत्रकृतांग में कहा, हिंसा में लगे हुए अज्ञानी जीव अन्धकार से अन्धकार की ओर बढ़ रहे हैं। भारतीय रक्षाविज्ञान के शिल्पी पद्मविभूषण डॉ. दौलतसिंह कोठारी आचारांग सूत्र और इसमें वर्णित अहिंसा के विशद विवेचन से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कहा था कि अहिंसा के बगैर विज्ञान अधूरा और प्रलयकारी है।

आचारांग सूत्र में वनस्पति, जल, हवा, पृथ्यी और अग्नि में भी चेतना होने की उद्घोषणा है। वनस्पति में जीव होने की स्वीकृति बीसवीं सदी के आरम्भ में जगदीशचन्द्र बोस के प्रयोगों के पश्चात् विज्ञान ने भी दी। आज पर्यावरण की रक्षार्थ पेड़–पौधों, जल, अग्नि, हवा, धरती आदि के विवेकसम्मत उपयोग की हिदायतें दी जा रही हैं। ऐसे में भगवान महावीर की अहिंसा की सार्थकता और प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

आचारांग सूत्र में तीर्थकर महावीर अत्यन्त गहरी बात कहते हैं – ‘जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है।’ पर–हिंसा के साथ होने वाली स्व–हिंसा मनुष्य देख नहीं पाता है। हिंसा से आत्मा मलिन व पतित होकर अधोगति में चली जाती है। व्यक्ति हिंसा और प्रतिहिंसा तथा इनसे निष्पन्न अगणित बुराइयों के एक अन्तर्हीन दुष्क्र क्रमें फँस जाता है। वातावरण में क्रूरता और घृणा की विकिरणों व परमाणुओं से न सिर्फ मानव–समाज अपितु सम्पूर्ण प्रकृति दुष्प्रभावित होती है। मानवीय सम्बन्धों में सौहार्द का अभाव और पर्यावरण–प्रदूषण जैसी समस्याएँ हमारे सामने अनेक सवाल खड़े करती हैं। उन सब सवालों का एक शब्द में समाधान है— अहिंसा। आचारांग सूत्र में वर्धमान महावीर कहते हैं— ‘हिंसा और शस्त्र तो एक से बढ़कर एक हैं। पर, अहिंसा और अशस्त्र से बढ़कर कुछ नहीं है— अतिथि सत्थं परेण परं, नन्थि असत्थं परेण परं।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर आदिनाथ भगवान क्रष्णदेव के ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत, जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ, तथा दूसरे पुत्र बाहुबलि में छोटी–सी बात को लेकर युद्ध की नौबत आ गई। लेकिन असंख्य वर्षों पूर्व हुए उस युद्ध में सेना और शस्त्रों का प्रयोग नहीं किया गया। बाहुबलि ने शस्त्रास्त्र–प्रयोग की मनाही करके विश्व को निरस्त्रीकरण का प्रथम सन्देश दिया।

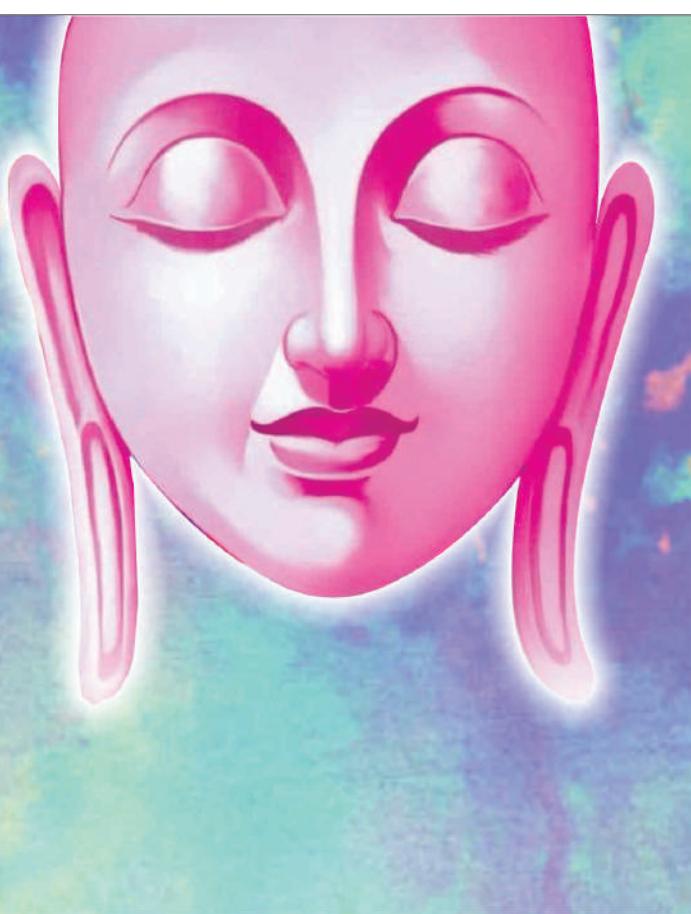
आज विश्व में हिंसा, हथियारों और हिंसा के प्रशिक्षण पर अनाप–शनाप खर्च किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ कहते थे कि यदि इसका शतांश भी अहिंसा और अहिंसा के प्रशिक्षण पर खर्च किया जाए तो मनुष्य जाति का बहुत भला हो सकता है। यह धरती स्वर्ग से ज्यादा सुन्दर और सुखद हो सकती है।

भगवान महावीर कहते हैं कि सिद्धान्त सारे सिद्धान्तों का सिद्धान्त है। उसकी वैज्ञानिकता अकाट्य, मौलिक और त्रैकालिक है। उसकी उपयोगिता असन्दिग्ध और शाश्वत है। आत्मा की

भगवान महावीर कहते हैं –

‘जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है।’





समानता और आत्मा की स्वतन्त्रता अहिंसा सिद्धान्त के केन्द्रीय तत्व हैं। द्रव्य की दृष्टि से संसार की समस्त आत्माएँ समान हैं और अस्तित्व की दृष्टि से पूर्ण स्वतन्त्र। इसलिए महावीर का धर्म और दर्शन महज मानवतावादी ही नहीं है, वरन् उससे भी आगे, बहुत आगे आत्मवादी है। उनका मानववाद, आत्मवाद को पुष्ट करता है और आत्मवाद मानववाद को। इस प्रकार दोनों ही पृथक् एवं अपृथक् रूप से अहिंसा—सिद्धान्त को श्रेष्ठतम्, उच्चतम्, सूक्ष्मतम् और विराटतम् बना देते हैं। उसके इतने आयाम खड़े होते हैं कि वहाँ अनेकान्त जैसा परम उपयोगी और मौलिक दर्शन सहज ही प्रसूत होता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अनेकान्त के अनुसन्धान को अहिंसा की साधना का उत्कर्ष बताया था। महात्मा गांधी ने कहा था कि अहिंसा का सर्वाधिक विवरण भगवान महावीर ने प्रस्तुत किया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि जगत के अन्य किसी धर्म में अहिंसा—सिद्धान्त का प्रतिपादन इतनी सफलता से नहीं मिलता है।

ज्ञानी होने का, शिक्षित होने का सार यही है कि व्यक्ति किसी जीव की हिंसा न करे। अहिंसामूलक समता ही धर्म का सार है। बस, इतनी-सी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये।

भगवान महावीर ने मानव को मुख्यतः पाँच व्रतों के पालन करने की देशना प्रदान की। उनमें प्रथम है – अहिंसा। उसके आगे हैं – सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये जो आगे के चार व्रत हैं, उनकी व्यवस्था प्रथम अहिंसा व्रत की सम्पूर्ण, समग्र अनुपालना के लिये है। व्यक्ति ऊँची शिक्षा प्राप्त कर ले, बहुत ज्ञान अर्जित कर ले, किन्तु यदि उसके हृदय में करुणा और प्रेम नहीं है तो सब व्यर्थ है। सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है –

एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसति कंचणं।
अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया ॥

ज्ञानी होने का, शिक्षित होने का सार यही है कि व्यक्ति किसी जीव की हिंसा न करे। अहिंसामूलक समता ही धर्म का सार है। बस, इतनी-सी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये।

भगवान महावीर बहुत सरल भाषा में कहते हैं – सुख सबको प्रिय है, दुःख अप्रिय। सभी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम जैसा व्यवहार स्वयं के प्रति चाहते हैं, वैसा दूसरों के प्रति भी करें। यही मानवता है और मानवता का आधार भी। मानवता बचाने में है, मारने में नहीं। किसी भी मानव, पशु—पक्षी या प्राणी को मारना, काटना, प्रताङ्गित करना स्पष्टः अमानवीय और क्रूरतापूर्ण है। हिंसा—हत्या और खून—खच्चर का मानवीय—मूल्यों से कभी कोई सरोकार नहीं हो सकता। मूल्यों का सम्बन्ध तो 'जियो और जीने दो' जैसे सरल श्रेष्ठ उद्घोष में समाहित है।

अहिंसा समस्त प्राणियों को सुख देने वाली है। समस्त संसार का मंगल करने वाली है। महासत्ता में अहिंसा एक शाश्वत तत्व है। उसके साथ खिलवाड़ से नैसर्गिक समरसता भंग होती है जिसके विपरीत परिणाम सबको भोगने पड़ते हैं। इसलिए भगवान महावीर ने भाव और द्रव्य, दोनों प्रकार की हिंसा का निषेध किया। स्थायी शान्ति के लिए व्यक्ति के चित्त से हिंसा के संस्कारों का मिटना आवश्यक है। यह बात दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि हिंसा किसी भी समस्या का स्थायी और निरापद समाधान नहीं है। अपितु हिंसा स्वयमेव एक समस्या और अनेक समस्याओं की जन्मदात्री है। तीर्थकर महावीर ने अहिंसा पर इतना जोर दिया कि अहिंसा, जैन धर्म और भगवान महावीर एक—दूसरे के पर्याय हो गये।

लेखक अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केंद्र, चेन्नई के निदेशक हैं। वे आचार्य हस्ती सम्मान, अणुव्रत लेखक सम्मान समेत कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।





बच्चों तक पहुँचने दें बाल साहित्य

■ मानस रंजन महापात्र ■

अभी कुछ दिन पहले मैंने एक कहानी पढ़ी। कहानी इस प्रकार है – दोपहर को बच्चा स्कूल से लौटा, तब चिड़िया पेड़ पर आराम कर रही थी। बच्चे की मां ने उसे दुलार किया, खाना खिलाया और कहा—‘बेटे, होमवर्क करो और पेपरों की तैयारी करो।’ बच्चा पढ़ने बैठा। चिड़िया ने दाना चुगा, पानी में किल्लोल किए। बच्चा पढ़ता रहा। उसका ध्यान अपने खिलौने की तरफ लगा हुआ था। सांझ को चिड़िया घोंसले में लौट आई। बच्चा बिस्तर में पढ़ने बैठा था। सुबह चिड़िया आकाश में चहकने लगी थी, जब बच्चा पढ़ने बैठा था। स्कूल जाने से पहले उसने कहा—‘मां, जब मैं यूनिवर्सिटी पढ़ लूंगा, उसके बाद मैं खूब खेलूंगा, कोई काम नहीं करूंगा।’

इस कहानी को पढ़ने के बाद मैंने अपने बचपन के बारे में सोचा। बचपन के सपने, साथी बच्चे, शिक्षक, विद्यालय, मेरे छोटे शहर का रामकृष्ण मिशन पुस्तकालय आदि सब याद आए। क्या मेरे बचपन में पढ़ने के साथ—साथ खेल—खेल में सीखने का अवसर मिला? या मैं खिलौनों को देखता ही चला गया, यूनिवर्सिटी पढ़ लिया, तब तक खेलने का समय बीत गया था। ऐसे कई विषय मैंने सोचे।

फिर मैंने अपने बच्चे, अपने साथियों के बच्चे, मोहल्ले के बच्चे, सबके बारे में भी सोचा। अपने बचपन के साथ उनके बचपन की तुलना की। मुझे बचपन में जो पढ़ने को मिला था और उनके बचपन में जो पढ़ने को मिला, उसके बारे में भी सोचा। रंग—बिरंगे चित्रों की आवश्यकता मेरे बचपन में भी थी, लेकिन वह सामग्रियां मेरे पास नहीं थीं। आज के समय में बच्चों के लिए कई तरह की पाठ्य सामग्रियां तथा साहित्य उपलब्ध हैं।

अगर हम बच्चों के नजरिये से संसार को देखें तो पायेंगे कि उनमें भरी होती है जिज्ञासा, कौतूहल, सपने और अपने मन के मुताबिक चीजों के लिए असीमित आग्रह। उनमें शरारतें हैं, खेलकूद है, साहित्य भी है। बच्चे क्या पढ़ना चाहते हैं, उसके बारे में कई चर्चाएं तथा शोध हो चुके हैं जिनसे पता चलता है कि बच्चे सिखाने से नहीं, देखने से और उससे अधिक खुद करने से सीखते हैं।

बच्चों को कहानी पसंद है। कहानी के माध्यम से बच्चों को आनंद तथा मनोरंजन मिलता है जो कि आधुनिक शिक्षण पद्धति का



एक विशेष प्रयोग है। क्या कहानी कहना और सुनना एक कला है? इंटरनेट और टेलीविजन के युग में क्या बच्चों का नानी-दादी की तरह कहानियां सुनाकर मनोरंजन किया जा सकता है? ऐसे ही कई सवाल हमारे परिवेश से उभरते रहे हैं। विशेष रूप से वे बच्चे, जो विषम सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण समय से पहले ही अपना बचपन खो देते हैं, उनके जीवन में मनोरंजन, जागरूकता और ज्ञानार्जन में कहानियों की भूमिका क्या हो? इन्हीं प्रश्नों के साथ आरंभ होता है बच्चों के साहित्य का स्वरूप।

क्या बच्चों का साहित्य या बाल साहित्य सामान्य साहित्य से अलग है? ऐसी कई साहित्यिक कृतियां हैं जो बच्चों के लिए और बड़ों के लिए समान मूल्य रखती हैं जैसे लियो टाल्सटाय, प्रेमचंद अथवा टैगोर की कहानियां। टैगोर ने बच्चों के लिए अलग से भी कुछ लिखा है जैसे 'शिक्षा तोते की' कहानी। वहीं उनकी 'काबुलीवाला' जैसी कहानी भी है जो बच्चों के लिए भी और बड़ों के लिए भी समान रूप से ग्रहणीय है। आर. के.नारायण, अनिता देसाई, मनोज दास, रस्किन बांड, महाश्वेता देवी, गुलजार, कमलेश्वर, एम.टी.वासुदेवन नायर जैसे लेखकों ने ऐसी कई रचनाएं लिखी हैं जो बच्चों और बड़ों दोनों के लिए आनंददायक हैं। हां, एक बात तय है कि 'बच्चों के लिए' लिखना और 'बचकाना' लिखने में बहुत अंतर है। शायद इसीलिए बांग्ला के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं के ख्यातिलब्ध लेखक बच्चों के लिए लिखने से बचते फिरते हैं।

बच्चों की सृजनात्मकता को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है? शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका के अनुसार "सच्चा सृजन शांति, प्रसन्नता, एकाग्रता, निर्भयता, स्वतंत्रता एवं स्वयंस्फुर्ति द्वारा प्रकट होता है। विद्यालय में बच्चों को वस्तुओं को देखने तथा उन पर प्रयोग करने, जिज्ञासु होने तथा प्रश्न करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।"

इस संदर्भ में गांधीजी ने कहा था, "मेरी सिखाने की पद्धति यह होगी कि जब बच्चा बोलना शुरू करता है तब भाषा की तालीम (मौखिक) शुरू होगी। पहले रंगों की पहचान कराएं, फिर चित्रों से शुरू करें। अक्षर भी तो चित्र ही होते हैं। कोई तोते का चित्र बनाएगा, कोई चिड़िया का, तो कोई किसी अक्षर का। इस प्रकार सब के अलग-अलग चित्र होंगे। बच्चों का हिलना, चलना, खेलकूद सभी सृजनात्मक होते हैं। खेल का मतलब होता है कुछ करते हुए सीखना। यदि शुरू से बच्चे को रचनात्मक काम करने की आदत पड़ जाए तो उसकी प्रगति उसी दिशा में होगी। वह आलसी नहीं होगा और आगे चलकर उसे कोई काम बोझ नहीं मालूम होगा। काम के साथ वह उस काम में दिमाग भी

लगाएगा, जिससे उसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति अधिक बढ़ती जाएगी।"

अब सवाल उठता है कि क्या बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए हमारे पास पर्याप्त बाल साहित्य है? क्या बच्चों की रुचि तथा आग्रह के अनुसार पुस्तकें बाजार में या पुस्तकालय में मिल रही हैं? क्या बच्चों की पठन प्राथमिकताओं के आधार पर पाठ्येतर पुस्तकें भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो रही हैं? क्या लेखक एवं चित्रकार कभी बच्चों से बातचीत करके पता करते हैं कि उनको किस तरह की पठन सामग्री या चित्र चाहिए? क्या बच्चों की आज की प्राथमिकता के अनुरूप ऐसा साहित्य सृजित हो रहा है जो उनके अंतर को खुशी से भर सके? जो उनके हृदय को छू सके? क्या ऐसा कोई स्वायत्त संस्थान इस देश में बनना चाहिए जो भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य के विकास के लिए काम कर सके? हम सबको इसके बारे में विशेष रूप से सोचने की आवश्यकता है।

यह कहना गलत होगा कि बच्चों के लिए श्रेष्ठ सृजनात्मक बाल साहित्य की कमी है। दरअसल कमी तो माता-पिता, शिक्षकों, शिक्षाविदों के दृष्टिकोण में है जो सही बाल साहित्य को पहचानते नहीं या पहचानने की कोशिश नहीं करते या पहचान कर उसे चिह्नित नहीं करते। इस सच्चाई को सब जानते हैं कि स्कूलों के बड़ी संख्या में पुस्तकें खरीदने के बावजूद सालों तक वे बंडल बंधे पड़े रहते हैं। ऐसी स्थिति में यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि किसी भी भारतीय भाषा के सृजनात्मक साहित्य को पहचान मिलेगी। भारत की सभी भाषाओं में अखबार और पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। इनमें साहित्य को कितने प्रतिशत रस्थान मिलता है, यह सभी जानते हैं। तब बाल साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तकों की अपेक्षा इनमें प्रकाशित करने की कल्पना व्यर्थ है। बच्चों की पत्रिकाएं भी गिनी-चुनी हैं। लोग सिनेमा के टिकट और आइसक्रीम पर खर्च कर सकते हैं, पर बच्चों की किताबों पर नहीं। ऐसे में बाल साहित्य बच्चों तक कैसे पहुंचे? तब बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा कहां से मिलेगा?

जब तक बच्चों तक पुस्तकें नहीं पहुंचेंगी, तब तक बाल साहित्य के सृजनात्मक विकास की आशा करना व्यर्थ है। नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से पुस्तक मेले लगाकर एवं कम मूल्य में पुस्तकें उपलब्ध कराकर बच्चों तक बाल साहित्य पहुंचाने की दिशा में एक प्रयास देखने को मिलता है। निःसंदेह यह एक सफल प्रयास है। इसे आंदोलन का रूप लेना चाहिए।

लेखक ओडिया भाषा के महत्वपूर्ण कवि व साहित्यकार हैं। वे लम्बे समय तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र के प्रमुख रहे हैं।



उठै, जागो, भावो

■ द्वारिका प्रसाद अग्रवाल ■

कया हम नींद में हैं या उनींदे हैं या जाग रहे हैं लेकिन आंखें बंद करके पड़े हुए हैं? इसका अर्थ यह है कि हम अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों को यूँ ही जाने दे रहे हैं। घड़ी की हर एक टिक-टिक के साथ जीवन कम होता जा रहा है। अपनी जागरूकता से इन अमूल्य पलों की महत्ता को समझा जा सकता है लेकिन प्रश्न यह है कि खुद को जागरूक कैसे करें?

सोना और जागना हमारे जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। पूरे दिन का एक तिहाई समय सोने और दो तिहाई जाग कर रहने के लिए होता है। जाग कर रहने का मतलब केवल आंखें खोल कर रहना नहीं होता, मन को जाग्रत करके रखना होता है, हरेक गतिविधि पर सतर्कता कायम रखनी होती है। जो भी हो रहा है, यदि हम बेहोशी में कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि हम कुछ नहीं कर रहे हैं, वह अपने—आप ही हो रहा है। टू—व्हीलर या फोर—व्हीलर चलाते समय हमारी मानसिक स्थिति पर गौर किया जाए तो व्हील, एक्सीलरेटर और ब्रेक स्वाभाविक रूप से संचालित होते रहते हैं। हमारा ध्यान कहीं और रहता है। ध्यान की इस अनुपस्थिति का अर्थ है, मन का जाग्रत न होना। मन को जाग्रत करने का अर्थ है, प्रत्येक क्रिया के प्रति मानसिक रूप से सतर्क रहना। जो भी हम कर रहे हैं या जो कुछ हमारे आसपास हो रहा है, उसके प्रति सजग रहना।

हमारे जीवन में एक क्रिया निरंतर होती है, श्वास लेने की। वह आती—जाती रहती है लेकिन एक मिनट के लिए यदि श्वास को अवरुद्ध कर दिया जाए तो उसकी उपयोगिता समझ में आ जाएगी। मगर हकीकत यही है कि हमारे शरीर के लिए इतनी अधिक आवश्यक क्रिया के प्रति हम सचेत नहीं रहते, उसे ध्यान से नहीं देखते। ऐसी अनेक लापरवाहियां हमारे साथ निरंतर घटती रहती हैं और हम उसके प्रति जरा भी गंभीर नहीं रहते। जीवन एक खेल का मैदान है जिसमें हम एक खिलाड़ी हैं। हर खेल में जरूरी नहीं है कि हम जीतें लेकिन अच्छी तरह से खेलें, यह बेहद जरूरी है। छोटे—छोटे असंख्य खेलों का गुच्छा है यह

जीवन। कुछ में जीतेंगे तो कुछ में हारेंगे, लेकिन यदि लगातार हारते रहे तो जीतने की अभिलाषा क्षीण हो जाएगी और नैराश्य हमें धेर लेगा। मन पर निराशा का आक्रमण जीवन की सबसे बड़ी पराजय होती है, जीवन नीरस हो जाता है, मन उदास हो जाता है। मन की उदासी से शरीर में निष्क्रियता का आक्रमण होता है जो उसे हमेशा के लिए सुला देता है। शरीर में प्राण रहते हैं, सांसें चलती रहती हैं लेकिन जीवन से उत्साह दूर हो जाता है। ऐसी नकारात्मक स्थिति से बचने के लिए हमें हर पल सजग रहना होगा। दिमागी नींद से बाहर निकल कर स्वयं को चैतन्य बनाने का हमारा नियमित प्रयास होना चाहिए।

तेरह—चौदह साल का एक बच्चा सड़क पर चिल्ला—चिल्ला कर अखबार बेच रहा था। उससे पूछा, 'एक दिन में कितने अखबार बेचते हो?'

'तीस—चालीस.. उसने जवाब दिया।

'कितना पैसा कमा लेते हो?'

'कुछ भी नहीं।'

'क्यों? कमीशन नहीं मिलता क्या?'

'एजेंट नहीं देता, कहता है कि जब एक दिन में एक सौ अखबार बेचोगे, तब मिलेगा।'

'फिर इतनी मेहनत क्यों करते हो?'

'मैं बहुत मन लगाकर यह काम करता हूँ एक दिन सौ का आंकड़ा जरूर छू लूँगा।'

'और अगर न छू पाए तब?'

'तो भी चिंता नहीं है क्योंकि मैं इस उम्र में व्यापार करना सीख रहा हूँ। मेरी गुडविल भी बन रही है और सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे इस तरह चिल्ला—चिल्लाकर अखबार बेचने में मजा बहुत आता है।' यह थी उस बालक की जीवन में जीतने की भावना। वह उत्साही अपने पलंग में दुबक कर सुबह की प्यारी नींद में सो नहीं रहा था। वह जागा, वह उठा और हर सुबह खेल में जीतने के लिए सड़क पर आवाज लगाता दौड़ रहा था, 'आज की ताजा खबर'..।

लेखक व्यवहार विज्ञान के प्रशिक्षक हैं। बिलासपुर(छत्तीसगढ़) में रहते हुए होटल व्यवसाय के साथ ही साहित्य सृजन में भी सक्रिय हैं। अब तक सात किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।



आइए, सुनें पक्षियों की पुकार

■ श्रुति पाण्डेय ■

मनुष्ठ के न रहने से संसार से विलुप्त हो जाए, ऐसा कोई प्राणी नहीं, परंतु मनुष्ठ का सारा जीवन ही अपने चारों ओर रहने वाले पेड़—पौधों और पशु—पक्षियों पर निर्भर है। इसलिए प्राणियों की सेवा करना हमारा कर्तव्य तो है ही, साथ ही यह निहित स्वार्थ को एक परोपकारी दिशा भी देता है। गर्मी का मौसम है। हम सब अपने घरों में पंखे, कूलर, ए.सी. की हवा में इत्मीनान से बैठे हैं। आइसक्रीम, शीतल पेय पदार्थ इत्यादि के प्रयोग से हमने इस गर्मी में स्वयं की सुरक्षा और सुख की व्यवस्था कर ली है। पर ऐसे समय में हमें अपनी प्रकृति, पेड़—पौधों, पशु—पक्षियों की सेवा करने का कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि ये हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।

फिर से उमरे कोरोना काल में यदि हम बाहर नहीं जा सकते, तो कम से कम घर पर ही रहकर पुण्य का, सेवा का कार्य किया जा सकता है। अपने घरों की बालकनी में, लॉन में या छत पर चिड़ियों के लिए पानी से भरे बर्तन रखने या परिंडे बांधने से अधिक सेवा का सरल और सुगम्य मार्ग भला और क्या हो सकता है? यदि हम विचार करें तो पाएंगे कि हमारे आस—पास रहने वाले पक्षी बहुत अधिक दूर तक नहीं जाते और न ही पेड़—पौधों की भाँति जल संचय करने का कोई साधन है उनके पास। पक्षियों के साथ ही कितनी चीटियां, गिलहरियां हमारे इस छोटे से प्रयास से लाभान्वित हो सकती हैं, इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता।

लेकिन उनके हित से हमारा कितना हित जुड़ा हुआ है, इस पर एक दृष्टि अवश्य डाली जा सकती है। मनुष्ठ के लिए चिड़ियों की उपयोगिता देखें तो पाएंगे कि खेतों में, मिट्टी में, पत्तों पर बैठे कीड़े—मकोड़ों को खाकर वह बिना कीटनाशक या अन्य केमिकल के किसानों की मदद करती हैं और फसलों को तैयार होने में अपना योगदान देती हैं। यहीं नहीं, वातावरण को शुद्ध रखने में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मरे हुए जानवरों के शरीर का सेवन वे आसपास के इलाके को स्वच्छ और निर्मल बनाती हैं।

संसार की रचना प्रक्रिया में भी उनका असीम योगदान है। चिड़िया कई प्रकार के पौधों को पोलिनेट करने का कार्य करती हैं। अपनी छोटी सी चोंच में बीजों को यहाँ से वहाँ ले जाकर खुद को आत्मीय सुख तो देती ही हैं, साथ ही भिन्न—भिन्न जगहों पर प्राकृतिक रूप से पेड़—पौधों के उगने में उनके श्रेय को नकारा नहीं जा सकता। अगर एक दृष्टिकोण से देखें तो यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि पशु—पक्षी किसी देश की अर्थव्यवस्था में भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। सोचकर देखिए, गर्मी की छुट्टियों में हम परिवार, मित्रों आदि के साथ कहाँ धूमने जाना चाहते हैं? ध्यान देंगे तो पाएंगे कि हमारे ट्रिप में प्राकृतिक स्थान अभिन्न रूप से शामिल रहता है। फिर वो जू हो या वादियां या बर्ड सैंचुरी या फिर कोई हिल स्टेशन या छोटा सा पार्क ही। प्रवासी पक्षियों से लेकर हर आकार और रंग की चिड़ियों को देखने मात्र के लिए कितनी भीड़ होती है, इसकी कल्पना ही पर्याप्त है पक्षियों की उपयोगिता को समझाने के लिए। इस तरह हम देखते हैं कि हर रूप से पक्षी हमारे लिए कितने उपयोगी हैं।

सेवा कार्य के लिए धन नहीं, केवल मन की आवश्यकता होती है। कोरोना काल में हमें बाहर जाने की अनुमति नहीं है, ऐसे समय में हम अपनी ओर से बिना कहीं गए, घर बैठे ही पुण्य अर्जित कर सकते हैं। मात्र एक पानी भरा बर्तन रखकर। मिट्टी का बर्तन हो तो सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि वह ठंडा भी रहता है किसी भी धातु के बर्तन की अपेक्षा। अगर संभव हो तो उसके साथ दानों से भरा बर्तन भी रखा जा सकता है। और अगर कहीं खुला स्थान घर में न हो तो किसी पार्क में पेड़ पर परिंडे बांधने का कार्य तो किया ही जा सकता है। तो आइए, इन पंक्तियों को आत्मसात कर पुण्य कर्मों का संचय करने में जुट जाते हैं हम सब—

“अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम् ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥”

लेखिका इतिहास में एमए करने के बाद उच्च शिक्षा में अध्यापन का इरादा रखती हैं। फिलहाल प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में संलग्न हैं।



करुणा ही साहित्य का धर्म

■ गिरीश पंकज ■

साहित्य की अपनी एक संस्कृति होती है और संस्कृति का अपना एक साहित्य होता है। साहित्य की संस्कृति है, लोक-मंगल की भावना। करुणा का विस्तार और प्रसार। अतीत में जो साहित्य रचे गए, उनके परिपाश्व में भी यही भाव रहा कि हमारी जो श्रेष्ठ परंपराएं हैं, वे साहित्य के माध्यम से निरंतरता को बनाए रखें। साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक भी हैं। साहित्य की अगर कोई उज्ज्वल संस्कृति नहीं है तो सृजन बेमानी है।

आखिर साहित्य की संस्कृति क्या है? हम साहित्य के उद्गम काल से भी अगर उसके सृजनभाव पर दृष्टिपात करें, तो उसकी संस्कृति के केंद्र में जो एक महत्वपूर्ण तत्व नजर आता है, वह है करुणा। विश्व का सर्वाधिक प्राचीन और कहा जाय तो प्रथम ग्रंथ है रामायण। उसकी रचना वालीकि ने की। वह करुणा से द्रवित होकर ही सर्जक बन सके। इसके पहले वे दस्यु थे। साहित्य सर्जना से उनका कोई वास्ता नहीं था। लेकिन जब आपस में प्यार करने वाले क्राँच पक्षी के जोड़े में से एक को एक शिकारी ने मार गिराया, तब वालीकि के हृदय से कविता फूट पड़ी, “मा निषाद प्रतिष्ठां”। इसी को सुमित्रानंदन पंत जी ने अपने तरीके से कहने की कोशिश की, ‘वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान, उमड़ कर नैनों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान’। कविता का प्रस्थान—बिंदु करुणा है। यानी साहित्य की संस्कृति करुणा का विस्तार है। बिना करुणा के कोई बड़ा साहित्य रचा ही नहीं जा सकता। करुणा ही साहित्य का धर्म है। धर्म क्या है? रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने कहा है, “परहित सरिस धर्म नहिं भाई / पर पीड़ा सम नहिं अधमाई //” मतलब परहित धर्म है। करुणा धर्म है। और यही हमारी मूल संस्कृति है। इससे परे होकर हम साहित्य की कल्पना नहीं कर सकते।

साहित्य की जो व्याख्या हमने पढ़ी है, उसमें यही बताया है कि जिसमें सहित का भाव निहित है, वह है

साहित्य। सबको साथ-साथ लेकर चलने की भावना ही साहित्य है। वैसे तो साहित्य का शाब्दिक अर्थ होता है उपकरण या सामान। यानी जो अभिव्यक्ति का उपकरण है, वह साहित्य है। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है, शुद्धि या परिष्कार। जब साहित्य अभिव्यक्ति का उपकरण बनेगा और उसका लक्ष्य होगा शुद्धि और परिष्कार, तब सही मायने में साहित्य की संस्कृति का गरिमापूर्ण विस्तार हो सकेगा।

सनातन संस्कृति से आगे

भारत की प्राचीन संस्कृति सनातन संस्कृति या वैदिक संस्कृति रही है। वह मूलतः सामासिक संस्कृति ही थी। वह संस्कृति जिसने कहा ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ यानी पूरी दुनिया हमारा परिवार है। तो जाहिर है, इस परिवार में तरह-तरह के लोग तरह-तरह के रंग-रूप वाले मानव भी रहेंगे। इसलिए धीरे-धीरे हमारी सनातन संस्कृति ने सामासिक संस्कृति का रूप धारण कर लिया। आज हम जो भारतीय समाज देख रहे हैं, वह बहुरंगी समाज है, जिसमें तरह-तरह की जातियां, धर्म और मान्यताओं के साथ लोग मिल-जुल कर रहते हैं। इसलिए साहित्य का यह परम दायित्व है कि वह विवाद की जगह संवाद कायम करने की दिशा में आगे बढ़े। यह देश अब साझा संस्कृति के साथ चल रहा है। हिंदू संस्कृति इसका आदि स्रोत जरूर है लेकिन इस हिंदू संस्कृति में अब अनेक दूसरी संस्कृतियां भी समरस हो गई हैं। इस तरह यह हिंदू संस्कृति की जगह भारतीय संस्कृति के रूप में रूपांतरित हो गई है। साहित्य का दायित्व है कि वह साझा संस्कृति को पुष्टि-पल्लवित करने वाली रचनाओं की संस्कृति से जुड़ा रहे।

साहित्य का लक्ष्य

साहित्य की संस्कृति या उसके लक्ष्य की बात करें तो इसमें दो राय नहीं हो सकती कि साहित्य हमें आदमी से इंसान बनाने की तमीज सिखाता है। यह हमें सहिष्णुता के संस्कार देता है। यह हमें हिंसा के विरुद्ध



अहिंसा के लिए प्रेरित करता है। यह मनुष्य को करुणावान बनाने के लिए रचा जाता है। साहित्य हमें वीतरागी बनाता है। अनुरागी बनाता है। सभ्य बनाता है। शालीन बनाता है। हमारे जितने भी धर्म ग्रंथ हैं, जितनी भी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं, जब उनकी अंतरधारा से हम दो—चार होते हैं, तो उन सब में यही तत्व पाते हैं। किसी भी महान साहित्य में कभी अलगाववाद की गुंजाइश हो ही नहीं सकती। साहित्य न हमें भोगवाद सिखाता है और न विवाद सिखाता है। साहित्य मनुष्य को नर से नारायण बनाने की दिशा में किया गया एक शाश्वत और सारस्वत उपक्रम है। जो भी इस मूल अर्थ को समझेगा, उसका साहित्य दिशा—भ्रष्ट नहीं हो सकता। फिर चाहे वह कविता लिखे, कथा लिखे, व्यंग्य लिखे या कुछ भी लिखे, उसका लक्ष्य होगा सत्यम्—शिवम्—सुंदरम्।

बदलते मानदंड

साहित्य अगर बौद्धिक विलास नहीं है, तो वहां हमें विकृतियां नजर नहीं आएंगी। वहां हमें संस्कृति के नवाचार ही दृष्टिगोचर होंगे। लेकिन दुर्भाग्य से तथाकथित आधुनिकता ने हमारी प्राचीन अवधारणाओं को तार—तार करके रख दिया है। साहित्य लोक—मंगल की जगह लोक—विकृति की ओर तेजी के साथ बढ़ रहा है। इधर पिछले कुछ दशकों के साहित्य को हम देखें, तो पाएंगे कि छंद के बंध टूटे हैं, तो संस्कार देने वाली कहानियों के चरित्र में भी निरन्तर गिरावट आई है।

दुःख की बात है कि अब साहित्य का अर्थ स्वेच्छाचारिता से लगाया जाने लगा है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का फायदा उठाकर साहित्य को निरंतर पतित किया जा रहा है। इसलिए जब साहित्य या संस्कृति की बात होती है, तब हम सोचने पर विवश होते हैं और महान कवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां अनायास मुंह से निकल पड़ती हैं—

“हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।”

साहित्य का लक्ष्य क्या है? सिर्फ काला—पीला करना या कुछ ऐसा रचना जो उसके होने को सार्थक करे? आधुनिक कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता की एक पंक्ति है, “जो कुछ भी है, उससे बेहतर चाहिए, सारा कचरा साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए”। यही साहित्य का हेतु होना चाहिए कि जो कुछ भी है, उससे हम बेहतर कर सकें। बेहतर रच सकें। जैसे एक



मेहतर गंदगी को साफ करता है, उसी तरह से एक साहित्यकार भी समाज में व्याप्त गंदगी की सफाई करता है। एक तरह से वह बड़ा महत्वपूर्ण काम करता है। हम यह नहीं कह सकते कि मेहतर का काम छोटा है क्योंकि वह गंदगी साफ करता है। कई बार हम भ्रमवश कह देते हैं कि ‘कचरा वाला’ आया है, जबकि हमें कहना चाहिए कि हमारे दरवाजे पर ‘सफाई वाला’ आया है। जब साहित्य ‘कचरा वाला’ और ‘सफाई वाला’ के अंतर को समझा सकेगा, तब समझ लें कि साहित्य अपनी नई संस्कृति के साथ आबद्ध होकर गतिशील हो रहा है।

नया साहित्य अराजक विषयों को छूने के बजाय जाति प्रथा के संकुचन को खत्म करने की दिशा में रचा जाना चाहिए। ...और संस्कृति के नाम पर जितनी विकृतियां हैं, उनसे मुक्ति दिलाने की दिशा में भी प्रयास किये जाने चाहिए। जो हमारी श्रेष्ठ परंपराएँ हैं, उन्हें हम बचाकर रखें और जो कुरीतियां हैं, उनसे हम निरंतर दूर होते जाएं। जैसे जाति प्रथा, छुआछूत आदि। सती प्रथा से तो राजा राममोहन राय जैसे लोगों ने मुक्ति दिलाई, और फिर महात्मा गांधी जैसे

सुधारवादियों ने छुआछूत के विरुद्ध वैचारिक आंदोलन छेड़ा। और यह कार्य गांधीजी ने साहित्य के माध्यम से ही किया। उन्होंने एक अखबार का प्रकाशन ही शुरू कर दिया था, जिसका नाम उन्होंने रखा ‘हरिजन’। बाद में वह ‘हरिजन सेवक’ नाम से भी प्रकाशित होता रहा। इसमें निरंतर विमर्श इसी बात का होता रहा कि हमें समाज के पिछड़े, अछूत समझे जाने वाले व्यक्ति को साथ लेकर चलना है। गांधी ने स्त्रियों की उपेक्षा के विरुद्ध भी निरंतर प्रहार किया। कहने का अर्थ यह है कि साहित्य के मूल में मनुष्य को महान बनाने का भाव सन्निहित रहता है। हम लाख आधुनिक हो जाएं लेकिन मनुष्य की बुनियादी प्रवृत्तियां परिवर्तित नहीं होतीं। इसी प्रवृत्ति के परिमार्जन के लिए साहित्य का सृजन जरूरी है। यह सृजन अगर सकारात्मक हुआ तो समाज नैतिक मूल्य से आबद्ध रहेगा और अगर नकारात्मकता को बढ़ावा देने वाला होगा, तो समाज में विकृतियां पनपेंगी। इसलिए साहित्यकारों का युगीन दायित्व बढ़ जाता है। साहित्य की संस्कृति ही यही है।

लेखक साहित्य अकादेमी के पूर्व सदस्य तथा सम्प्रति छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रांतीय अध्यक्ष हैं। इन्होंने विभिन्न विधाओं में लगभग सौ पुस्तकें लिखी हैं। ये राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान सहित अनेक महत्वपूर्ण सम्मानों से विभूषित हो चुके हैं।





अविश्वास का नश्तर

■ एस. भाग्यम शर्मा ■

क

ई साल के बाद मैं अपने जिगरी दोस्त अक्षय से मिला। हमने हाथ मिलाया, गले मिले व एक—दूसरे की कुशलता पूछी। उससे बात करने पर पता चला कि परिवार, पत्नी, बच्चे, घर, वाहन, बैंक बैलेंस सभी में हम दोनों ही अच्छे हैं। मगर मैंने पाया कि मेरे मन में जो संतुष्टि है, वह उसमें नहीं है। इस पर मुझे जरा आश्चर्य हुआ।

मैं व अक्षय लंगोटिया यार थे। कहीं भी जाएं या आएं, हम साथ—साथ ही रहते थे। यहां तक कि पढ़ाई में भी हमारा यह साथ बरकरार रहता था। मैं फेल होता तो वह भी फेल होता या बॉर्डर पर पास होता। मगर हम चिंता नहीं करते।

हर कक्षा में दो साल तक अच्छी तरह से पढ़कर जब हम दसवीं में पहुंचे तो हम दोनों ही नवयुवक बन गए थे। हमारी दाढ़ी—मूँछें आ गई थीं।

“तुमसे ये बिगड़ा या तुम इसे बिगड़ते हो...तुम्हें कब अकल आएगी!” हम दोनों के ही घर वाले इन जुमलों से ही हमारी आवभगत करते थे। हम दोनों को

ही एक बार जब बहुत बुरा लगा तो हम घर छोड़ कर भाग गए।

“आएंगे तो विजय प्राप्त कर, नहीं तो वीर गति को प्राप्त होंगे।” ऐसा एक पत्र लिखकर निकल गए। दो—तीन शहरों में कई दिनों तक चक्कर काटे, कुछ नहीं हुआ तो कोटा गए। वहां की एक बड़ी कंपनी में बड़े से गेट से अंदर घुसे तो एक आदमी झुंझलाकर बोला—“जगह खाली नहीं है” लिखा है। फिर भी अंदर घुसे चले आते हैं। पढ़े—लिखे नहीं हो? अंधे हो क्या?”

मशीनों के साथ काम करते—करते लगता है ये भी मशीन हो गए हैं। हमने सोचा। भूख, गर्मी और पैरों में दर्द से परेशान, धूल से सने हम सड़क किनारे पेड़ के नीचे कुछ देर सुस्ताने बैठे। “हम वीर गति को तो प्राप्त नहीं होंगे, मगर लगता है हमारी मौत इसी गली में ही होगी।” अक्षय बोला।

“इस तरह निराश न हो, कोटा के अलावा क्या और कोई दूसरा शहर नहीं है....” मैं बेकार की शान बघारते हुए बोला।



“बच्चो ! तुम कौन हो? यहां क्या कर रहे हो?”
आश्वासन भरे ये शब्द सुनकर हम फटाक से उठे, “हम नौकरी की तलाश में यहां आए हैं साहब ! पर हमें कोई नौकरी नहीं दे रहा।” हाथ बांधे हुए हमने उनसे कहा।

“कहां तक पढ़े हो?” पूछा उन्होंने।

“दसवीं फेल हैं सर। परंतु सब कक्षाओं में दो-दो साल पढ़े हैं।” यह सच सुनकर वे जोर से खिलखिलाकर हँस दिए। “मेरे साथ आओ” कहकर वे हमें अपने साथ ले गए।

साधारण—सी लंबी—चौड़ी जमीन को चारों ओर कंटीले तारों से बंद कर रखा था। बीच में थोड़ी—सी जमीन पर दीवार बनाकर उस पर टिन शेड डाल रखा था। उस जगह कुछ लोग काम कर रहे थे। उनमें से एक आदमी को बुलाकर उन्होंने कहा, “इन लड़कों को काम सिखाओ। हां, मगर उससे पहले इन्हें खाने को कुछ दे दो।”

उस जगह से शुरू हुई हमारी जीवन—यात्रा और हम उत्तरोत्तर तरक्की करते चले गये। उस मालिक ने अपने खर्च से हमें तकनीकी ट्रेनिंग के लिए बाहर भेजा। वहां हमने बहुत कुछ सीखा। हम दोनों ने प्रतिज्ञा की कि उस सज्जन आदमी जिसने हमें ठौर दी और ट्रेनिंग दिलाई, उनके लिए ताजिंदगी काम करेंगे।

इसी दौरान हमारी शादी हो गई। बच्चे भी हो गये। गाड़ी, मकान सब कुछ हो गया। हम जिंदगी में सेटल हो गए। हमारी तरक्की के रहस्य से अनजान लोग अचरज करते कि ऐसा कैसे हुआ। हमने सबको बताया कि इसके पीछे हमारे मालिक ही हैं, वरना हम

कहीं के न होते। बड़े मजे से हमारी जिंदगी चल रही थी।

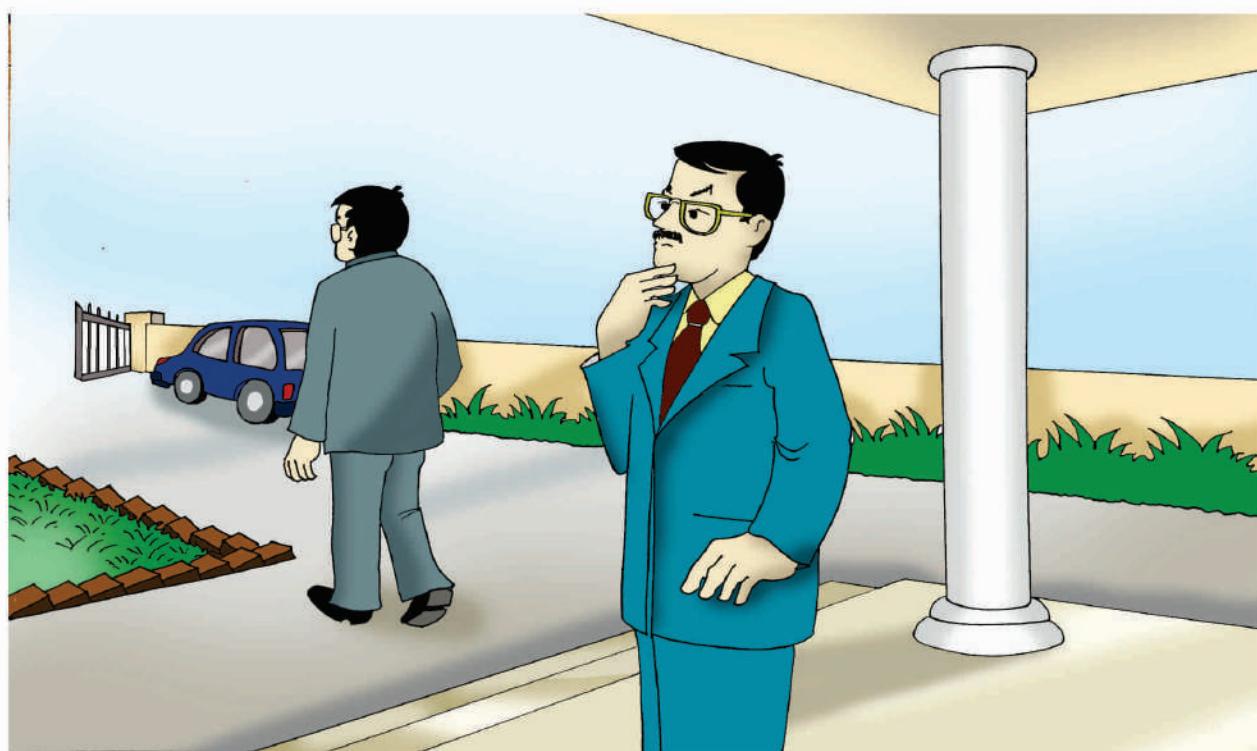
एक दिन अक्षय घर आया, बोला “तुम्हें कुछ जरूरी बात बतानी है। अपनी कंपनी का दिवाला निकलने वाला है। विदेशों के साथ किये कई अनुबंध अस्वीकृत होकर लौट आए हैं।”

मैंने पूछा, “अनुबंध हाथों से निकल जाने से क्या होगा ! तुम्हें किसने कहा ?”

“तुम्हें नहीं पता ! पूरी कंपनी में यही बातें हो रही हैं। कंपनी कभी भी बंद हो सकती है। गीता एंड कंपनी में दो जगह खाली हैं, वे बुला रहे हैं। अच्छी सैलरी, मकान, गाड़ी सब कुछ दे रहे हैं। मैंने एक जगह अपने लिए तय कर ली है। दूसरी तुम्हारे लिए सुरक्षित कर आया हूँ।” अक्षय बोला।

मैं उसकी बात सुन आश्चर्यचकित रह गया और बोला— “अक्षय, यह बात कोई दूसरा कहता तो मैं सहन कर लेता। मगर मुझे या तुझे ऐसी बात नहीं बोलनी चाहिए। सोचकर देख, उस समय उस आदमी ने हमें सहारा न दिया होता तो हमारी क्या गति होती? क्या आज हम जैसे हैं, ऐसे रह पाते? याद है तुम्हें, एक बार जब हमारे यहां से कुछ कर्मचारी काम छोड़कर गए तब उन्होंने क्या कहा था, “मेरे पास आर्यन व अक्षय हैं।”

“मुझे सब पता है। पर उस समय हम लोग अकेले थे। अब वैसा नहीं है। अब हमारे पास सारी सुविधाएं हैं व हमारे परिवार वाले भी इन सुख—सुविधाओं के आदी हो गए हैं। हमारे बच्चे बड़े कॉन्वेंट में पढ़ते हैं। हमारी पल्नियां टैक्सी करके बाजार जाती हैं। उन लोगों ने अपनी इच्छाओं व सपनों को बढ़ा लिया है। ऐसे मैं यदि



कंपनी के साथ कुछ ऐसा—वैसा हो गया और हमारी नौकरी पर आंच आई तो वे इस सदमे को सहन नहीं कर पाएंगे।”

“मूर्ख, अब अपनी कंपनी के बारे में फिर कभी ऐसी बात न बोलना। 50 साल पूरे कर गोल्डन जुबली मना चुकी अपनी कंपनी के बारे में कुछ उल्टी-सीधी जानकारी को लेकर हमें संदेह नहीं करना चाहिए। वह जो गीता एंड कंपनी है, अभी—अभी ही अस्तित्व में आई है। मुझे तो यह सब उनके द्वारा फैलाई गई झूठी खबर लग रही है। जल्दबाजी मत कर, हम अपने मालिक से बात करते हैं।” मैंने कहा।

अक्षय बोला, ‘वे क्या कहेंगे ! पहले उनकी कंपनी तो छोटी सी थी। सिर्फ आठ लोग ही काम करते थे। आज सैकड़ों लोग काम कर रहे हैं। पिछली बार उनसे मिलने गए थे तो उनके पीए ने अपॉइंटमेंट है क्या? कहकर हमें भगा दिया था।’

“अक्षय” !

“मैंने सोच लिया। बेकार की भावनाओं में बहने से फायदा नहीं। यहां ये हमारे विश्वास के लिए वेतन नहीं दे रहे हैं। हमारी मेहनत के ही बदले में दे रहे हैं। इतनी ही मेहनत पर अधिक वेतन मिल रहा है तो उस जगह जाना ही हमारे लिए उचित है। मैंने तो रेजिनेशन लेटर भी दे दिया। तुम्हारे लिए दो दिन ठहरूंगा। मित्र है इसलिए... इससे अधिक नहीं रुक सकता। इस जगह के लिए दूसरे आदमी की सिफारिश कर दूंगा।” अक्षय ने बिना किसी लाग—लपेट के कहा।

उसकी दो टूक बातों और कंपनी के प्रति बदले हुए व्यवहार के कारण पहुंचे सदमे से बाहर आने में मुझे कई घंटे लगे। कंपनी के हालात को सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर अक्षय के डराने के कारण का पता चला। इसके बाद काफी देर तक मैं सोच—विचार में डूबा रहा। आखिरकार सुबह मैंने मालिक से मिलने का फैसला किया। एक के बाद एक विदेशी कॉन्ट्रैक्ट रिजेक्ट होने की बात स्वीकार करते हुए वे बोले, “हां जी, हालात तो खराब ही हैं। लेकिन क्या हुआ? तुम सभी लोग हो न? संभाल लेंगे।” उन सभी लोगों में अक्षय के न होने के बारे में शायद उन्हें नहीं पता था।

आज वर्षा बाद जब अक्षय से मिलना हुआ तो नई—पुरानी बातों का सिलसिला चलता रहा। आपनी बात रखते हुए मैं बोला—‘उसके बाद जिंदगी में कई तरह के मोड़ आये। कंपनी के दिवालिया होने के डर से तुम भाग गए। पर कुछ ही दिनों में विदेशों से दूसरे बड़े कॉन्ट्रैक्ट मिलते ही कंपनी मजबूत होकर ऊपर उठ

सोचकर देख, उस समय
उस आदमी

ने हमें सहारा न दिया होता
तो हमारी क्या गति होती ?
क्या आज हम जैसे हैं,
ऐसे रह पाते ? याद है तुम्हें,
एक बार जब हमारे द्वारा से
कुछ कर्मचारी काम
छोड़कर गए तब
उन्होंने क्या कहा था,
“मेरे पास आर्यन व
अक्षय हैं।”

गई। वहीं, तुम जब नई कंपनी में गए तो तुम्हारा अच्छा स्वागत हुआ। मैंने सुना तुम्हारा वेतन बहुत ज्यादा है। मुझे बहुत खुशी हुई। हम दोनों के फैसले अपनी—अपनी जगह सही साबित हुए।”

“नहीं।” अक्षय ने मेरी बात काटते हुए कहा। इस पर मैंने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

अक्षय बोला, “पैसों की दृष्टि से देखो तो मेरा फैसला सही था, मैं जीता। पैसा, जिंदगी के लिए बहुत जरूरी है। मगर जैसे हमारी त्वचा के अंदर नाड़ियों में रक्त प्रवाह दौड़ता

रहता है, वैसे ही हम सभी के आपसी व्यवहार में एक भाव दौड़ता रहता है, जिसका नाम है विश्वास!... और मुझ पर इसी विश्वास के न होने के कारण ही उस कंपनी में सब मुझे दूर रखते हैं। जब मैंने वहां जॉड्स किया था, तब कंपनी के मालिक ने जो शब्द बोले उन्हें सुनकर मुझे लगा जैसे जूते मार रहे हैं। उन्होंने कहा था, ‘पंद्रह वर्ष तक जिसने आधार दिया, वहां एक समस्या आते ही आप उसे छोड़कर अलग हो गए। हमारी तो नई कंपनी है। हमें आपके अनुभव व ज्ञान से इसकी उन्नति के लिए मदद मिलेगी, ऐसा हमें विश्वास है। मगर यहां भी परेशानियां आ सकती हैं। उस संकट के समय आप हमें बिना छोड़े रहोगे क्या।’ यह सुनकर मुझे लगा धरती फट जाए और मैं उसमें समा जाऊँ।”

अक्षय आगे कहने लगा, “मझे पूर्ण स्वतंत्रता देने के बावजूद वे मुझ पर एक आँख रखते हैं। अविश्वास के अदृश्य नश्तर की नोक हमेशा जैसे मुझे छूती रहती है। उनका संदेह कब खत्म होगा और कब वे मुझ पर विश्वास करेंगे, पता नहीं। इस सोच ने मेरी नींद गायब कर रखी है। मैं इससे बहुत परेशान हूँ।”

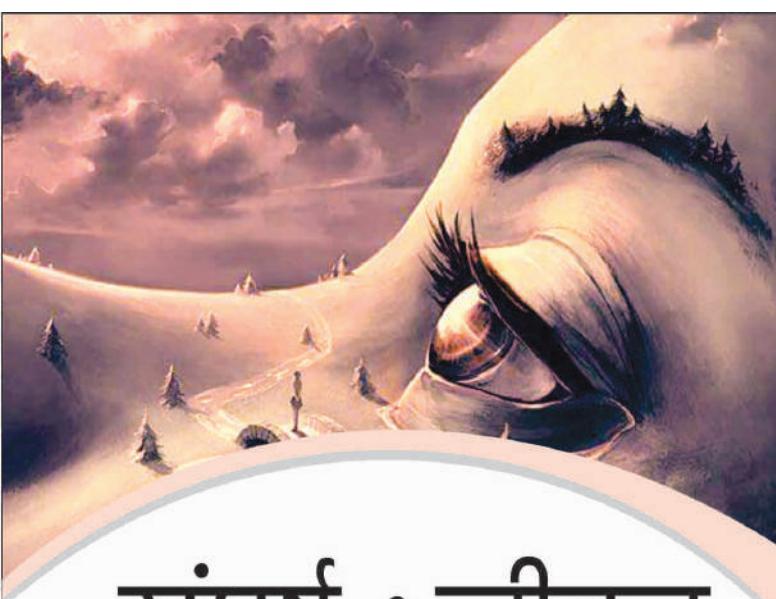
“छोड़ो... विश्वास को शब्दों से नहीं साबित कर सकते। अपने काम में ही दिखा सकते हैं। वे कुछ भी सोचते हों, तुम अपने काम में कमी मत रखो। समय के साथ सब सही हो जाएगा।” मैंने उसे दिलासा देने की कोशिश की।

“मैं भी यही सोचता हूँ।” कहकर वह विदा लेकर चला गया।

...और मैं दुःखी मन से उसकी समस्या के बारे में सोचते हुए वहीं खड़ा उसे जाते हुए देखता रहा।

दक्षिण भारतीय लेखिका जयपुर में रहती हैं। इन्होंने 10 तमिल उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया है तथा दो उपन्यास भी लिखे हैं।





संघर्ष : जीवन का एक हिस्सा

■ कीर्ति श्रीवास्तव ■

छहुत खूब कहा गया है— संघर्ष ही जीवन है। जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है या यूं कहें कि संघर्ष जीवन की कहानी का एक हिस्सा है। छोटे से छोटे व्यक्ति से लेकर बड़े से बड़े व्यक्ति के जीवन में संघर्ष की हिस्सेदारी रहती है और जिसने संघर्ष से घबराकर काम छोड़ दिया तो उसे ये मान लेना चाहिए कि वो जीवन में अब कुछ नहीं कर सकता। संघर्ष के बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं पाई जा सकती।

किसी ने कहा है, 'जब आप किसी समस्या या संघर्ष को छोड़ कर भागने लगते हैं, तो इससे आप कई नयी समस्याओं और संघर्षों को आमंत्रित करते हैं, और आप समाधान निकालने के बजाय, उसी में और गहरे फंसते चले जाते हैं।' कहा भी गया है कि 'समस्याएं वाशिंग मशीन की तरह होती हैं, वे हमें कपड़े की तरह घुमाती हैं, खंगालती हैं, और फिर बाद में सुखा देती हैं, लेकिन जब हम बाहर आते हैं तो साफ, सुंदर और हर प्रकार की गंदगी से मुक्त होते हैं।'

इसी संबंध में पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा है— 'हमारे जीवन में समस्याओं का आना अति आवश्यक है, अन्यथा हम सफलता का सही स्वाद नहीं ले पायेंगे।'

सफल व्यक्ति की ओर सभी आकर्षित होते हैं किंतु उसके संघर्ष को नजरअंदाज कर देते हैं। उस सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते वक्त उसने कितना संघर्ष किया है, उसका अंदाजा लगाना भी नहीं चाहते। हम जिन व्यक्तियों को सफलता की ऊँचाइयों पर देखते हैं, उनका भूतकाल अगर हम देखेंगे तो हमें जानने को मिलेगा कि उन्हें यह सफलता बहुत संघर्ष से प्राप्त हुई है।

एवरेस्ट की चढ़ाई की सफलता पाने का गौरव हासिल करने वाली पहली महिला जुंको ताबेर्झ का कहना है — 'दुनिया के विभिन्न मंचों पर सम्मानित होना अच्छा लगता है, लेकिन यह अच्छा लगना उस अच्छा लगने की तुलना में बहुत कम है, जिसकी अनुभूति मुझे एवरेस्ट पर कदम रखने के समय हुई थी, जबकि वहां तालियाँ बजाने वाला कोई नहीं था। उस समय कंपकंपाती बर्फीली हवा, कदम—कदम पर मौत की आहट, लड़खड़ाते कदम और फूलती साँसों से संघर्ष के बाद जब मैं एवरेस्ट पर पहुंची तो यही लगा कि मैं दुनिया की सबसे खुशनसीब इंसान हूँ।'

नेपोलियन बोनापार्ट जो फ्रांस के एक निडर और साहसी शासक थे, उनके जीवन में असंभव नाम का कोई शब्द नहीं था। इतिहास में नेपोलियन को विश्व के सबसे महान और अजेय सेनापतियों में से एक गिना जाता है। नेपोलियन अक्सर जोखिम भरे काम किया करते थे।

एक बार उन्होंने एल्प्स पर्वत को पार करने का एलान किया और अपनी सेना के साथ चल पड़े। सामने एक विशाल और गगनचुम्बी पहाड़ खड़ा था जिसपर चढ़ाई करना असंभव था। उनकी सेना में अचानक हलचल की स्थिति पैदा हो गई। फिर भी उन्होंने अपनी सेना को चढ़ाई का आदेश दिया। पास में ही एक बुजुर्ग औरत खड़ी थी। उसने जैसे ही यह सुना, वो नेपोलियन के पास आकर बोली, 'क्यों मरना चाहते हो। यहां जितने भी लोग आये वो मुंह की खाकर यहीं रह गये। अगर अपनी जिंदगी से प्यार है तो वापस चले जाओ।'

उस औरत की बात सुनकर नेपोलियन नाराज होने के बजाय प्रेरित हो गये और झट से हीरों का हार उतारकर उस बुजुर्ग महिला को पहना दिया और फिर बोले, 'आपने मेरा उत्साह दोगुना कर दिया और मुझे प्रेरित किया है। अगर मैं जिंदा बचा तो आप मेरी जय—जयकार करना।' उस औरत ने नेपोलियन की बात सुनकर कहा— 'तुम पहले इंसान हो जो मेरी बात सुनकर हताश और निराश नहीं हुए।' जो करने या मरने और मुसीबतों का सामना करने का इरादा रखते हैं, वे लोग कभी नहीं हारते। नेपोलियन ने दुनिया को यह कर के दिखाया।

सच तो यह है कि यदि संघर्ष को अपना अच्छा साथी बना लिया जाए तो कठिन डगर भी फूलों भरी राह लगती है। किन्तु यदि संघर्ष को एक बोझ की तरह अपनाएंगे तो मार्ग बड़ा ही बोझिल—सा प्रतीत होगा। संघर्ष करने पर ही हम अपनी काबिलियत जान पाएंगे। संघर्ष का सामना पूरे आत्मविश्वास के साथ कर मजिल हासिल करना किसी एवरेस्ट पर पहुंचने से कम नहीं है।

लेखिका साहित्यकार और टिप्पणीकार हैं। बाल साहित्य एवं प्रौढ़ साहित्य में अब तक 7 पुस्तकें प्रकाशित। प्रतिष्ठित संस्थाओं की ओर से दो दर्जन से अधिक राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक सम्मान मिल चुके हैं।





सत्य ही सुंदर है...

■ परिचय दास ■

इस दुनिया में कुछ ऐसे लोग हैं जो दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए झूठ बोलते हैं। वहीं ऐसे अन्य लोग भी हैं जो आदतन झूठ बोलते हैं। वे सत्य को बताने में असमर्थ या अनिच्छुक होते हैं। लोग जब सच्चाई को बताने की पूरी कोशिश करते हैं तो झूठ बोलना मुश्किल हो जाता है, लेकिन ऐसा करना तब खत्म होता है जब परिस्थितियाँ इसकी मांग करने लगती हैं – जब उन्हें अपनी छवि बिगड़ने या खुद को सजा से बचाने की जरूरत होती है। आमतौर पर जब हम झूठ बोलते हैं तो हम अपने आप को अतिरंजित शब्दों में देखना शुरू करते हैं और हम झूठ को उतना ही बड़ा देखना शुरू करते हैं जितना वास्तव में नहीं है।

जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से झूठ बोलता है तो निश्चय ही वह कुछ छिपा रहा होता है और दूसरा किसी भी रिश्ते के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक पर भरोसा खो देता है। जो व्यक्ति झूठ बोल रहा है, वह बेर्मानी और संदेह ला रहा है यानी उसके रिश्ते में डर है। झूठा अपने झूठ को अधिक झूठ के साथ कवर करने की कोशिश करता है। झूठ बोले जा रहा व्यक्ति आमतौर पर दूसरे का भरोसा जीतना चाहता है लेकिन जानता है कि वह विश्वास के लायक नहीं है। यह एक दुष्क्रिया है, जहां सच कहने के अलावा कोई दूसरी राह नहीं है। बहुत शुरुआत से सच बताना बेहतर है, भले ही परिणाम सभी सकारात्मक न हों। लेकिन उन कार्यों

पर निर्णय लेने की कोशिश की जानी चाहिए जो उस स्थिति में नहीं डालेंगे जिसमें भविष्य में किसी से झूठ बोलना होगा। सच कहना व्यापक रूप से सम्मानजनक और न्यायसंगत है। और ऐसे में अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने का कोई डर नहीं होता।

जो सच या अच्छा नहीं है वह वास्तव में कभी सुंदर नहीं हो सकता है, हालांकि इसमें सतही आर्कषण हो सकता है। सत्य और असत्य ऐसे गुण हैं जो हमारे हाथों के काम के साथ–साथ हमारे होठों के शब्दों से भी संबंधित हैं और अक्सर शब्दों की तुलना में आंखों से भी प्रकट होते हैं। वे हमारे पूरे व्यक्तित्व द्वारा, हमारे चित्रित द्वारा, हमारे आचरण के माध्यम से और बातचीत द्वारा व्यक्त किए जाते हैं। महान् सत्य अक्सर कला के कामों द्वारा संप्रेषित होते हैं : साहित्य, मूर्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला, फिल्में या मानव द्वारा समझे जाने वाले अन्य प्रभावी मीडिया।

हर चित्र की सुंदरता सच्चाई की डिग्री और उसमें चित्रित ईमानदारी पर निर्भर करती है। एक कलाकार जो अपने दिल और आत्मा को अपने काम में लगाता है तथा रंग, विषय और समर्पण के सच्चे स्वर को लागू करता है, कला के एक सुंदर टुकड़ा का उत्पादन करने में सक्षम है। आम घरों या सार्वजनिक भवनों के मामले में, एक लालची ठेकेदार घटिया ईंटें और अधोमानक निर्माण सामग्री का उपयोग करके राज्य को धोखा दे



सकता है, या वह इमारत के गुणों के संबंध में झूठ बोल सकता है। उसकी बेईमानी, उसकी झूठ और जिद एक ऐसी इमारत नहीं बना सकती जो समय या सच्चाई की कसौटी पर खरी उतरे। इसकी सुंदरता, यदि कोई हो भी तो क्षणिक और कृत्रिम होगी।

वास्तव में, कला और विज्ञान की तरह, सौंदर्य और सच्चाई, एक तरह का सामान्य रूप है, जिसमें प्रत्येक बाकी की सेवा करता है और बदले में उनके द्वारा सेवा की जाती है। जैसा कि हम जानते हैं कि सभी ज्ञान एक सर्व-व्यापक और अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। सत्य एक सुंदर संचालन है, एक गतिशील चीज जो व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भ में अपना लाभकारी कार्य करती है। दूसरी ओर, झूठ एक आक्रामक ऑपरेशन है जो एक आदमी द्वारा दूसरे पर किया जाता है।

जो कुछ सत्य हो सकता है, उसके मूल्यवान होने में कोई संदेह नहीं है, न केवल इस अर्थ में कि यह देखने में अच्छा है, बल्कि यह उन लोगों के लिए भी अच्छा है जो इसे देखते हैं, इसे जानते हैं और इस पर कार्य करते हैं। एक निष्ठिय सुंदरता एक बेकार सच्चाई से अधिक बोधगम्य नहीं है। सत्य की तरह, सौंदर्य गतिशील और महत्वपूर्ण है। सौंदर्य सत्य है, सत्य सौंदर्य, यह रचनात्मक कलाओं में निहित सुंदरता से सबसे अधिक सचित्र है। सच्चाई जब कला के एक टुकड़े, एक कविता, एक संगीत, गीत या एक प्रतीकात्मक नृत्य में चित्रित की जाती है, तो वह एक सुंदरता का प्रतीक बन जाती है। चित्र या एक प्रतीकात्मक नृत्य, एक सौंदर्य बन जाता है। संगीत अन्य कलाओं की तुलना में रूप और सौंदर्य की दृष्टि से और भी अधिक शक्तिशाली है, क्योंकि यह सद्भाव की सही अभिव्यक्ति प्रकट करता है, और दर्शकों को एक नए सौंदर्य बोध के लिए प्रेरित करता है। पेंटिंग और मूर्तिकला का महत्व भी शायद ही कम हो।

समाज ने सत्य शब्द के लिए एक सकारात्मक अर्थ और शब्द झूठ के लिए एक नकारात्मक अर्थ संलग्न किया है। इसी तरह, समाज झूठ बोलने के बजाय मूल्य को बताने की कोशिश करता है, जबकि सच कहने पर भी ऐसा करने वाले व्यक्ति के लिए फायदेमंद नहीं हो सकता है। समग्र रूप से, समाज को परिणामों की परवाह किए बिना, सत्य के लिए प्रयास करने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

लेखक भोजपुरी एवं हिंदी के महत्वपूर्ण निबंधकार, आलोचक, कवि, सम्पादक, संस्कृतिकर्मी तथा नव नालंदा महाविहार सम विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हैं।

जिंदगी है कितनी मजबूर सी

■ डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ■

हिंदी और मैथिली के प्रतिष्ठित कवि—साहित्यकार

सङ्कें लाती हैं विकास, पर रोटी देता खेत है
बिना खेत के महल—अटारी धूप चमकती रेत है।

झूठी शानो—शौकत लेकर साहब बड़े तबाह हैं
कोरोना की एक डोज में रंक हुए हर शाह हैं।

जिनके पांव नहीं पड़ते थे कभी जमीं पर भूल से
उनकी पीठ कहे, कैसे पड़ती कुदरत की बैत है।

मुझी भर की आवश्यकता चुटकी भर सिंदूर—सी
इतने भर के लिए जिंदगी कितनी है मजबूर—सी।

पेट अकेला नहीं, बीच में नाभि, चेतना की वापी
जीवन की पहली सूची में रोटी वसन समेत है।

घर बैठो, घरवालों के संग बातें कर लो प्यार से
प्रीति लगा लो चाहे जितनी निभती है दो—चार से।

उड़ लो नभ में किंतु करोगे रैन बरसेरा डाल पर
मन की शांति और अपनापन देता यही निकेत है।



पत्रकारिता का बदलता स्वरूप और पत्रकारों की भूमिका

■ राजेंद्र बोडा ■

पत्रकारिता क्या है? क्यों कोई पत्रकारिता को अपना पेशा चुनता है? जब भी मुझे पत्रकारिता के छात्रों से बात करने का मौका मिलता है, मैं उनसे बड़ी उत्सुकता से जानना चाहता हूं कि वे क्या सोच कर पत्रकारिता को अपना कॅरियर बनाना चाहते हैं। अधिकतर एक ही जवाब मिलता है कि वे कुछ करना चाहते हैं। किसके लिए? समाज के लिए। उस समाज के लिए जिसमें अभी अन्याय, जाति, धर्म, पद और धन का भेदभाव, गरीबी, अशिक्षा, बीमारियां, कुपोषण व्याप्त हैं। नौजवान पीढ़ी जो पत्रकारिता को अपना पेशा चुन रही है, वह समाज को इन व्याधियों से बाहर लाने के लिए अपना यत्किंचित योगदान देना चाहती है। पत्रकारों की नई पीढ़ी आम जन को वैसी सूचना देकर शिक्षित करना चाहती है जिससे वे लोकतान्त्रिक व्यवस्था में अपनी भूमिका निभा सके। इसीलिए पत्रकारिता अब भी एक बहुत ही गौरवपूर्ण पेशा बनी हुई है।

अब यह सवाल भी वाजिब है कि किसी पत्रकार की सफलता या असफलता हम किस पैमाने से नापेंगे? किसी संस्थान में लगातार तरकी की पायदान चढ़ जाना और हर किसी को ईर्ष्या हो जाने वाला वेतन पा लेना या सरकारी अथवा निजी क्षेत्र में कोई बड़ा पद पा लेना? सच तो यह है कि किसी पत्रकार की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसने

किस हद तक इस दुनिया को बेहतर समझने में और उस दुनिया में उसे अपनी स्थिति को समझने में आम जन की मदद की। आम जन की समझ बढ़ना इसलिए जरूरी है क्योंकि आम जन ही सारे सामाजिक बदलाव लाते हैं। इसलिए पत्रकारिता की जरूरत है कि वह आम जन को अपने जीवन को बेहतर तरीके से समझने के लिए समर्थ बनाती है।

लेकिन क्या हम किसी आदर्श मीडिया की बात कर सकते हैं? दुनिया भर में वैज्ञानिकों और मीडिया के पंडितों ने एक लोकतान्त्रिक समाज में मीडिया के आदर्श स्वरूप के बारे में अलग-अलग विचार दिये हैं। मगर इस सवाल के पहले यह सवाल भी आता है लोकतन्त्र का आदर्श स्वरूप क्या हो? लोकतन्त्र दो प्रकार का बताया जाता है। एक होता है प्रतिनिधिक लोकतन्त्र। इसमें लोक अपने नुमाइंदे चुनकर उन पर सब कुछ छोड़ देता है और राजकाज में खुद की भूमिका को निष्क्रिय बनाए रखता है। दूसरा होता है सहभागी लोकतन्त्र। इसमें राजनैतिक रूप से समर्थ और जानकार 'नागरिक' होता है। सहभागी लोकतन्त्र में पत्रकार और पत्रकारिता 'नागरिक' को समर्थ और जानकार बनाते हैं। इसलिए यह भी कहा जाता है कि पत्रकार सहभागी लोकतन्त्र में जनता और नीति निर्धारक-विशिष्ट वर्ग के बीच मध्यस्थ होता है और उनके बीच कड़ी की भूमिका निभाता है।



पत्रकारिता अपनी तरह का अलग ही पेशा है जिसकी बराबरी का समाज में और कोई पेशा नहीं है। इसीलिए एक आदर्श पत्रकारिता की बात की जाती है। इसमें प्रेस की स्वतंत्रता का आदर्श भी निहित है।

पिंकसिटी प्रेस क्लब के मंच पर एक बार राजस्थान में आधुनिक पत्रकारिता के पितामह कर्पूर चंद कुलिश ने कहा था—“अखबार आम आदमी की मूलभूत जरूरत नहीं है। उस तरह की मूलभूत जरूरत – जैसी रोटी, कपड़ा और मकान की होती है।” मैंने उनसे इस वक्तव्य का प्रतिकार किया था। मेरा कहना था कि लोकतन्त्र में राज्य और शासन की आर्थिक और अन्य नीतियां हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं। ये नीतियां आम जन की इन मूलभूत जरूरतों रोटी, कपड़ा और मकान—एक गरिमापूर्ण स्वस्थ जीवन को हासिल करने की वाहक होती हैं। और लोकतन्त्रिक राज में उसकी नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में आम जन की भागीदारी पहली शर्त होती है। पत्रकारिता यह भागीदारी करने के लिए आम जन को सक्षम बनाती है। जनता में यह सक्षमता आए बिना उसकी मूलभूत जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। इसलिए आम जन के लिए इन जरूरतों से भी अधिक जरूरत अखबार की होती है जिससे वह राज से अपनी जरूरतें पूरी करवा सके। इसीलिए पत्रकारिता अनेक बार आम जन की पैरोकार बन कर खड़ी होती है तो कभी शासन के फैसलों का प्रतिकार करती है।

अब बात करें पत्रकारिता में आए बदलाव की। पत्रकारिता में आए बदलाव को समझने लिए हमें बदले हुए जमाने को समझना होगा। यह कहना कि जमाना बदल गया केवल पुरानी पीढ़ी का शोक—गीत नहीं है। यह वक्त की सच्चाई है। हमें यह समझना होगा कि जो हुआ वह क्यों हुआ और कैसे हुआ। जो हुआ वह तो हमारे सामने है। आजादी के बाद लोगों के सपनों का नया निजाम नहीं आया। नई निराशा जरूर आई। ‘सम्पूर्ण क्रान्ति’ का सपना ध्वस्त हो गया। इसके साथ ही सहभागी लोकतन्त्र का रास्ता भी भूल—भुलैया में खो गया। पिछली सदी के आठवें दशक से राजनीति, जो पहले लोक कल्याण के लिए होती थी, वह सिर्फ सत्ता पाने और वहां बने रहने के लिए होने लगी। आदर्शों के लिए नहीं, सत्ता में जाकर अपने और अपनों के लिए घर भरने की राजनीति सभी को अपनी गिरफत में लेने लगी। साथ ही नई आर्थिक नीतियों और अर्थव्यवस्था में सुधार के नाम पर पूँजीवाद की राह पकड़ ली गई।

इसी दौर में अखबारी संस्थानों के संचालकों की नई पीढ़ी परिदृश्य पर उभरी जो नए जमाने के रंग में रंगी थी और जिसे नई आर्थिक नीतियों ने खूब लुभाया। पैसे की ताकत का उपयोग करके संचार

माध्यम को मुनाफे और केवल मुनाफे के लिए बना दिया। नई अर्थ व्यवस्था में समाचार पत्र उत्पाद हो गए। किसी भी उत्पाद को ग्राहकों के लिए आकर्षक बनाना ही पड़ता है। इसके साथ ही समाचार संस्थानों का काम बाजार के लिए ग्राहकों की भीड़ जुटाना होता है जिसे विज्ञापनदाता लक्ष्य कर सकें। वास्तविकता तो यह है कि इस व्यवस्था में समाचार संस्थानों के पाठक या दर्शक किन्हीं उत्पादों के ग्राहक ही नहीं होते बल्कि वे स्वयं भी उत्पाद होते हैं जिन्हें समाचार संस्थान विज्ञापनदाताओं को बेचते हैं। इस व्यवस्था का समूचा ढांचा और व्यावसायिक तर्क समाचार पत्रों या संस्थानों की विविधता को संकुचित करता है। यह व्यवस्था पत्रकारिता को वह काम नहीं करने देती जो उसका असली उद्देश्य है।

कभी कहा जाता था कि अखबार का काम सताये लोगों को राहत देना और सुविधाभोगियों को सताना होता है। परंतु आज की वास्तविकता तो यह है कि मुख्यधारा के समाचार माध्यमों के कर्मी आम लोगों से अलग—थलग पड़े हैं, उनसे अनासक्त हैं, असम्बद्ध हैं और सबसे बढ़ कर मगरूर हैं।

लेखक करीब 50 वर्ष से पत्रकार के रूप में संचार के सभी माध्यमों में सक्रिय रहे हैं। विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा कला जगत में वे विशेष रुचि रखते हैं।



परिचर्चा

पर्यावरण संरक्षण विश्व पट्टल पर भारत की स्थिति : चुनौतियां और समाधान

- ॐ प्रकृति में प्राणी के अस्तित्व के लिए पर्यावरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसके स्वच्छ होने पर ही धरती पर मंगल की कामना की जा सकती है। मगर अफसोस, विकास के नाम पर पर्यावरण के असीमित दोहन ने प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न कर दी हैं। सारा विश्व इस समस्या का सामना कर रहा है।
- ॐ इसे देखते हुए हमने “पर्यावरण संरक्षण : विश्व पट्टल पर भारत की स्थिति : चुनौतियां और समाधान” विषयक परिचर्चा आयोजित की थी। प्राप्त विचारों को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।
- ॐ अगले अंक के लिए परिचर्चा का विषय है – कोरोना की दूसरी लहर : दोषी कौन?
- ॐ आप अपने विचार **15 जुलाई** तक अधिकतम 200 शब्दों में 9116634512 पर छाट्सएप कर सकते हैं। चयनित विचार अगस्त अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रकृति से प्यार करना सीखें

तथाकथित विकास के नाम पर हमने पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचाया है। हमारी पवित्र जीवनदायिनी नदियां प्रदूषित हुई हैं क्योंकि नदियों के आसपास अनेक कल-कारखाने खोले गए, जिनका प्रदूषित पानी नदियों में मिल कर उसे विषेला करता रहा। जब तक हमारी नदियां निर्मल नहीं होंगी, पर्यावरण शुद्ध नहीं होगा। अगर देश का संतुलित विकास करना है तो हम जंगल बचाएं। पेड़ों की रक्षा करें। जंगल बचेंगे तो वहां रहने वाले जीव-जंतु भी बचेंगे। वहीं, पर्वतों पर जब विकास के नाम पर कोई बड़ी परियोजना तैयार होने लगती है तो उसके दूरगामी दुष्परिणाम भी सामने आते हैं। उत्तराखण्ड की घटना हमारे सामने मौजूद है। बेशक भारत के सामने पर्यावरण संरक्षण एक चुनौती है लेकिन समाधान यही है कि हम प्रकृति से प्यार करना सीखें, उसे अधिक से अधिक संरक्षित करें।

—डॉ. मंजुला उपाध्याय, रायपुर

जंगल व पेड़ बचाना हमारा कर्तव्य

भारत में प्राचीन काल से ही लोग पर्यावरणीय तत्वों को ईश्वरीय रूप मानकर पूजते आ रहे हैं। वृक्ष, नदी, वायु, पशु-पक्षी ही नहीं, पर्वत और पत्थर को भी देव स्वरूप माना और पूजा जाता है। पिछले कुछ दशकों में उपयोगी जंगल काट दिए गए हैं। इससे वातावरण में भारी मात्रा में कार्बन और अन्य हानिकारक तत्व बढ़ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन भी तेजी से हो रहा है। एक वृक्ष को 10 पुत्रों के समान माना गया है। जंगल व पेड़ बचाना हमारे लिए जरूरी ही नहीं, हमारा कर्तव्य भी है। जंगल के बचने से वन्य-जीवों के साथ हमारा अस्तित्व भी बच पाएगा।

—विजय जी. खत्री, डीसा, गुजरात





स्वस्थ एवं निरोग जीवन हेतु बचाएं पर्यावरण
धुआं उगलते वाहन, कटते वृक्ष, उजड़ते वन, सिकुड़ता पर्वत, नदियों का प्रदूषित होता जल, कचरे का बढ़ता ढेर पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या उत्पन्न कर रहे हैं। हमारे देश में प्राचीन समय से ही पर्यावरण को बहुत महत्व दिया गया है। नदियों को माता के समान तथा पीपल, तुलसी, बरगद में देवता का निवास माना गया है। पशुओं में गाय को माता माना गया। मोर, गरुड़, शेर भगवान के वाहन माने गए। आज लालच के चलते मनुष्य ने प्रकृति को अत्यधिक निचोड़ा। इसके दुष्परिणाम सामने हैं। ऐसे में पर्यावरण को बचाने के लिए प्रकृति के सीमित उपभोग के सिद्धांत को अपनाना होगा। अहिंसा, शाकाहारी जीवनशैली पर्यावरण संरक्षण के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

—राजेंद्र प्रसाद जोशी, मेड़ता सिटी

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़—पौधे धरती के आभूषण हैं। अतः इनकी रक्षा करना हम सभी का परम धर्म है। पेड़—पौधे ही नहीं होंगे तो हमें शुद्ध हवा कहां से मिलेगी। आज इंसान अपने स्वार्थ की खातिर एवं विकास के नाम पर हरे—भरे पेड़ों की कटाई कर रहा है और जंगल के जंगल काट कर बहुमंजिली इमारतें खड़ी कर रहा है। इसके फलस्वरूप जलवायु में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इसका असर तेज धूप, मानसून में देरी, अनियमित वर्षा, फसल की पैदावार में कमी और नई—नई बीमारियों का सामने आना है। इससे बचने के लिए पेड़ लगाने होंगे और उनकी देखरेख करनी होगी। पेड़ लगाओ और जीवन बचाओ कार्य केवल सरकार का ही नहीं है, अपितु हमारा भी दायित्व है।

—सुनील कुमार माथुर, जोधपुर

फलों के बीज कचरे में न फेंकें

पर्यावरण प्रदूषण के कारण समस्त प्राणियों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। ऋतुएं आपस में गड्ढमड्ढ हो गई हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम अपने घर और विद्यालय, आसपास के सामुदायिक स्थानों पर अधिकाधिक पेड़—पौधे लगाएं। उन्हें पानी दें और उनकी देखभाल करें। आम, बेर, जामुन व अन्य फलों के बीज कचरे में फेंकने के बजाय रख लें। मिट्टी को पानी से गीला कर उसमें उन सूखे बीजों को डालकर छोटी—छोटी गेंद जैसी बना लें और इन्हें सुखाकर रख लें। जब कभी बाहर धूमने जाना हो तो रास्ते में सड़क किनारे जहां मिट्टी वाली खाली जगह दिखाई दे, वहां वे गेंद बिखेर दें। वर्षा आने पर ये अंकुरित होकर वृक्ष का रूप धारण कर लेंगे।

—डॉ. चेतना उपाध्याय, अजमेर

पेड़—पौधों से बढ़ाना होगा आत्मीय प्रेम

यजुर्वेद में प्रार्थना है— पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृण्याम शरदः शतं प्रब्रावाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् । अर्थात् परमेश्वर ऐसी कृपा करें कि हम सौ या उससे भी अधिक वर्षों तक नेत्रों से भली—भांति देखते हुए, कानों से सुनते हुए, पढ़ते व उपदेश करते हुए दीनता—रहित अवस्था में जीएं। वास्तव में यह तभी संभव है जब पर्यावरण पूर्णतया प्रदूषण रहित हो। इसके लिए हमें पेड़—पौधों से आत्मीय प्रेम बढ़ाना होगा। वन्य प्राणियों का बलपूर्वक विनाश रोकना होगा। भूमि और जल का बचाव करना होगा। हवा में फैलते प्रदूषण को रोकना होगा। वन संस्कृति को जीवित करना होगा। धरती को गरम होने से बचाना होगा।

—गोवर्धन यादव, छिन्दवाड़ा

हरियाली बढ़ाने की योजना बने

पर्यावरण संरक्षण सुचारू न होने से स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। तापमान बढ़ने की गति तीव्र—से—तीव्रतम होती जा रही है, जिससे सूखे और बाढ़ के खतरे प्रबल हो सकते हैं। शहरों में पेड़ों का कटान तेजी से बढ़ रहा है और कंक्रीट के जंगल पनप रहे हैं। शहरों में रहने वालों को शुद्ध हवा और पानी भी उचित मात्रा में नहीं मिल पा रहा है, जिसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। ऐसे में वायु की गुणवत्ता को उम्दा रखने की कवायद शुरू कर देनी चाहिए। हरियाली बढ़ाने की योजना हर स्तर पर बननी चाहिए।

—गुडविन मसीह, बरेली

पर्यावरण के प्रति सजग होना होगा

कोरोना के पश्चात विश्व की दूसरी गंभीर समस्या है प्रदूषण। कोरोना हम पर सीधा आक्रमण कर रहा है, इसलिए हम सब इसके प्रति सजग हैं, परंतु पर्यावरण



के प्रति हम अब भी सजग नहीं हैं। प्रदूषित वातावरण का सबसे बड़ा कारण है कि मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों का असीमित दोहन आरंभ कर दिया है। पॉलिथीन पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन है, हमें पॉलिथीन का प्रयोग बिल्कुल बंद करना होगा। इसी व फ्रिज का प्रयोग संयमपूर्वक करना होगा। अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे। फसलों पर पेस्टीसाइड का प्रयोग बंद करके नीम इत्यादि का छिड़काव करना होगा तभी पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

—उषा जैन, टोहाना

जो सुख चाहे जीव को, आपों—आप संभाल
प्रकृति बड़ी सुंदर है, उससे भी ज्यादा सुंदर होती है मनुष्य की प्रकृति यानी स्वभाव। यही जीवन और पर्यावरण के सरोकारों को समझने का रास्ता तय करता है। आज विश्व के सर्वाधिक तनावग्रस्त बीस शहरों में भारत के भी चार शहर शामिल हैं। सरासर क्लाइमेट इमरजेंसी का सामना करते हुए भी हम 'प्लास्टिक मुक्त भारत' का सपना देख रहे हैं। पर ऐसे में हमारा हितैषी कौन होगा? गांधीजी एक सदी पहले इस संकट को भाँप चुके थे। एक बहुश्रुत लोकोक्ति याद आती है— खेती, पाती, बीनती, अर खुद अंग खुजाल। जो सुख चाहे जीव को, आपों—आप संभाल। भाव यह कि खेती—किसानी, चिट्ठी—पत्री, भाव—भजन और खुजली के मामले में स्वयं का हस्तक्षेप जरूरी है। हमें ही चेतना होगा, इच्छाएं—आवश्यकताएँ कम करते हुए स्वयं समाधान खोजने होंगे।

— बी. पी. गौतम, कोटा

पर्यावरण—संरक्षण हमारा सर्वोपरि धर्म

वर्तमान में विश्व में अनेक विकृतियां उत्पन्न हो रही हैं। इसका मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण है। वसुंधरा अपने व्युत्पत्ति काल से लंबे समय तक पर्यावरण की दृष्टि से पूर्णतः परिशुद्ध रही, लेकिन सभ्य मानव ने धीरे—धीरे पर्यावरण को प्रदूषित करके स्वयं को कठिनाइयों में डाल लिया है। जीवित वनस्पति अत्यंत संवेदनशील है। यदि पर्यावरण शुद्ध रहे तो हरीतिमा—वृद्धि, पुष्प—फल एवं अन्नादि की श्रीवृद्धि होगी तथा खाद्य—पदार्थ और भी बलवर्धक एवं स्वादिष्ट होंगे। अतः पर्यावरण—संरक्षण हमारा सर्वोपरि धर्म है।

—डॉ. शेषपालसिंह 'शेष', आगरा

मानव हित के बारे में सोचें सभी देश

हमारी संस्कृति और परंपरा अनादि काल से ही वृक्षों को प्राणवान मानती रही है। फिर भी हम वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करते रहे। हर वह काम किया, जिससे

पर्यावरण को क्षति पहुंचे। आज अकेला कोरोना वायरस पूरी मानवता को चुनौती दे रहा है। आवश्यकता है विश्व के सभी देश आपसी रंजिश को भुलाकर मानव हित के बारे में सोचें और पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाएं। पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी योजनाओं को अमली जामा पहनाएं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि यदि हम अब भी नहीं चेते तो प्रकृति खुद को संतुलित करना जानती है।

—मीरा सिंह "मीरा", डुमरांव

प्रकृति की पूजा हमारी संस्कृति

हम हर त्योहार में किसी न किसी रूप में प्रकृति की पूजा करते हैं, चाहे वह पेड़—पौधे हों, जल हो, वायु हो, सूर्य हो या चंद्र। यह हमारी संस्कृति है, परंपरा है। आज प्रदूषण के कारण समस्त धरती दूषित हो रही है। नई—नई बीमारियों का प्रकोप इसका ही परिणाम है। हमें चाहिए पर्यावरण के अनुकूल आवासों का निर्माण करें, मोटर वाहनों के बदले अधिक से अधिक साइकिल का उपयोग करें। साथ ही हर विशेष दिन पर पेड़—पौधे लगाकर उनका संरक्षण करें। उपहार के तौर पर भी पौधे दिए जाएं। जब तक हम व्यक्तिगत रूप से पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे, तब तक पर्यावरण का ऐसे ही नाश होता रहेगा।

— निशा भास्कर, नई दिल्ली

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, विकास जरूरी

हमने अपनी सुख—सुविधाओं के लिए पर्यावरण की बलि दे दी, उसको प्रदूषित किया जिसके परिणामस्वरूप गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में विद्यालय एवं महाविद्यालयों में 'पर्यावरण अध्ययन' एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाए। यदि समय रहते इस मुसीबत की जड़ को नष्ट नहीं किया, तो आगे जाकर ये विकराल रूप में हमारे सामने होगी और फिर हमारे मन में पछतावा के अलावा कुछ नहीं होगा।

—नेहा देवी 'प्रकृति' झाँसी

जल, जंगल व जमीन का प्रबंधन जरूरी

प्राकृतिक संसाधनों के मनमाने दोहन के कारण पिछले सौ वर्षों में धरती के सतही तापमान में 0.74 डिग्री से की बढ़ोतरी हुई है जिसके अगले कुछ सालों में 1.5 से 4 प्रतिशत तक बढ़ जाने की आशंका है। वनों की कटाई के कारण समय पर बारिश नहीं होती। भूजल स्तर काफी नीचे जा चुका है। नदियां सूख रही हैं या प्रदूषित हो रही हैं। इसे देखते हुए हमें जल, जंगल व जमीन के कुशल प्रबंधन के साथ ही पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और नाभिकीय ऊर्जा के उपयोग पर जोर देना होगा।

—गजानन पाण्डेय, हैदराबाद



कदमों के निशां

अणुव्रत पुरस्कार

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सार्वभौम चरित्र को महत्व देने के लिए सर्वश्रेष्ठ चरित्रवान व्यक्तित्व को सम्मानित करने की वृष्टि से अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गई। नोबेल पुरस्कार की तरह यह पुरस्कार भी चरित्र के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस पुरस्कार ने कुछ वर्षों में अपनी अलग ही छवि बनाली।

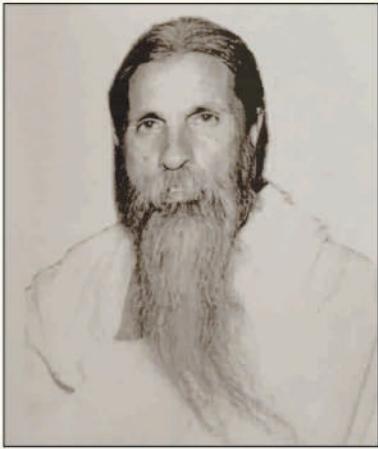
आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।" आचार्य महाश्रमण कहते हैं, "भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।"

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गई। तब से 26 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है।

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियों इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज के संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

शिवाजी भावे

सेवा और साधना की प्रतिमूर्ति



आचार्य विनोबा भावे के अनुज शिवाजी भावे का जन्म 16 अक्टूबर 1903 को कुलाबा (महाराष्ट्र) के गांगोदे में हुआ था। ये महज 17 वर्ष की आयु में ही सावरमती आश्रम आ गये और अठारह वर्ष तक यहां रहे। इस दौरान ये कताई, बुनाई, बढ़ीगीरी जैसे श्रमसाध्य कार्यों में संलग्न रहे तथा स्वाध्याय की बदौलत मराठी, अंग्रेजी और व्याकरण में दक्षता प्राप्त की। इनकी लिखावट इतनी सुंदर थी, जिसे देखकर लगता था जैसे अक्षर रूपी मोतियों को माला में पिरो दिया गया हो। खगोलशास्त्र में भी इनकी रुचि थी।

सत्याग्रहों में भागीदारी निभाने के साथ ही शिवाजी स्वतंत्रता संग्राम में दो बार जेल भी गये। इन्होंने ग्राम सेवा के उद्देश्य से 300 से अधिक गांवों का दौरा किया। सन् 1932 से 1942 तक इन्होंने महाराष्ट्र की पदयात्रा कर गीताई (श्रीमद्भगवद्गीता का विनोबा कृत मराठी संस्करण) का प्रचार-प्रसार किया। गांधीजी के कहने पर इन्होंने एक साल तक चक्रवर्ती सी. राजगोपालाचारी के निजी सहायक के रूप में भी कार्य किया।

असाधारण बुद्धिमत्ता, आत्मनिर्भर जीवन शैली और अखंड ज्ञान-अभ्यास के साधक शिवाजीराव की परम तत्त्व के प्रति गहन धनिष्ठता थी। उनका जीवन सेवा, त्याग, समर्पण और परोपकार के चार स्तंभों पर दृढ़ रहा।

गांधीजी को तकली से सूत कातना सिखाया

शिवाजी भावे बहुत अच्छे चित्रकार भी थे। इन्होंने ही सेवाग्राम आश्रम में अपने बनाए गए चित्रों से सजी पुस्तक के माध्यम से गांधीजी को तकली से सूत कातना सिखाया था। शिवाजी भावे ने 1934 में महाराष्ट्र के धुलिया में गांधी तत्त्व ज्ञान मंदिर की स्थापना की। इसके साथ ही आचार्य विनोबा द्वारा पवनार में स्थापित ब्रह्म विद्या मंदिर को महिला साधिकाओं की साधना भूमि बनाने में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आचार्य विनोबा भावे और आचार्य तुलसी वैचारिक दृष्टि से बहुत नजदीक थे। जब आचार्य तुलसी पदयात्रा करते हुए विनोबा के पवनार आश्रम पहुंचे तो विनोबा उनकी अगवानी करने आए और साथ पैदल चले। अणुव्रत और सर्वोदय का आपसी तालमेल अनेक अवसरों पर देखने को मिलता रहा है। शिवाजी भावे की इस समवैचारिक सहयोग को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका रही। उनका स्वयं का जीवन अणुव्रत का आदर्श उदाहरण था।

व्यवहार शुद्धि और साधना शुद्धि के प्रतीक

आजन्म ब्रह्मचारी, अध्यात्मनिष्ठ, दार्शनिक, कवि, मनीषी शिवाजी भावे का जीवन सेवा और साधना की प्रतिमूर्ति रहा। वे व्यवहार शुद्धि और साधना शुद्धि के जीवंत प्रतीक तथा वात्सल्य और प्रेम की मूर्ति थे। इन्हें सदैव अपने आसपास रहने वाले लोगों की फिक्र रहती थी। उनके कमरे से कोई खाली हाथ नहीं लौटता था। इन्होंने जीवन भर मानवीय एकता और नैतिक मूल्यों के विकास की दिशा में भगीरथ प्रयास किये। वर्ष 1984 में शिवाजी भावे को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया। 29 जून 1992 को नश्वर शरीर का त्याग कर इनकी आत्मा परम तत्त्व में विलीन हो गई।





भौतिकवाद और मानवीय अच्छाई

■ जयप्रकाश नारायण ■

अतीत काल में मनुष्य किसी उच्चतर नैतिक सत्ता से, जिसमें उसका विश्वास था, प्रेरित होकर अच्छा बनने का प्रयत्न करता था और अच्छाई के अर्थ होते थे : सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, दयालुता, चारित्र्य निःस्वार्थता आदि। मनुष्य यह अनुभव करता था कि अच्छा होने का प्रयत्न करना उसका उच्चतम नैतिक कर्तव्य है। यह अलग बात है कि वह अपने प्रयत्न में कितना सफल होता था, अथवा प्रयत्न भी करता था या नहीं। महत्व की बात यह है कि समाज प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा बनने की प्रेरणा प्रदान करता था। अच्छा होना धर्म या ईश्वर का आदेश था, अपने उच्चतम विकास के लिए, आत्म-साक्षात्कार के लिए आवश्यक था। उससे शांति एवं सर्वोच्च आनंद की प्राप्ति होती थी और मोक्ष तथा जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिलती थी।

वर्तमान समाज में, जबकि धर्म का प्रभाव समाप्त हो चुका है, ईश्वर में विश्वास हिल चुका है, नैतिक मूल्यों को इतिहास के तमिस्त्र युगों की भारभूत देन मानकर दूर फेंक डाला गया है, सारांशतः यह प्रश्न खड़ा होता है कि मनुष्य के हृदय में भौतिकवाद के प्रतिष्ठित होने के बाद क्या अच्छाई के लिए कोई प्रेरणा रह गयी है? वास्तव में, क्या इस प्रश्न की कोई प्रासंगिकता मानव समाज के वर्तमान तथ्यों, समस्याओं एवं आदर्शों के संदर्भ में है?

मैं दृढ़तापूर्वक यह मानता हूं कि इस प्रश्न से अधिक प्रासंगिक आज दूसरा कोई प्रश्न नहीं है।

सामान्यतः वर्तमान समाज के तथाकथित भौतिकवादी वातावरण के बावजूद आज सर्वत्र मनुष्य,

भिन्न-भिन्न तरीकों से, धरती पर स्वर्ग की रचना करने में अथवा मानव समाज को फिर से बनाने, परिष्कृत करने और पूर्ण बनाने में लगा हुआ है। परंतु, ये सारे प्रयत्न अपने मौलिक रूप से साम्यवाद के समान सबसे आदर्शवादी और महत्वाकांक्षी प्रयत्न भी मानवीय पतन रूपी कठोर चट्टान से टकराकर भग्न और विफल होते प्रतीत होते हैं।

सामाजिक पुनर्निर्माण मानवीय पुनर्निर्माण के बिना असंभव है, यह तथ्य आज जितना स्पष्ट है, उतना पहले कभी नहीं था। समाज तब तक अच्छा नहीं बन सकता, जब तक व्यक्तिगत रूप से मनुष्य, विशेषकर वे मनुष्य जो समाज के विशिष्ट वर्ग के हैं, अच्छे नहीं बन जाते।

यहीं आधुनिक समस्या का गूढ़ तत्त्व उपस्थित होता है। मनुष्य एक आदर्श समाज का नहीं तो कम से कम एक अच्छे समाज का निर्माण करना चाहता है। आधुनिक विज्ञान और प्रविधि ने इस काम को इतना आसान बना दिया है, जितना आसान वह पहले कभी नहीं था। परंतु मनुष्य के पास वे औजार ही नहीं हैं, जिनके द्वारा वह स्वयं का निर्माण करे। फिर तो यह विचार ही विस्मृत हो जाते हैं और मनुष्य सत्ता, पद, पुरस्कार आदि के लिए लड़ना शुरू कर देता है जिसके फलस्वरूप नये समाज का सम्पूर्ण प्राप्तानि ही धराशायी हो जाता है।

इसलिए मानवीय अच्छाई की समस्या आज सबसे बड़ी समस्या है। व्यक्ति आज यह प्रश्न करता है कि वह अच्छा क्यों बने? अब तो कोई ईश्वर नहीं है, कोई आत्मा नहीं, नैतिकता नहीं, इस जीवन के बाद कोई जीवन नहीं, और जन्म-मरण का कोई चक्कर नहीं है। वह द्रव्य का



एक समुच्चय मात्र है जो अनायास बन गया है, और शीघ्र ही द्रव्य के असीम महासमुद्र में बिखर जाने वाला है। वह अपने चारों ओर बुराई को— भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, झूठ, फरेब, क्रूरता, सत्ताधारित राजनीति, हिंसा आदि को—सफल होते देखता है। वह सहज ही प्रश्न करता है कि वह सदाचारी क्यों बने? आज हमारे जो सामाजिक रूप हैं और मनुष्यों के कार्यकलाप पर जिस भौतिकतावादी दर्शन का प्रभुत्व है, वे उत्तर देते हैं कि उसे सदाचारी बनने की आवश्यकता नहीं। अब, वह जितना ही अधिक चतुर है, जितना ही प्रतिभासम्पन्न है, वह उतने ही साहस के साथ इस नयी निर्नेतिकता को अपने आचरण में उतारता है, और इस निर्नेतिकता के चक्कर में मानव जाति के सारे सपने और अरमान भी मुड़कर और सिकुड़कर रह जाते हैं।

अनेक वर्षों तक मैंने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की देवी के मंदिर में उपासना की है, यह दर्शन मुझे अन्य किसी भी दर्शन की अपेक्षा बौद्धिक रूप से अधिक तुष्टिकारक प्रतीत होता था। परंतु जहां दर्शन की मेरी मुख्य जिज्ञासा अतृप्त ही रही है, वहां यह मेरे सामने प्रत्यक्ष हो गया है कि भौतिकवाद, चाहे वह किसी प्रकार का हो, मनुष्य को सच्चे अर्थ में मानवीय बनने के साधनों से ही वंचित कर देता है। भौतिकवादी सभ्यता से मनुष्य को अच्छा बनने के लिए कोई युक्तिसंगत प्रेरणा नहीं मिलती। संभव है, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के राज्य में भय मनुष्य को अनुगत होने की प्रेरणा देता हो और दल भगवान का स्थान ले लेता हो। लेकिन जब भगवान ही बुरा हो जाता है, तो फिर बुरा होना ही एक सार्वत्रिक नियम बन जाता है।

अतः मैं विश्वासपूर्वक अनुभव करता हूं कि मनुष्य अच्छाई की प्रेरणा पाने के लिए भौतिकवाद से आगे बढ़े। इसके अनुसिद्धांत के रूप में, मैं यह भी अनुभव करता हूं कि सामाजिक पुनर्निर्माण का कार्यक्रम भौतिकवादी दर्शन की प्रेरणा के अंतर्गत कभी सफल नहीं हो सकता।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि क्या मनुष्य के लिए अच्छाई प्राप्त करने हेतु कोई सामाजिक अनुकूलन की प्रक्रिया भी आवश्यक है? क्या मनुष्य मूलतः अच्छा नहीं है? क्या प्रत्येक समाज में अधिकांश मनुष्य शिष्ट नहीं होते हैं?

हाँ और नहीं।

मनुष्य एक सामाजिक-प्राकृतिक प्राणी है, वह अंशतः प्रकृति की उपज है और अंशतः समाज की उपज है। मनुष्य स्वभाव से क्या है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः अच्छे और बुरे की कल्पनाएं अति-प्राकृतिक या अति-ऐन्ड्रियिक हैं। प्रकृति में कुछ अच्छा-बुरा नहीं है। बहुत संभव है कि मानव-प्रकृति का स्वरूप, आत्म-संरक्षण एवं जाति-संरक्षण की प्रवृत्तियों को छोड़ तटस्थ होता है और वह सामाजिक अनुकूलन के अनुरूप नैतिक गुण प्राप्त करता है।

सामाजिक पुनर्निर्माण मानवीय पुनर्निर्माण के बिना असंभव है, यह तथ्य आज जितना स्पष्ट है, उतना पहले कभी नहीं था। समाज तब तक अच्छा नहीं बन सकता, जब तक व्यक्तिगत रूप से मनुष्य, विशेषकर वे मनुष्य जो समाज के विशिष्ट वर्ग के हैं, अच्छे नहीं बन जाते।

यह सच है कि प्रत्येक समाज में अधिकांश मनुष्य शिष्ट और अच्छे होते हैं। जीवन—यापन के दौरान इन मनुष्यों को कोई महत्वपूर्ण नैतिक निर्णय लेने नहीं पड़ते। उनके जीवन की दिनचर्या संकीर्ण दायरे में ही घूमती है, और उचित—अनुचित संबंधी प्रश्नों का उत्तर उन्हें रीति एवं

परम्परा से प्राप्त हो जाता है। लेकिन पहली बात तो यह है कि ये निर्दोष शिष्ट मानव सामाजिक उत्प्रेरणाओं के फलस्वरूप अचानक अशिष्ट और सदोष बन सकते हैं। हमें यह कटु अनुभव प्राप्त ही है कि किस प्रकार शांतिपूर्वक साथ रहने वाले अच्छे हिंदू और मुसलमान, सामाजिक वासनाएं उभर जाने के बाद, एक—दूसरे पर टूट पड़े और ऐसा करने में उन्हें कोई हिचक नहीं हुई।

द्वितीयतः: समाज के चरित्र के लिए एवं उसके विकास की दिशा के लिए जो महत्वपूर्ण वस्तु होती है, वह अक्रिय जनसमूह के चरित्र में उतनी नहीं, जितनी कि विशिष्ट वर्ग के चरित्र में निहित होती है। इन विशिष्टों के समूह का जो दर्शन और जो कार्य होते हैं, वही मनुष्यों का भाग्य—निर्धारण करते हैं। ये विशिष्ट जिस सीमा तक निरीश्वर और निर्नेतिक होते हैं, उसी सीमा तक बुराई मानव जाति को आक्रान्त करती है। मेरे इस कथन से जो भ्रांति उत्पन्न हो सकती है, उसका सद्यः निराकरण मैं कर दूँ। मेरे कथन का यह अर्थ नहीं है कि भौतिकवादी दर्शन को मानने वाले सभी लोग बुरे हैं और सभी अ—भौतिकवादी अच्छे हैं। परंतु मैं यह अवश्य बल देकर कहता हूं कि भौतिकवाद में ऐसा कोई तर्क नहीं है जिसके आधार पर कोई व्यक्ति समझ—बूझकर अच्छाई प्राप्त एवं आचरित करने का प्रयत्न करेगा।

अ—भौतिकवाद (इस नकारात्मक शब्द का प्रयोग मैं कर रहा हूं इसलिए कि मेरे मन में किसी पंथ—विशेष की कल्पना नहीं है) द्रव्य को अंतिम वास्तविकता नहीं मानकर व्यक्ति को अविलम्ब एक नैतिक धरातल पर उठा ले जाता है और उसको, स्वयं से परे किसी लक्ष्य की ओर संकेत किये बिना अपना ही सच्चा स्वभाव प्राप्त करने की, तथा अपने अस्तित्व को उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

यह प्रयास एक शक्तिशाली प्रेरक तत्त्व बन जाता है जो सहज रूप से उसको अच्छाई और सच्चाई की ओर बढ़ने के लिए प्रवृत्त करता है। इसके महत्वपूर्ण अनुसिद्धांत के रूप में यह प्रकट है कि भौतिकवाद के परे जाने के बाद ही वैयक्तिक मानव स्वयं की ओर आता है और स्वयं साध्य बन जाता है।

स्वतंत्रता सेनानी, मानवतावादी चिंतक और राजनेता जयप्रकाश नारायण की पुस्तक 'समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र' से साभार। उन्होंने यह लेख सन् 1952 में लिखा था।

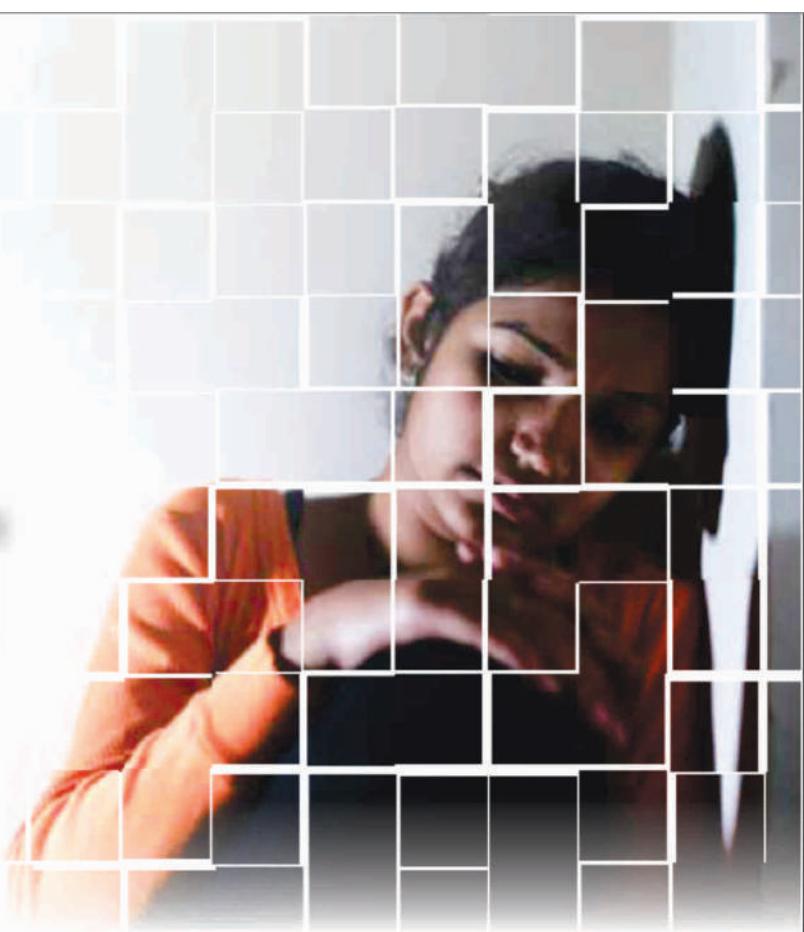


बचाएं बीमार होते बचपन को

■ दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश' ■

यह पुरानी बात हो चुकी, जब घर-घर में छोटे परदे यानी टेलीविजन का प्रवेश हुआ था। वृद्ध, युवा, बच्चे सभी इससे प्रभावित हुए थे। मगर सर्वाधिक असरकारक यह बच्चों के लिए हुआ। इसके बाद बच्चों की दुनिया में तब्दीलियाँ आने लगीं। पहले बच्चे गली-मोहल्ले में साथियों के साथ उछल-कूद करते थे। पार्क में खेलने-कूदने जाते थे। गाँव के बच्चे खेत-बाग, नदी-पोखरे के आस-पास घूमते-टहलते थे। पेड़ों पर चढ़ते-उतरते थे। सुझाया पत्ती, सुर जैसे गँवई खेलों के अलावा कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट वगैरह का भी आनन्द लेते थे। मगर टीवी के आने के बाद बच्चों का बाहर खुली हवा में खेलना-कूदना, घूमना-टहलना कम होने लगा। बच्चे जिन अवसरों पर मित्रों के साथ हँसी-ठट्ठा करते थे, गप्पे लड़ाते थे, भावी जीवन के सपने साझा करते थे, वह समय टीवी के खाते में जाने लगा।

बच्चे पारम्परिक जीवन—शैली को छोड़कर आभासी दुनिया में रमने लगे तो इसके दुष्परिणाम भी सामने आने शुरू हुए। अधिक टीवी देखने वाले बच्चों में सिर, गर्दन और पीठ दर्द की शिकायत देखने में आई। यह भी आभास मिलने लगा कि बच्चों की बातचीत और व्यवहार में आक्रामकता में लगातार वृद्धि हो रही है। अध्ययनशीलता का संस्कार तो टीवी की भेंट चढ़ ही चुका था। लिहाजा पढ़ने की क्षमता में कमी आना स्वाभाविक था। अनिद्रा, अनियमित रक्तचाप, अवमानना, जिद जैसे मामलों में बढ़ोतरी दिखने लगी। मोटापा और अकेले रहने की प्रवृत्ति तो बच्चों में आई ही, वे घर के



सदस्यों से भी दूरी बनाने लगे। होमवर्क में अरुचि, एकाग्रता की कमी और नेत्र शुष्कता में वृद्धि जैसे नकारात्मक लक्षणों में वृद्धि दिखने लगी।

टेलीविजन तो था ही, देखते-देखते कम्प्यूटर, टैबलेट, स्मार्टफोन, इंटरनेट और वीडियो गेम भी आ गए। इनके फायदे हैं तो नुकसान भी कम गम्भीर नहीं हैं। कम्प्यूटर, स्मार्टफोन और टैबलेट के माध्यम से हम इंटरनेट के जरिये संसार के उत्कृष्ट साहित्य और ज्ञान-विज्ञान से जुड़ सकते हैं। वीडियो गेम एकाग्रता और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने का अच्छा साधन है। मगर बच्चों की भटकी हुई रुचि ने यहाँ भी उनको उन्हीं छवियों से जोड़ा, जो वे छोटे परदे पर देखते आये थे। बच्चों में नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में जो गिरावट आ रही थी, उसके मद्देनजर देश के चिकित्सक, मनोविज्ञानवेत्ता और शिक्षाविद् हैरान थे। राँची स्थित 'रिनपास' मनोचिकित्सा संस्थान में बच्चों के अन्दर पैदा हो रहे इन लक्षणों के कारणों की पड़ताल हुई थी। संस्थान ने इसका जिम्मेदार बच्चों में गैजेट्स के बढ़ते उपयोग को ठहराया था। 'रिनपास' ने एक आंकड़ा दिया था, जिसके अनुसार प्रतिमाह 'मोबाइल एडिक्शन' (सभी प्रकार के स्क्रीन के दुष्प्रभाव) से पीड़ित 200 बच्चे इलाज के लिए संस्थान में आ रहे थे। यह एक चौंकाने वाली बात है।

बच्चों में असामान्य व्यवहार, आक्रामकता, छेड़खानी वगैरह की प्रवृत्ति सबसे पहले पश्चिमी देशों में आरम्भ हुई थी। तब वहाँ इस सम्बन्ध में कई शोध कार्य हुए थे। इससे एक आधार मिला था कि टेलीविजन, फ़िल्म के



परदे, कम्प्यूटर की ऊल—जलूल हरकतें हिंसा व आक्रोश और कामुकता भरे दृश्य को बाल दर्शक अपने वास्तविक जीवन में खोजने का प्रयत्न कर सकते हैं।

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहैवियरल साइंसेज (सीआईबीएस) नागपुर के अध्ययन में पाया गया कि टीवी और अन्य गैजेट्स की स्क्रीन से निकलने वाली कैथोड किरणें तेरह साल से कम उम्र के बच्चों पर खतरनाक असर डालती हैं। इससे बच्चों के मस्तिष्क पर कभी न ठीक होने वाले दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं। संस्थान के 'मंथन' कार्यक्रम के अध्ययन में पाया गया कि कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन से जो विकिरण होता है, वह बच्चों के मस्तिष्क में घातक किस्म के रसायनों के उत्सर्जन का कारक बनता है। इससे बायीं तरफ का मस्तिष्क निष्क्रिय—सा हो जाता है, जबकि दायीं तरफ का मस्तिष्क अधिक सक्रिय हो जाता है। यह स्थिति बच्चों में अस्थिर व्यक्तित्व का विकास करती है।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया कि स्क्रीन के सामने अधिक समय बिताने वाले बच्चे एकाग्रता, याददाश्त, सहनशीलता, मनोभावों के नियंत्रण, विश्लेषण जैसे मामले में कमजोर होते हैं। उनके कुंठाग्रस्त होने और डिप्रेशन में जाने का खतरा अधिक रहता है।

डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल दिल्ली के मनोरोग विभाग की अध्यक्ष डॉ. नीना बोहरा के अनुसार, टीवी देखते समय मस्तिष्क की प्रकाश संवेदी कोशिकाएं बहुत तेजी से प्रतिक्रिया करती हैं। इससे मस्तिष्क की ऊर्जा अव्यवस्थित हो जाती है और मस्तिष्क में असामान्य तरल पदार्थ बहने लगता है, जो मिर्गी का रूप धारण कर सकता है। इसको 'साइकोमोटिव इपिलिप्सी' कहते हैं। इस मिर्गी में मुँह से झाग नहीं आता। इससे लोग नहीं समझ पाते कि यह मिर्गी है और इस वजह से वे बच्चे का समय से इलाज नहीं करते और रोग गम्भीर रूप धारण कर लेता है। सीआईबीएस (नागपुर) के डॉ. विशाल ग्रोवर का कहना है कि टेलीविजन, लैपटॉप की स्क्रीन को देखने के लिए बच्चों की आँखों की सिलियरी कोशिकाओं को सिकुड़ना पड़ता है, ताकि नेत्र लेंस का पावर बढ़ जाए और छवियाँ साफ दिख सकें। सिलियरी कोशिकाओं में बार-बार खिंचाव होने पर आँखों के कोराइड में फैलाव होता है, इससे नेत्र गोलक बड़ा हो जाता है और बच्चों में 'मायोपिया' (निकट दृष्टि दोष) उत्पन्न होने लगता है।

मौजूदा समय में बच्चों को स्क्रीन वाले उपकरणों से दूर रखना न तो व्यावहारिक है और न सम्भव ही है। पिछले वर्ष कोविड-19 के चलते लॉकडाउन के दिनों में तो पूरा शैक्षिक परिदृश्य ऑनलाइन हो गया था, जो दूसरी लहर के बाद कमोवेश अब तक जारी है। इससे स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप जैसे गैजेट्स तक बच्चों की पहुँच बढ़ी है। टी.वी. पर 'स्वयंप्रभा' के माध्यम से शैक्षणिक पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है।

'नई शिक्षा नीति-2020' का पूरा एक अध्याय वर्चुअल माध्यम को समर्पित है। परिणामतः भविष्य में डिजिटल तकनीक बच्चों के जीवन में और प्रभावी होगी, इसलिए बच्चों पर अधिक ध्यान देकर ही स्क्रीन के दुष्प्रभावों से उनको बचाया जा सकता है। वीडियो गेम वगैरह के लिए समय सीमा निर्धारित करनी होगी, जो एक घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिये। रोजाना बच्चों को एक-डेढ़ घंटे घर के बाहर खेलने के लिए भेजने का नियम बनाना होगा। खेलकूद और गप्पबाजी बच्चों में व्यवहार कुशलता, सामाजिकता, सामूहिकता और सहकार की भावना विकसित करती है। बच्चों में खेलकूद के प्रति अरुचि मौजूदा वक्त की बड़ी चुनौती है। इससे निपटने के लिए बच्चों के बीच आपसी मेल-मिलाप का माहौल और अवसर पैदा किया जाना चाहिये। जो बच्चे अधिक मित्रों के साथ उठते-बैठते हैं, सयाने होने पर उनका 'सिविक सेंस' उतना ही उच्च स्तर का होता है। बच्चों को अकेलेपन का शिकार न होने दें। उनके साथ बातचीत करें, कहानी सुनायें और उनको पार्क, बाग-बगीचों जैसी जगहों पर घुमाने ले जायें। इससे स्क्रीन वाले उपकरणों से चिपके रहने की उनकी प्रवृत्ति कम होगी। बचपन को स्वस्थ और खुशहाल बनाने के लिए बच्चों को कलात्मक और सृजनात्मक वृत्तियों से जोड़ना भी एक सहज उपचार है।

लेखक सेवानिवृत्त अध्यापक तथा बाल साहित्यकार हैं। बच्चों से जुड़े विषयों पर लेखन। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अमृत लाल नागर बाल साहित्य पुस्तकार से सम्मानित।

फिर क्यों उदास है?

■ राजेंद्र वर्मा ■

कवि, साहित्यकार व स्वतंत्र लेखक

मेरा अनादि काल से कण-कण में वास है,
पर दृश्यमान हूँ उसे, जिसमें उजास है।
यद्यपि समुद्र और बूँद हैं पृथक-पृथक्,
फिर भी समुद्र बूँद में करता प्रवास है।
मेरी सदैव दैन्य से प्रगाढ़ता रही,
स्वर्गिक विलासिता मुझे आती न रास है।

तू जिस अनाम के लिए व्याकुल भटक रहा,
तुझमें ही बैठा ले रहा वो उच्छवास है।
स्वीकारता है क्यों तू परिस्थिति की दासता,
जब मुक्ति का उपाय भी तेरे-ही पास है।
तेरे तो हाथ कर्म है, परिणाम तो नहीं,
जो होना था, सो हो गया, फिर क्यों उदास है ?





फॉरेस्ट मैन ऑफ इण्डिया

पद्मश्री जादव पायेंग 1360 एकड़ में उगा दिया जंगल

तबाही अक्सर लोगों की हिम्मत तोड़ देती है, लेकिन कुछ ऐसे विरले लोग भी होते हैं जो तबाही से जूझने के बाद इस तरह आगे बढ़ते हैं कि उनका ही नहीं, न जाने कितनों का जीवन सकारात्मक रूप से बदल जाता है। ऐसी ही शिखियत के मालिक हैं असम के जादव पायेंग। उनका परिवार पहले ब्रह्मपुत्र नदी के द्वीपीय इलाके अरुणा सपोरी में रहता था, लेकिन वर्ष 1965 में उनका परिवार जोरहाट शिफ्ट हो गया।

असम में वर्ष 1979 के दौरान आई भयंकर बाढ़ ने भारी तबाही मचाई थी। उसी दौरान जादव पायेंग का अपने जन्मस्थान अरुणा सपोरी आना हुआ। तब उन्होंने बालिगांव जगन्नाथ बरुआ आर्य विद्यालय से कक्षा 10 की परीक्षा दी थी। उन्होंने देखा, आसपास की पूरी जमीन पर सिर्फ मिट्टी और कीचड़ थी। सैकड़ों मरे हुए सांप रेत पर आ गए थे। भूमि कटाव के चलते आसपास की पूरी हरियाली नदी ने निगल ली थी। पशु-पक्षियों का बसेरा छिन गया था। जादव पायेंग ने जब वहां के लोगों से इस तबाही की वजह पूछी तो पता चला कि पेड़—पौधे न होने के कारण सांपों का बाढ़ के पानी से बचाव नहीं हो पाया और उनकी मौत हो गई।

धरती पर जीवन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र और सभी जीवों का होना कितना जरूरी है, भले ही इस गूढ़ विषय का ज्ञान न हो, मगर सैकड़ों मरे हुए सांपों को यूं देखकर जादव पायेंग का मन संवेदना से भर गया और उन्होंने आसपास के बड़े लोगों से पूछा, 'अगर इन्हीं

सांपों की तरह एक दिन हम सब मर गए तो वे (बड़े लोग) क्या करेंगे?' उनकी इस बात पर सभी बड़े-बुजुर्ग हंसने लगे और उनका मजाक उड़ाने लगे, लेकिन महज 16 साल के जादव ने मिट्टी और कीचड़ से भरे द्वीप को एक नया जीवन देने के बारे में ठान लिया। वे अपने गांव के बड़े-बुजुर्गों से मिले। इन लोगों ने समझाया कि यदि ब्रह्मपुत्र के आसपास और बीच में उभर आई रेतीली पट्टियों पर पेड़ हों तो नदी के कोप से जानवर भी बच सकेंगे और इंसान भी। इस पर जादव वन विभाग वालों के पास गये और मदद चाही, लेकिन उन्होंने बंजर भूमि में कुछ भी न उग पाने की बात कहकर हाथ खड़े कर दिए। इसके बावजूद धुन के धनी जादव ने हार नहीं मानी और बड़े-बुजुर्गों की सलाह पर अपने गांव से बांस के कुछ पौधे इकट्ठे किए और उन्हें ब्रह्मपुत्र के बीच बने एक टापू पर रोप आए। उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और ज्यादातर समय इस टापू पर ही रहने लगे। वे सुबह-शाम इन पौधों को पानी देते और हर दिन कुछ नए पौधे लगाते। यहां तक कि उन्होंने गांव से लाल चीटियां और केंचुए इकट्ठे कर उन्हें कीचड़ में छोड़ा। ...और उन्होंने अकेले दम पर 30-40 साल की मेहनत की बदौलत आज 1360 एकड़ में फैला जंगल खड़ा कर दिया है, जो लुप्त होने के कागार पर खड़े एक सींग वाले गैंडे, कई रँयल बंगाल टाइगर, सैकड़ों हिरणों, भालू, गिद्धों और कई प्रजातियों के पक्षियों का घर है। जादव कहते हैं, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरी एक छोटी-सी पहल एक दिन इतना बड़ा परिवर्तन लाएगी। इस जंगल में पहली



बार पशु—पक्षियों को देखकर मुझे जो खुशी महसूस हुई उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती।” जादव को अपने जंगल से प्यार है। जंगल ही उनका परिवार है। वे इससे दूर नहीं जाना चाहते। सो उन्होंने दुधारू पशु रख लिए। आज वे और उनकी पत्नी व तीनों बच्चे आसपास के गांवों में दूध बेचकर अपना जीवन यापन करते हैं।

मुसीबतों में यूं निकाली राह

जादव अपने मिशन में कामयाब तो हो रहे थे लेकिन इस जंगल में रहने वाले हाथियों ने आसपास के गांवों में घुसना शुरू कर दिया। वे फसलों को बर्बाद करने लगे। कभी—कभार तो बाघ भी गांवों में आ जाते। इससे गुरुस्साए ग्रामीणों ने जादव से कह दिया कि यदि जानवरों ने गांव में घुसना बंद नहीं किया तो वे जंगल में आग लगा देंगे। जादव ने इसका भी उपाय खोज लिया। उन्होंने जंगल में केले के पेड़ लगाने शुरू कर दिए। इसका नतीजा यह हुआ कि हाथियों को उनका पसंदीदा आहार जंगल में ही मिलने लगा और उन्होंने गांवों की तरफ रुख करना छोड़ दिया। जंगल में हिरण्यों की आबादी बढ़ी तो बाघ भी वहीं सीमित हो गए।

देश—विदेश में पहचान मिली और सम्मान भी

वर्ष 2009 में स्थानीय पत्रकार जीतू कालिता जोरहाट जिले में ही पड़ने वाले नदी द्वीप माजुली पर स्टोरी करने आए थे। उन्हें किसी ने बताया कि 20 किमी दूर एक व्यक्ति ने जंगल लगाया है। हकीकत जानने के लिए वे जंगल पहुंच गए। उन्हें पूरी कहानी पता चली और जब यह कहानी मीडिया की सुर्खियां बनी तो देश—विदेश के लोगों ने भी जादव और उनकी मुहिम के बारे में जाना। असम सरकार ने कोकिलामुख के पास जादव के लगाए इस जंगल का नाम मोलाई कठोनी रखा है। जादव को उनके माता—पिता प्यार से ‘मोलाई’ ही बुलाते थे और असमिया भाषा में कठोनी का मतलब है लकड़ी। पायेंग को इस महान और सराहनीय काम के लिए भारत सरकार साल 2015 में “पद्मश्री” सम्मान से नवाज चुकी है।

देश की प्रसिद्ध “जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी”



वे कहते हैं कि देश के प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन में कम से कम 2 पेड़ लगाने चाहिए।

अगर हमने ऐसा नहीं इसी तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते रहे तो एक दिन इस धरती पर कुछ नहीं बचेगा, कुछ भी नहीं।

ने साल 2012 में उन्हें “फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया” के उपनाम से नवाजा था। असम कृषि विश्वविद्यालय और काजीरंगा विश्वविद्यालय ने जादव को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।

साल 2015 में जादव को फ्रांस में आयोजित “सातवीं ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑफ स्टेनेबल डेवलपमेंट” की बैठक के दौरान भी सम्मानित किया गया था। एक कनाडा

ई फिल्मकार मैकमास्टर ने उन पर ‘फॉरेस्ट मैन’ नाम से डॉक्यूमेंट्री बनाई है। यह फिल्म 2014 में रिलीज हुई, जिसे कई अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। अमेरिका के ग्रीन हिल्स

स्कूल के विद्यार्थी अब जादव पायेंग के बारे में पढ़ रहे हैं।

उनकी कहानी को स्कूल की कक्षा 6 के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, ताकि देश की भावी पीढ़ियों को पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के इस तरह के काम के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सके।

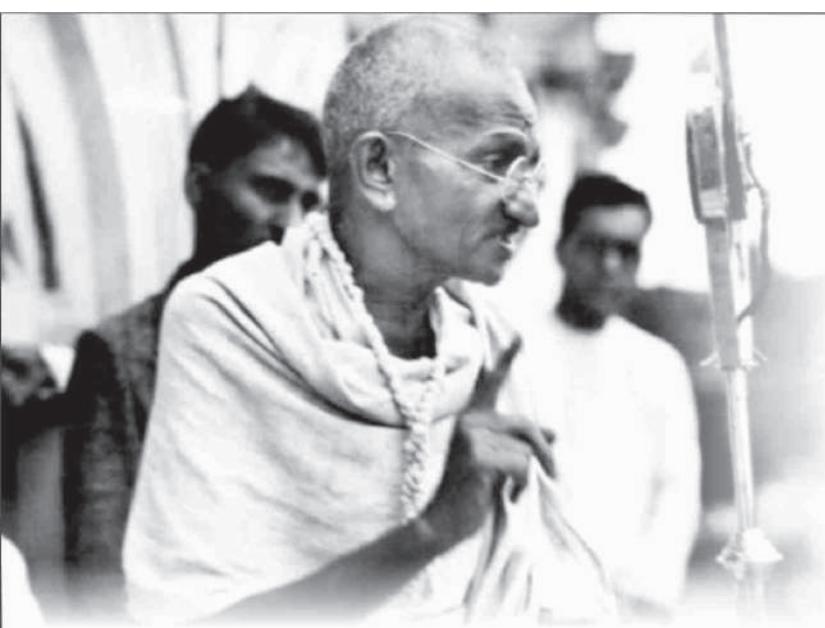
...और अब 5,000 एकड़ में जंगल उगाने का लक्ष्य

ब्रह्मपुत्र में अमूमन हर साल आने वाली बाढ़ से असम में लाखों लोग विस्थापित होते हैं। भूमि

कटाव के कारण नदी किनारे की सैकड़ों हेक्टेयर जमीन भी बर्बाद होती है। पिछले दिनों आए कई अध्ययनों में कहा गया है कि ब्रह्मपुत्र का सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली आने वाले 15–20 वर्षों में भूमि कटाव के चलते नदी में समा जाएगा। यदि माजुली पर धना जंगल हो तो इसे बचाना मुमकिन है। जादव का गांव अरुणा सपोरी माजुली के पास ही है और वे अब माजुली में 5,000 एकड़ में जंगल उगाने के लक्ष्य पर काम कर रहे हैं। वे सुबह 5 बजे माजुली पहुंच जाते हैं, जहां नए पौधे लगाने के लिए बीज इकट्ठा करते हैं।

उनका कहना है कि देश के प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन में कम से कम 2 पेड़ लगाने चाहिए। अगर हमने ऐसा नहीं किया और इसी तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते रहे तो एक दिन इस धरती पर कुछ नहीं बचेगा, कुछ भी नहीं।





Gandhi and Communal Unity

■ Anil Dutta Mishra ■

India is a land of diversity having heterogeneous people of multifarious languages, religions, castes and creeds. Despite in the midst of all such diversities of character, there is an underlying unity among them since time immemorial. The fact remains that there is always a threat of narrow communal feelings.

In modern India, Gandhi, Nehru and Acharya Tulsi were one of the greatest champions of communal unity. They lived their whole life striving for it, ensuring it, stood firm for it, and finally sacrificed their life in the pursuit of communal unity. For Gandhi the issue of communal unity was greater than that of Swaraj. Communal unity was first and foremost primary concern for Gandhi. Gandhi said that 'Swaraj was impossible without Hindu-Muslim Unity'. In his constructive programme, he gave the first place to communal harmony among the people of different faiths. Anuvrat philosophy is also a philosophy of harmony and unity.

Gandhi pleaded for the cause of better understanding among individuals and communities. Everywhere in the world, individuals and groups are divided because of fear, suspicion and hatred towards each other, which further depends on whether the division expressed itself along religious, economic, political, caste or colour lines. Whatever is the form, insecurity is perhaps the major cause of individual or social dissensions. A person, who is integrated and sure of himself, fears none and consequently provokes no fear. We have examples of such heroic individuals. But we do

not have till now instances of societies or communities that are fully integrated and therefore fearless.

Gandhi felt the need of community unity during his stay in South Africa. In India, the principal question before him was harmony between Hindus and Muslims who inhabited this country. Gandhi felt that if Hindu-Muslim unity was established, unity with other communities which were already there could easily be strengthened. He never found serious differences between the Hindus and Muslims and other minority communities. Naturally, therefore, he turned to the question of Hindu-Muslim unity.

Gandhi insisted that the Hindus who are in a majority in the country should help the Muslims and should never entertain any idea of enforcing their rights but try to win the hearts of the minority community. He wrote: "I am striving to become the best cement between the two communities. My longing is to be able to cement the two with my blood, if necessary. There is nothing in either religion to keep the two communities apart. In nature there is a fundamental unity running through all the diversity. Religions are no exception to the natural law. They are given to mankind so as to accelerate the process of realization of fundamental unity. The need of the moment is not an establishment of a Universal religion but there is a greater need to develop mutual respect towards the different religions."

In Young India, February 25, 1920 Gandhi wrote that 'Hindu-Muslim unity consists in our having common purpose, a common goal and



common sorrows. It is best promoted by co-operating to reach the common goal, by sharing one another's sorrows and by mutual toleration.' Further, in December 2, 1920 in Young India, he writes that 'This unity cannot be a mere policy to be discarded if only when we are tired of Swaraj. Hindu-Muslim unity must be our need to last for all time and under all circumstances'.

Before the coming of Britishers in India the Hindu and Muslim masses on the whole lived together, without antipathy or bitterness though there existed certain religious trends which were exclusive and antagonistic. Even in the 1857 revolt Hindus and Muslims fought together side by side and their anger was directed against the common enemy, the foreign rulers at whose hands all India suffered alike. But during this early phase of Indian nationalism, Muslims lagged behind. Nationalist ideas spread among the Hindu middle and lower middle classes but not to an equal extent among the Muslims.

As the national movement spread and grew there was the threat that it might unify the people and pose serious problems for the empire. "A united people cannot be kept under subjugation for a long time." The British decided to do all they could to keep the people disunited and quarrelling and competing among themselves. They decided to divide the people in the name of their different religions and to encourage communal and separatist tendencies in Indian Politics.

However, with the rise of the Indian National Congress, Sayyid Ahmed became apprehensive about the position of the Muslims. The British also pulled strings behind the scenes. Now he declared that "the interests of Hindus and Muslims were different and even opposite". He told his followers that "if the British withdrew, the Hindu majority would dominate over and be unfair to the Muslim minority." He advised the Muslims not to join the Indian National Congress. He also declared that if the educated Muslims remained loyal to British, they would reward them with government jobs and other special favours.

A concrete shape and setting to the communal theory was given in 1906 when the

'All India Muslim League' was set up under the leadership of Aga Khan, Nawab Salimullah of Dacca and Nawab Mohsin-ul-mulk. The league supported the partition of Bengal and demanded special and separate electorates. The British were waiting for just such an opportunity. They made full use of it and announced that they would protect the 'special-interests' of Muslims. League said that "the interests of the Muslims were different and divergent from those of the rest of the nation". One major objective of the league was to keep the Muslims away from joining the Congress. Its activities were directed against the Congress and not against the British government.

Viceroy Minto, decided to play the game of 'divide and rule' once again. The Morley-Minto reforms introduced a system of separate electorate and representation for the Indian Muslims. It provided for separate constituencies from which only a Muslim could stand as candidate and for which only Muslims would vote. It encouraged separatist tendencies. The real purpose of this move was to divide the nationalist movement and to check the growing unity among the Indians by encouraging the growth of communalism.

The communal view of politics was unscientific and irrational but it played upon the fears from which a minority tends to suffer. Under these circumstances it was very important to tie the loose knot of unity strongly and tightly. Gandhi's understanding of the communal problem was of momentous consequence. His main concern was not only to free the country from British rule but also to establish communal harmony.

Gandhi emerged as an undisputed leader of Indian national movement. He returned to India in January 1915 from South Africa. In the course of his struggle against racialism in South Africa, he had developed his unique philosophy of action—'satyagraha.' Its two major elements were—truth and non-violence. Gandhi said, "If satyagraha was successful in Africa, why not try it in India? I have no doubt that British government is a powerful government but I have no doubt also that satyagraha is a sovereign remedy." He



experimented with it in Champaran, Kheda and Ahmedabad.

On 18 September 1924, Gandhi started a 21 days fast for Hindu-Muslim unity. "The fast was dictated by duty to the highest cause...the universal brotherhood of man." The fast was an adventure in goodness. The stake was one man's life. The prize was a nation's freedom. "If Indians were united as brothers, no outsider could long be their master." But Hindu-Muslim problem defied Gandhi's efforts. "I am helpless," he admitted. "I have now washed my hands. But I am a believer in God...something within tell me that Hindu- Muslim unity will come sooner than we might care to hope, that God will one day force it on us."

On 15th August 1947, India got independence but Gandhi considered partition "a spiritual tragedy". He stated "thirty-two years of work have come to an inglorious end". India became independent. But the victory was a cold, political arrangement. It was the hollow husk of freedom. It was victory with tragedy, victory that found the army defeating its own general. Independence brought sadness to the architect of independence. He did not take part in the independence celebrations. Gandhi issued no message to the nation. He walked bare-footed from village to village in Noakhali to restore peace and harmony in that area. Then he proceeded to Bihar and Calcutta to establish amity and peace. It was the fast of Gandhi for 72 hours that brought about the change of atmosphere in Calcutta. In the words of Lord Mount batten, "What fifty thousand well-equipped soldiers could not do, the Mahatma has done, he has brought peace. He is a one-man boundary force".

Gandhi's visit to Noakhali was more than a visit of mercy and empathy. It was his resolve to do or die. Gandhi stated that "he would not be at peace unless he visited the disturbed areas". Gandhi's appeal for peace in Bengal was totally self abnegating. He went there as a servant of the people and he met the Hindus and Muslims alike and appealed for unity. Gandhi's presence eased tension, assuaged anger and softened tempers. He cautioned the public that if they repeated violence it would mean that they were killing him. Gandhi's fast was more than



penance and self purification. He was committed to die so that communal amity could survive and get consolidated.

Gandhi had never accepted in principle the theory of the Hindus and the Muslims being two distinct nations and he tried to convince both of them of the pernicious character of this principle. It is remarkable that how by his honest and fearless advocacy of communal unity he had enraged many of the Muslims and a negligible few among the Hindus. The Muslims looked upon him as an enemy, while some Hindus felt that by showing humility, respect, regard and partiality for the Muslims, he was jeopardizing the cause of the Hindus.

Gandhi always emphasized upon the necessity of openness of mind for the unity and harmony of society. It was not a question of failure or success. He realized that the only alternative to violence, coercion, retribution, distrust and chaos, was restoration of sanity among misguided individuals. To counter frenzy and vindictiveness, Gandhi sought rehabilitation of balanced social interaction among the masses and the resolve to put the cause of the nation above all denominational prejudices.

Today India is a secular nation. Democracy is mature. Muslim got equal rights and opportunities and they are more secure in India than any other country. The credit goes to founding fathers of Indian constitution and particularly Jawaharlal Nehru and Mahatma Gandhi and later followed by Acharya Tulsi through the Anuvrat Movement.

The Writer is a renowned Gandhian scholar and author of "Reading Gandhi". He has been associated with various universities and held the post of Deputy Director, National Gandhi Museum.



अणुव्रत संवेदन

०० जंगल के पशु-पक्षियों की बुझा रहे प्यास ००



कुछ लोग बेजुबानों से बेइंतहा मोहब्बत करते हैं। वे उनकी हर मुमकिन मदद करना चाहते हैं। ऐसे ही एक शख्स हैं सैयद जहांगीर। वे हैदराबाद की उस्मानिया यूनिवर्सिटी में प्लम्बर का काम करते हैं तथा यूनिवर्सिटी कैंपस में अपने परिवार के साथ रहते हैं। उन्हें सब प्यास से 'बाबा जहांगीर' कहते हैं। बकौल जहांगीर, हैदराबाद में मानसून आने से पहले काफी गर्मी पड़ती है। इस गर्मी से इंसान भी बेहाल हो जाते हैं। ऐसे में अगर बेजुबानों को पानी न मिले, तो वे बेचारे कहां जाएंगे। इसलिए मैं सुबह-शाम पशु-पक्षियों के लिए जंगल में पानी रखकर आता हूं।

करुणा

47 वर्षीय जहांगीर पिछले छह साल से जंगल के पशु-पक्षियों को पानी पिलाते आ रहे हैं। वह रोज लगभग 4 किलोमीटर जंगल में चलते हैं और हर 50 मीटर पर पानी रखकर आते हैं। ऐसी 40 जगह हैं, जहां वे पानी रखते हैं। कहीं टूटे घड़े और बड़े बर्तन रखे हैं, तो कहीं सीमेंट से छोटी-छोटी हौद बनाई हैं। इन्हें वे 'वाटर हाउस' कहते हैं। वे रोज लगभग 400 लीटर पानी जंगली जीवों के लिए पहुंचा रहे हैं। इसके लिए उन्हें बाइक से कई चक्कर लगाने पड़ते हैं। अब तो जंगल के पशु-पक्षी भी उन्हें पहचानने लगे हैं। जब वे पानी भरने जाते हैं, तो जानवर आराम से उनके आस-पास धूमते रहते हैं। कई बार गर्मियों में जब पानी की किल्लत होती है, तब वे यूनिवर्सिटी के हॉस्टल से पानी लेकर जाते हैं। ऐसे में उनसे कोई नहीं पूछता कि वे पानी कहां ले जा रहे हैं।

०० महागुरु बटालियन से खोली रोजगार की राह ००



ओडिशा के सिलु नायक ने भारतीय सेना की कई परीक्षाएँ दीं, लेकिन उत्तीर्ण नहीं हो सके। उन्होंने "ओडिशा औद्योगिक सुरक्षा बल" के लिए अहता प्राप्त की, लेकिन उन्होंने तय किया कि वे इसमें शामिल होने के बजाय अपने जिले के युवाओं को सशस्त्र बलों की परीक्षाओं की तैयारी में मदद करेंगे। नायक कहते हैं, जब मैं सशस्त्र बलों की प्रवेश परीक्षा को कलीयर नहीं कर पाया तो मुझे लगा कि मेरे गांव में नौकरी के अवसर सीमित हैं और सेना में शामिल होना उनमें से एक है जिसके माध्यम से हम सुरक्षित नौकरियां प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए मैंने 'महागुरु बटालियन' संस्थान की स्थापना की है। वे पिछले पांच वर्षों से ओडिशा के अखड़ा जिले में एक नदी के किनारे स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित कर रहे हैं। वे उन्हें शारीरिक दक्षता के प्रशिक्षण के साथ ही 'करंट अफेयर्स' और 'सामान्य ज्ञान' भी पढ़ाते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि युवाओं को कठोर प्रशिक्षण मिले ताकि वे प्रवेश परीक्षा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। दूर-दराज के जिलों से आने वाले छात्रों के लिए वे आवास और भोजन की सुविधा मुफ्त प्रदान करते हैं। नायक ने अब तक 300 युवाओं को प्रशिक्षित किया है, जिनमें से 70 सशस्त्र बलों में शामिल होने में कामयाब रहे हैं। इनमें से 18 भारतीय सेना में, तीन वायु सेना में और छह नौसेना में कामयाब हुए हैं। बाकी ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और सीमा सुरक्षा बल में कामयाबी प्राप्त की है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में उनकी प्रशंसा की थी।



○ अहिंसा यात्रा समाचार ○

जीवन की दशा और दिशा बदल सकता है अणुव्रत : अणुव्रत अनुशास्ता



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण लम्बी पदयात्राएं करते हुए जन जन में शान्ति का संदेश दे रहे हैं। आपकी यह पदयात्रा “अहिंसा यात्रा” के रूप में जग प्रसिद्ध है जिसके मुख्य तीन उद्देश्यों में शामिल हैं – नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति। कोरोना जनित विषम परिस्थितियों में भी उनकी यह यात्रा गांवों, कस्बों और शहरों से गुजरती हुई गतिमान रही है।

छत्तीसगढ़ के दुर्ग में अणुव्रत स्थापना दिवस पर मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा कि अणुव्रत में नैतिकता, अहिंसा, संयम की बात है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हैं, इनसे अपने पर अपना अनुशासन होता है। अणुव्रत व्यक्ति के जीवन की दशा और दिशा बदल सकता है। अणुव्रती बनने के लिए जैन बनना जरूरी नहीं है। कोई अजैन या यहां तक कि नास्तिक आदमी भी अणुव्रती बन सकता है। भले परलोक में विश्वास न करे, पर वर्तमान जीवन में तो विश्वास करे। वर्तमान जीवन को अच्छा बनाने के लिए अणुव्रती बना जा सकता है।

अणुव्रत में अहिंसा की बात है। निरपराध की हिंसा न हो। जाति-संप्रदाय, पार्टी, वर्ण आदि को लेकर दंगा-फसाद, मारकाट हिंसा-हत्या नहीं होनी चाहिए। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने सन् 2002 में गुजरात की यात्रा की थी। उस समय गुजरात में सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे। उन्होंने फरमाया था कि हिंसा विकास का मार्ग नहीं है, यह पतन की ओर ले जाने वाला है।

अणुव्रत अहिंसा—मैत्री की बात बताता है। सबके साथ मैत्री रखो। ईमानदारी रखो। बैर्झमानी-धोखाधड़ी से बचो। ऑफिस-दुकान में देवी-देवताओं की फोटो के साथ ईमानदारी देवी है या नहीं, यह ध्यान रखें। अणुव्रत कहता है, नशामुक्त रहो। नशे के निमित्त से अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। अहिंसा यात्रा में भी अणुव्रत के तत्त्वों की चर्चा की जा रही है ताकि लोगों का जीवन अच्छा बने।

अयुद्धरी ग्राम के श्री साईनाथ अकादमी परिसर में मंगल देशना प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा कि अर्हत् वाड्मय में कहा गया है इस लोक में सारभूत तत्त्व क्या है? भिन्न-भिन्न दृष्टियों से भिन्न-भिन्न उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं। एक आदमी जिसका दृष्टिकोण भौतिक है वह सौच सकता है कि इस असार संसार में भौतिक सुख-भोग व इससे जुड़ी हुई चीज सार है। पैसा सार है। पैसा तो मानो भौतिक दुनिया का ईश्वर है। पैसे से कितने काम हो जाते हैं। हालांकि पैसे से सुविधा तो मिल सकती है, पर पैसे से स्वास्थ्य मिल भी जाए, कहना मुश्किल है। चित्त की शांति पैसे से मिल जाए जरूरी नहीं। पैसे से अशांति ही मिल सकती है। उन्होंने कहा कि संयम करके खाने की चीजों को छोड़ना विशेष बात होती है। संयम आत्मा की दृष्टि से किया जाए तो अच्छी बात होती है। विवशता में छोड़ना संयम नहीं है। सवशता में छोड़ना संयम है। जो सवशता में छोड़ वह त्यागी है। पैसे वाली संपत्ति छोटी संपत्ति है। बड़ी संपत्ति तो सच्चाई, साधना, ईमानदारी, नैतिकता, सरलता वाली है। इस संपत्ति की सुरक्षा का हम ध्यान रखें। सत्य को विदाई न दें, भले पैसे को विदाई दे दें। जीवन में सच्चाई है, तो फिर लक्ष्मी भी नहीं जा सकती। सच्चाई अपने आप में एक लक्ष्मी होती है। हमारी आभा भी एक तरह की श्री-लक्ष्मी है। जहाँ सच्चाई है, वहाँ अच्छी चेतना की आभा-पवित्रता रह सकती है। सच्चाई दुनिया का एक सारभूत तत्त्व है। हम सभी सच्चाई-ईमानदारी, सरलता, नैतिकता इन तत्त्वों को अपने जीवन में रखने का प्रयास रखें। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।





अणुव्रत अनुशास्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुख्यालय में

राष्ट्र की आध्यात्मिक सेवा करता रहे
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : आचार्य श्री महाश्रमण

नागपुर। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमण 25 मार्च की शाम अणुव्रत भवन, नागपुर से विहार कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन के परिसर में पधारे तथा रात्रिकालीन प्रवास किया। सायं प्रतिक्रिमण के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने कहा कि आचार्य प्रवर ने यहाँ पधारकर इस परिसर को और अधिक पावन कर दिया है। आचार्य श्री की इस कृपा से हम अभिभूत हैं, कृतार्थ हैं।

26 मार्च को प्रातः आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्य प्रवर ने कहा कि संघ के साथ हमारे धर्मसंघ का पुराना संबंध है। परम पूज्य आचार्य तुलसी भी नागपुर पधारे थे। सरसंघचालक मोहनराव भागवत जी तो हर वर्ष हमारे पास आ जाते हैं। संभावना है, आगे भी आते रहेंगे, पर आज मैं स्वयं आपके पास आया हूँ। यह मेरे लिए संतोष की बात है। ये संगठन भी राष्ट्र की खूब धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा करता रहे। मौलिक मूल्यों को बढ़ाता रहे। मोहनराव जी मनीषी व्यक्तित्व हैं, ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व, पथ-दर्शन होना अच्छी बात है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में खूब शक्ति है। यह शक्ति आध्यात्मिक-धार्मिक उन्नयन में लगी रहे।

आचार्य श्री महाश्रमण की मुझ पर अहैतुकी
कृपा : सरसंघचालक मोहन भागवत

इस अवसर पर सरसंघचालक मोहन भागवत ने अपने उद्बोधन में कहा कि धर्मसंघ के आचार्यों से मिलना भी एक परंपरा बन गई है। संघ प्रचारक संन्यासी नहीं होते, पर सब छोड़कर संघ का कार्य करते हैं। समाज के भौतिक जीवन का विचार संघ अधिक करता है। हमारे देश में भौतिक विचार भी आध्यात्मिक आधार पर ही किए जाते हैं। सुख के लिए सब भाग-दौड़ करते हैं, पर सुख बाहर के पदार्थों में नहीं है। सुख अपने अंदर होता है।

उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति भी एक है, इसी संस्कृति के आधार पर भारत एक रहा है। आगे भी रहेगा। दुनिया को सुख-शांति देने वाला विश्व-गुरु भी भारत बनेगा। हम लोग संतों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। सफलता प्राप्त होने पर भी अभिमान न आए, इसलिए मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी की तो मुझ पर अहैतुकी कृपा है, जिसके कारण इतना स्नेह रखते हैं। मैंने नागपुर पधारने की प्रार्थना की थी। विशेष कठिनाई के बावजूद आचार्य श्री यहाँ पधारे। इस परिसर को अधिक पावन किया। इनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना शब्दों में असंभव है। भाव है, भाव को आचार्य श्री जानते हैं। जैसे उनकी कृपा पहुँचती है, वैसे हमारा भाव पहुँचता है।





आचार्य तुलसी के 25वें महाप्रयाण दिवस
के अवसर पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
द्वारा आयोजित जूम वेबिनार

"वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और
आचार्य तुलसी का संयम दर्शन"

बुधवार, 23 जून 2021
रात्रि 8:00 बजे

zoom LIVE

Meeting ID : 825 3409 2038
Passcode : 12345

:: निवेदक ::

अणुव्रत विश्व भारती
सोसायटी



विशेष वक्ताओं

पूर्व न्यायाधिपति
श्री जसराज चोपड़ा

राजस्थान उच्च न्यायालय
जयपुर

न्यायाधिपति
श्री गोतम चौखड़िया

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय
बिलासपुर



आचार्य तुलसी का संयम दर्शन सभी समस्याओं का समाधान

25 वें महाप्रयाण दिवस पर अणुविभा की वेबिनार



- ▶ अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के 25वें महाप्रयाण दिवस पर 23 जून को रात 8 बजे से वेबिनार का आयोजन किया गया। 'वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और आचार्य तुलसी का संयम दर्शन' विषयक इस वेबिनार में मुख्य वक्ताओं का स्वागत करते हुए अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए तथा समाज को नयी दिशा प्रदान की। उन्होंने सात दशक पहले ही समझ लिया था कि कठिन से कठिन समस्या का समाधान संयम है। आचार्य श्री ने अणुव्रत के माध्यम से संयम की महत्ता को प्रतिपादित किया। आज चाहे अशांति, तनाव जैसी व्यक्तिगत समस्याएं हों या पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, कुरीतियों जैसी वैश्विक समस्याएं, इन सभी का समाधान संयम से संभव है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति अणुव्रत के दर्शन को समझकर इसे अपना सकता है। आने वाला समय संयम आधारित जीवन शैली अपनाने का समय होगा। दुनिया संयम की महत्ता को समझेगी और इसे अपनाएगी। ऐसे में संयम के दर्शन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना ही अणुव्रत कार्यकर्ताओं की आचार्य श्री तुलसी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
- ▶ श्री जैन ने इस अवसर पर अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अणुव्रत प्रबोधक योजना का भी शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि इसके तहत अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2020 के करीब 4000 प्रतिभागियों में से चयनित 340 श्रेष्ठ प्रविष्टियों में से 100 लोगों का चयन कर उन्हें अणुव्रत एम्बेसेडर बनाया जाएगा। साथ ही अणुव्रत परीक्षाओं के माध्यम से नई पीढ़ी के बच्चों और युवाओं का चयन किया जाएगा जो अणुव्रत के एम्बेसेडर बन सकें।
- ▶ राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज चोपड़ा ने कहा कि वैश्विक परिदृश्य के चार आयाम हैं—वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक। जब तक रोग का परीक्षण नहीं होगा, उसका उपचार संभव नहीं है। इसलिए इन चारों आयामों के आधार पर देखा जाए कि वस्तुतः आज का वैश्विक परिदृश्य क्या है।
- ▶ आज आदमी का व्यक्तिगत स्वार्थ इतना संकीर्ण और संकुचित हो चुका है कि उसका एक ही ध्येय रह गया है—पैसा आए मुझी में, दुनिया जाए भझी में। इसी वजह से आज रिश्तों में दरारें आ गई हैं। आज वासना की पूर्ति की भूख इतनी बढ़ गई है कि 3 से 6 साल की अबोध बच्चियां भी इनकी शिकार बन रही हैं। पाश्चात्य देशों में मुक्त और स्वतंत्र यौनाचार को मान्यता प्रदान करवाने के लिए



आंदोलन—प्रदर्शन हो रहे हैं। आज सरलता, सहजता और शालीनता का स्थान प्रदर्शन और बनावट ने ले लिया है। शील और सदाचार के सौरभ का स्थान सेंट और लेवेंडर्स की खुशबू ने ले लिया है। बच्चों का बचपन टेलीविजन और इंटरनेट ने छीन लिया है। इसलिए आज नैतिकता और सदाचार सांस लेने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। वेंटिलेटर पर हैं। परिस्थितियां ऐसी हो गई हैं कि आदमी कितना नीचे गिर जाएगा, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है।

- ▶ सामाजिक सरोकार की बात करें तो आज पैसा परमेश्वर, जायदाद जगदीश्वर और संपत्ति सर्वेश्वर की तरह पूजा जाता है। पैसे का महत्व इतना बढ़ गया है कि सारे नाते—रिश्ते पैसे की तराजू पर तौले जा रहे हैं। मैं मानता हूं कि पैसे का काफी महत्व है, मगर पैसा बहुत कुछ होकर भी सब कुछ नहीं है। उसकी भी अपनी कमजोरियां हैं, सीमाएं हैं। पैसे से भोजन खरीदा जा सकता है, भोजन नहीं, पलंग खरीद सकते हैं, नींद नहीं। पैसे से सुख—सुविधाओं के साधन खरीदे जा सकते हैं, आराम नहीं। आज पैसे को इतना महत्व दे दिया गया है कि सामाजिकता सांस लेने में कठिनाई महसूस कर रही है। सारे सामाजिक सरोकार आज पैसे पर केन्द्रित हैं। इसका कारण है कि हमारी सामाजिक संस्कृति में व्यक्ति का महत्व बढ़ गया है। इसलिए न परिवार का महत्व रह गया है न समाज का। आज व्यक्ति केन्द्रित समाज बन गया है। आदमी किसी की बात सुनने या मानने को तैयार नहीं है। हम और हमारे लोग की संस्कृति पल्लवित हो रही है।
- ▶ जहां तक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की बात है तो कुर्सी की उठापटक में झूठ का बोलबाला और सच का मुँह काला है। सत्ता की दौर में आदमी अंधा हो गया है। धार्मिक कट्टरता, जातिवाद, अलगाववाद, प्रदेशवाद, आतंक के प्रहार से राष्ट्रीय एकता की भावना तार—तार हो रही है। बोलने की स्वतंत्रता के नाम पर लोगों को बरगलाया जा रहा है।
- ▶ अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की बात करते हुए जस्टिस चोपड़ा ने कहा कि वैश्विक परिस्थितियां भी उत्साहजनक नहीं हैं। हर राष्ट्राध्यक्ष खुद को प्रभावशाली साबित करने में लगा है। दूसरे की जमीन हथियाने में लगा है। आज खतरा है कि किसी सिरफिरे राष्ट्राध्यक्ष ने यदि परमाणु बम का बटन दिया तो महाविनाश का ऐसा ताण्डव मचेगा उससे होने वाली व्यथा गाथा को न कोई कहने वाला बचेगा, न सुनने वाला। हालांकि ऐसा नहीं है कि दुनिया में अच्छे लोग नहीं हैं, दुनिया में अच्छे विचार वाले लोग भी हैं। मगर उनकी संख्या इतनी कम है कि वे मजबूर हैं। उन्हें हर पल अपनी ही रक्षा की चिंता सताती रहती है। सारे संसार में पर्यावरण प्रदूषित है। ऐसी स्थिति में आचार्य तुलसी द्वारा प्रस्तुत संयम की अवधारणा ही एकमात्र समाधान है। शांति, संयम, स्वानुशासन, स्वनियंत्रण, नैतिकता के नियमों को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार करके ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। संयम का सार प्राप्त ज्ञान को जीने में है, जीवन में उतारने में है। आचार्य तुलसी ने संयम को सर्वसुलभ बनाने के लिए अणुव्रत संहिता में पिरोया। सामाजिक कुरीतियों का खात्मा किया। अणुव्रत जनर्धम बन गया। यह व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ने का दर्शन है।
- ▶ दूसरे प्रमुख वक्ता छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री गौतम चौरड़िया ने वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी युग निर्माता थे। उन्होंने समाज को अनेक अवदान देने के साथ ही व्यक्तियों का निर्माण भी किया। सत्ययुग से कलियुग तक निरापद युग कभी नहीं रहा। कुछ न कुछ समस्याएं हमेशा ही रही हैं। हर युग में समस्याएं अलग—अलग रूपों में आती रहीं और महापुरुषों ने अपने चिंतन से उनका समाधान सुझाया। ऐसे में हम पर निर्भर करता है कि हम कैसे अमृत बांट सकें और विष को पचा सकें। कलियुग में संगठन में शक्ति होती है। ऐसे में उन्होंने आचार्य तुलसी और उनके विचारों से जुड़े लोगों को एक साथ लाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि आज 3—4 करोड़ मामलों को निपटाना 10—20 हजार न्यायाधीशों के वश की बात नहीं है। ऐसे में लोग यदि संयम रखें, तो किसी मामले के थाने या अदालत तक जाने की नौबत ही नहीं आएगी।
- ▶ गायक श्री अमित सिंघी ने “तुलसी तेरा नाम हमको प्राणों से भी प्यारा है” गीत का मधुर संगान कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे पहले अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए आचार्य तुलसी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया तथा उनके अवदानों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में अणुविभा के महामंत्री श्री भीखम सुराणा ने सभी का आभार व्यक्त किया।





- ❖ अभी हाल ही पश्चिम बंगाल, असम और तमिलनाडु समेत पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव तथा राजस्थान की तीन विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए। लोकतंत्र का यह यज्ञ शुचितापूर्ण तरीके से संपन्न हो, ईमानदार और चरित्रवान उम्मीदवार चुनकर सदन में पहुंचें तथा मतदाताओं को झूठे प्रलोभनों से आकर्षित करने वाले अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकें, इसके लिए चुनाव शुद्धि अभियान अणुव्रत आंदोलन के प्रमुख प्रकल्पों में शामिल है।
- ❖ अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री संचय जैन, महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा एवं श्री प्रताप दूगड़ तथा चुनाव शुद्धि अभियान के राष्ट्रीय संयोजक श्री राजकरन दफतरी के निर्देशन में चुनावशुद्धि अभियान जोर-शोर से चलाया गया।
- ❖ सिलीगुड़ी से श्री राकेश मालू को पूरे पश्चिम बंगाल में चुनाव शुद्धि अभियान चलाने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। पूरे पश्चिम बंगाल में राजनीतिक पार्टियों के प्रमुख नेताओं से मुलाकात कर उन्हें अणुव्रत के नियमों एवं चुनाव संहिता के बारे में बताया गया। बड़ी संख्या में मतदाताओं से भी बात की गई। समाचार पत्रों में इसे व्यापक कवरेज मिला।
- ❖ श्री राकेश मालू और उनकी टीम में शामिल श्री मदन मालू, श्री सुरेंद्र घोड़ावत, श्री मेघराज सेठिया, श्री मदन सचेती, श्रीमती शशिकला बैद आदि ने जिस निष्ठा व कर्तव्यशीलता के साथ कार्य किया, वह सभी के लिए प्रेरणा योग्य है। सुराणा ने अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी के अध्यक्ष श्री तोलाराम सेठिया और उनकी टीम की भी सराहना की।
- ❖ असम में चुनावशुद्धि अभियान का संयोजकीय दायित्व श्री छत्तरसिंह चौरड़िया के पास था। श्री चौरड़िया ने गुवाहाटी सहित विभिन्न क्षेत्रों में पोस्टर, पैम्फलेट एवं बैनर आदि के माध्यम से जन जागरूकता का प्रयास किया एवं अनेक उम्मीदवारों से सम्पर्क किया।



‘संयम की समसामयिकता’ पर अणुव्रत संसदीय मंच की वेबीनार



श्री मेघवाल ने कोरोना की दूसरी लहर के कारण उत्पन्न हालात का जिक्र करते हुए कहा कि संयम से ही इसका हल निकलेगा। हमेशा सकारात्मक सोच की सीख देते हुए उन्होंने अकबर और बीरबल के एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि समय चाहे कितना भी विपरीत क्यों न हो, गुजर ही जाएगा।

□ अणुव्रत संसदीय मंच की ओर से महावीर जयंती के अवसर पर ‘संयम की समसामयिकता’ विषय पर ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। इसमें कई सांसदों के साथ देशभर से विभिन्न अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

□ अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक और केन्द्रीय भारी उद्योग व संसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर का ‘जीओ और जीने दो’ का सिद्धांत पहले भी महत्वपूर्ण था और मौजूदा समय में भी काफी महत्वपूर्ण है। इस सिद्धांत को हमने भुला दिया, इसीलिए कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी का सामना हमें करना पड़ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान देश के विभाजन की त्रासदी से उपजे हालात को देखते हुए आचार्य श्री तुलसी ने लोगों को संयम की सीख देने के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। आचार्य श्री का कहना था कि अणुव्रत अनेक समस्याओं का समाधान है। अणुव्रत हमें अपने पर अपना अनुशासन सिखाता है। यह जीवन के लिए सर्वाधिक आवश्यक है। श्री मेघवाल ने कहा कि प्रकृति ने हमें संयम का पाठ सिखाया, भगवान महावीर ने हमें संयम का पाठ पढ़ाया। यह पृथ्वी संसार के सभी जीवों के लिए है, केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं। हमने इस तथ्य को भुला दिया। तथाकथित विकास के नाम पर प्रकृति का अत्यधिक दोहन किया गया और विभिन्न कठिनाइयों के रूप में आज परिणाम हमारे सामने हैं।

□ मेरठ से सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि यदि दुनिया ने अपरिग्रह के सिद्धांत का पालन किया होता, प्रकृति के साथ समन्वय करते हुए अपनी आवश्यकताओं की सीमा रखी होती तो आज इस महामारी का सामना नहीं करना पड़ता।

□ अहमदाबाद से सांसद डॉ. किरीट भाई सोलंकी ने कहा कि अणुव्रत संसदीय मंच के माध्यम से हम समाज में अहिंसा के विचार तथा सकारात्मकता की भावना को प्रसारित करते हैं। उन्होंने लोकसभा में ग्रुप-16 की बैठकों में वरिष्ठ साथी सांसद दिलीप गांधी की सक्रिय उपस्थिति को रेखांकित किया।

□ वडोदरा की सांसद श्रीमती रंजना बेन भट्ट ने कहा कि कोरोना के इस संकट काल के दौरान हम सभी को सेवा कार्यों में आगे बढ़कर सहभागिता निभानी चाहिए और हम ऐसा कर भी रहे हैं।

□ गुवाहाटी से सांसद श्रीमती क्वीन ओझा ने कहा कि मौजूदा समय में भगवान महावीर के बताए गए अहिंसा के मार्ग पर चलना आवश्यक हो गया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि कोरोना के संकट के इस दौर से हम अवश्य ही पार पाएंगे।

□ सिरसा से सांसद श्रीमती सुनीता दुग्गल ने कहा कि आज के समय में भगवान महावीर के उपदेशों पर अमल करना आवश्यक हो गया है। संकट के इस दौर में हम आगे बढ़कर एक-दूसरे की मदद करें। मौजूदा



समय में धैर्य और संयम का परिचय देना बहुत जरूरी है। इससे हम बेवजह की आपाधापी से बच सकेंगे। हमने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विचारों की बुकलेट बनवाकर हवाई जहाजों में रखवाई ताकि लोग यात्रा के दौरान उसे पढ़ें और उन विचारों को जीवन में अपनाएं।

□ हिमाचल प्रदेश से पूर्व सांसद वीरेंद्र कश्यप ने कहा कि अणुव्रत संसदीय मंच के गठन के समय इससे जुड़े सांसदों ने ग्रुप-16 बनाया था। संसद सत्र के दौरान हम ग्रुप-16 के सांसद मिल-बैठकर अणुव्रत से जुड़े विषयों पर चर्चा करते थे।

□ इससे पहले मुख्य वक्ता अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत का संदेश है : संयम ही जीवन है। आज जब सारा विश्व कोरोना की महामारी से जूझ रहा है, वैज्ञानिक और चिकित्सक इसके इलाज के तरीकों को लेकर शोध और मथन में जुटे हैं, ऐसे समय में संयम इसके सबसे बड़े इलाज के रूप में स्थापित हो चुका है। आचार्य तुलसी ने जब अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया तब शायद उनके दिमाग में यह बात आई होगी कि आने वाले समय में दुनिया कैसी-कैसी समस्याओं का सामना करने वाली है और उन्होंने एक वाक्य में इसका समाधान दिया था – संयम ही जीवन है और जहां संयम नहीं है, वहां समस्याएं ही समस्याएं हैं। इतने सहज व सरल शब्दों में आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का दर्शन दिया, जिसमें दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान निहित है। प्रश्न यही है कि हम इसे कैसे अपनाएं क्योंकि यह ऐसा समाधान नहीं है जिसे हम दुनिया को बता दें और दुनिया इसे सीख ले। बल्कि यह ऐसा समाधान है जिसे खुद अपने जीवन में उतारना पड़ता है। तभी हम दुनिया को समाधान की राह दिखा सकते हैं। हमें ऐसे प्रयास करने होंगे जिससे हम संयम के संदेश को जन-जन तक पहुंचा सकें और इस संदेश के माध्यम से संयम की जीवन शैली को जन-जन की जीवन शैली बना सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अणुविभा अनेक प्रकल्पों के माध्यम से राजनेताओं, साहित्यकारों, समाज के अन्य वर्गों तथा आमजन तक पहुंचने का प्रयास करती है। अभी हाल ही पश्चिम बंगाल और असम में हो रहे विधानसभा चुनाव में हमारे कार्यकर्ताओं ने चुनाव शुद्धि अभियान चलाकर स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना और संयमित जीवनशैली को



जन-जन की जीवनशैली बनाने का संदेश पहुंचाया।

सांसद दिलीप गांधी को श्रद्धांजलि

□ इस अवसर पर अणुव्रत संसदीय मंच के वरिष्ठ सदस्य और गुजरात के अहमदनगर से सांसद रहे स्व. दिलीप गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अटल बिहारी सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे गांधी का कोरोना के कारण गत 17 मार्च, 2021 को निधन हो गया था। संसदीय मंच के अध्यक्ष श्री अर्जुनराम मेघवाल ने सरल और हंसमुख स्वभाव के धनी श्री दिलीप गांधी के साथ बिताए क्षणों को याद करते हुए उनके परिवारजनों को संकट की इस घड़ी में साथ रहने का भरोसा दिलाया। मेरठ से सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल, अहमदाबाद से सांसद डॉ. किरीट भाई सोलंकी, वडोदरा की सांसद श्रीमती रंजना बेन भट्ट, गुवाहाटी से सांसद श्रीमती कवीन ओझा, सिरसा से सांसद श्रीमती सुनीता दुग्गल, हिमाचल प्रदेश से पूर्व सांसद वीरेंद्र कश्यप ने भी स्व. दिलीप गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

□ अणुविभा के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने अणुव्रत विश्व भारती तथा इसके कार्यकर्ताओं की ओर से स्व. दिलीप गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी पत्नी श्रीमती सरोज गांधी को भरोसा दिलाया कि हम सभी हमेशा आपके साथ हैं। कार्यक्रम में भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व सांसद तथा अणुव्रत समिति कानपुर के संरक्षक रहे स्व. श्याम बिहारी मिश्र को भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 20 अप्रैल को कोरोना की वजह से उनका निधन हो गया था।

□ कानपुर से श्री टीकमचंद सेठिया और चेन्नई से श्रीमती माला कातरेला ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया। अंत में अणुविभा के उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने विषय पर अपनी बात रखते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।



पत्रिका उपहार योजना अणुविभा की महत्वपूर्ण मासिक पत्रिकाएं “अणुव्रत” और “बच्चों का देश” जनजीवन में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने वाले विशिष्ट प्रकाशन हैं। इनको अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा कर हम अणुव्रत की सर्वसमावेशी विचारधारा को प्रसारित करते हैं और सामाजिक ताने-बाने में सकारात्मक बदलाव के वाहक बनते हैं। इस दिशा में अणुव्रत समितियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। इन प्रयासों को नई गति प्रदान करने के उद्देश्य से अणुविभा द्वारा एक उपहार योजना प्रारम्भ की गई है जिसमें योजनाकाल में सभी सहभागी लाभान्वित होंगे –

- ❖ अणुव्रत समितियों को 10 प्रतिशत की विशेष छूट
- ❖ सदस्य बनाने वाले प्रतिनिधियों को 10 सदस्य बनाने पर चांदी का सिक्का
- ❖ सदस्यों को प्रत्येक वर्ष पर एक माह की पत्रिका अतिरिक्त

○ कुछ महत्वपूर्ण निवेदन ○

- स्थानीय अणुव्रत समिति सभी पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं सदस्यों को “अणुव्रत” एवं “बच्चों का देश” का ग्राहक बनाएं। शत प्रतिशत सदस्य ग्राहक होने पर उस अणुव्रत समिति को सम्मानित किया जाएगा।
- पत्रिका नहीं पहुंचने की शिकायतों के लिए समितियां अपने यहां शिकायत प्रकोष्ठ का गठन करें एवं प्रतिमाह की 15 तारीख तक शिकायतकर्ता का नाम, पता व ग्राहक संख्या दिल्ली ऑफिस को प्रेषित करें ताकि अतिशीघ्र उनको पत्रिका की अतिरिक्त प्रति भेजी जा सके।
- समिति सदस्यों के अतिरिक्त वहां की केंद्रीय व क्षेत्रीय संस्थाओं, स्कूलों, अस्पतालों, वाचनालय पुस्तकालयों, ले खाने सहित्यकारों, जनप्रतिनिधियों, विभिन्न क्षेत्र

के प्रतिनिधि विशिष्टजनों तक ये दोनों पत्रिकाएं पहुंचें, इसका विशेष प्रयास करें।

- दानदाताओं के सहयोग से भी इन्हें पत्रिकाएं निशुल्क प्रेषित की जा सकती है। 100 प्रतियों से अधिक संख्या होने पर सौजन्यकर्ता के नाम का स्टीकर पत्रिका में लगाया जा सकेगा।
- अणुव्रत पत्रिका में कुछ पृष्ठ विज्ञापन के लिए आरक्षित किए गए हैं। एक पृष्ठ का एक माह का शुल्क 21000/- है। समितियां व्यापारिक प्रतिष्ठानों आदि से विज्ञापन प्राप्त कर इसमें सहभागी बनें।
- कृपया अधिक से अधिक पत्रिका सदस्य बना कर इस अभियान को सफल बनाएं। सर्वाधिक ग्राहक बनाने वाली 10 अणुव्रत समितियों को सम्मानित किया जाएगा।
- इस योजना से जुड़ने के लिए पत्रिका प्रसार संयोजक से **9811242365** पर यथाशीघ्र सम्पर्क करें। अणुव्रत समितियों के अतिरिक्त भी इच्छुक व्यक्ति इस योजना से जुड़ सकते हैं।

श्री कन्हैयालाल चिप्पड़ का विशिष्ट सहयोग



श्री कन्हैयालाल चिप्पड़ अणुव्रत कार्यक्रमों से लम्बे समय से जुड़े रहे हैं। वर्तमान में वे अणुविभा के दक्षिणांचल के संगठन संयोजक हैं। आपको जब पत्रिका उपहार योजना की जानकारी मिली तो स्वप्रेरित होकर इसके आर्थिक पक्ष की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली जोकि पाँच लाख रुपये है। इससे इस योजना को प्रस्तुत करने में अणुविभा को बड़ी ताकत मिली। श्री चिप्पड़ समय-समय पर सामाजिक व धार्मिक कार्यों के लिए उदारतापूर्वक अनुदान देते रहते हैं। इसमें आपके दोनों सुपुत्रों राजेश एवं विमल का भी पूर्ण सहयोग रहता है। आप आमेट के मूल निवासी हैं और वर्तमान में बंगलुरु में मयूर टेक्सटाइल्स, मयूर जेवेलर्स व मयूर इंटरप्राइजेज के नाम से व्यवसाय में संलग्न हैं।





- ❖ अणुविभा के तत्वावधान में हुआ 'अभिवादन होली' का आगाज।
- ❖ होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते सुरक्षित रूप से होली त्यौहार मनाने के उद्देश्य से एक अभियान अणुव्रत कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया गया।
- ❖ देश भर में फैली अणुव्रत समितियों ने 'जान है तो जहान है' 'को ध्यान में रखते हुए अभिवादन होली' के कार्य को बड़े उत्साह के साथ सम्पादित किया।
- ❖ समितियों की ओर से किये गये प्रयासों में स्थानीय संगठनों ने भी अपनी सहभागिता दर्ज करवाई।
- ❖ कई जगह तो नगरपरिषद द्वारा भी इस कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार किया गया।
- ❖ अणुव्रत समितियों ने सार्वजनिक स्थानों पर बैनर/होर्डिंग्स लगाकर व सोशल मीडिया पर डिजिटल मैसेज के माध्यम से 'अभिवादन होली' का संदेश दिया।
- ❖ कोराना संक्रमण से बचाव के लिए जनहित में किये गये इन कार्यों को समाचार-पत्रों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अच्छा कवरेज मिला।
- ❖ पंजाब प्रान्तीय सभा व युवक परिषद, महिला मंडल का भी सहयोग मिला।
- ❖ जनहित के इस कार्य में चारित्रात्माओं का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रशासन के आला अधिकारियों के साथ-साथ राजनीति के दिग्गजों ने भी भाग लिया।
- ❖ राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, असम, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के अलावा दिल्ली और चण्डीगढ़ में एकरूपता से कार्य सम्पन्न हुआ।
- ❖ अणुविभा के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों व पूरी टीम ने इस कार्य में सहभागिता निभाई।

**इन अणुव्रत समितियों ने
'अभिवादन होली' के अभियान
को सक्रियता के साथ आगे बढ़ाया :**

अहमदाबाद	अजमेर
औरंगाबाद	बालोतरा
सिलीगुड़ी	राजसमंद
सुजानगढ़	जयपुर
लाडनूं	हैदराबाद
दिल्ली	गंगाशहर
कटक	दलखोला
ग्रेटर सूरत	फतेहाबाद
हिसार	सायरा
पालघर	चिकमंगलूर
विजयवाड़ा	हावड़ा
मुम्बई	सादुलपुर-राजगढ़
भिवानी	चण्डीगढ़
हांसी	सिरसा
जोधपुर	कालावली
भीलवाड़ा	केसिंगा
नगांव	कानपुर
पीलीबंगा	बंगाईगांव
भट्टूकलां	बारडोली
खारूपेटिया	सवाईमाधोपुर
किशनगंज	भुवनेश्वर
भुज	मैसूर
गुवाहाटी	टोहाना



अणुव्रत संपोषक



प्रताप दूगड़

पिता	: स्व. मानिक चंद दूगड़
माता	: स्व. अनोप देवी दूगड़
जन्मतिथि	: 5 सितम्बर, 1964
मूल निवासी	: लाडनूं
निवासी	: कोलकाता

- ॐ श्री प्रताप सिंह दूगड़ प्रतिभा संपन्न व्यक्ति हैं। व्यवसाय के साथ—साथ श्री दूगड़ एवं उनका परिवार समाज सेवा में सदैव तत्पर रहे हैं। आपका जन्म सन् 1964 में लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। आपकी परवरिश एवं शिक्षा कोलकाता में हुई तथा विगत लगभग 35 वर्षों से कोलकाता में व्यवसाय कर रहे हैं।
- ॐ सामाजिक, व्यावसायिक एवं दैनिक जीवनचर्या में अनुशासन एवं वचनबद्धता आपका मूल मंत्र रहा है। आपको धार्मिक संस्कार विरासत में मिले हैं।
- ॐ व्यावसायिक जीवन की व्यस्तताओं के बावजूद श्री दूगड़ अनेक धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, संघीय संस्थाओं के उन्नयन हेतु लंबे समय से सेवारत हैं।

॥ दायित्व ॥

- ॐ उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा में सहमंत्री के रूप में 2 वर्षों तक तथा आर्बिट्रेटर के रूप में 6 वर्षों तक
- ॐ तेरापंथ युवक परिषद् कोलकाता में कोषाध्यक्ष एवं अध्यक्ष
- ॐ अणुव्रत महासमिति में उपाध्यक्ष के रूप में 6 वर्षों तक
- ॐ विकास परिषद् में अमृत सांसद के रूप में 2 वर्षों तक
- ॐ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता में कार्यसमिति सदस्य के रूप में सेवा प्रदान कर चुके हैं
- ॐ वर्तमान में अणुविभा में उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं।

अणुव्रत परिवार की ओर से आपके उज्ज्वल भविष्य की अशेष मंगलकामनाएं।

अणुव्रत आंदोलन

कोरोना से जंग में आपका सबसे बड़ा हथियार

भावनाओं पर संयम

* प्रतिक्रिया करने पर संयम
 * आलोचना करने पर संयम
 * आवेश पर संयम
 * इच्छाओं पर संयम

संयम ही जीवन है

असंयम आपको कठिनाई में डाल सकता है

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी से संबद्ध
 अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत
 द्वारा जनहित में प्रसारित

अणुव्रत आंदोलन

कोरोना से जंग में आपका सबसे बड़ा हथियार

सोच का संयम

* घबराएं नहीं, सामना करें
 * सकारात्मक सोचें
 * प्रेरक साहित्य पढ़ें
 * नकारात्मक खबरों से बचें

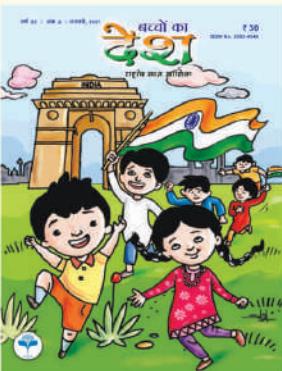
संयम ही जीवन है

असंयम आपको कठिनाई में डाल सकता है

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा जनहित में प्रसारित



अणुव्रत समाचार



राजसमंद

बच्चों का देश पत्रिका को राष्ट्रीय उपलब्धि

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की ओर से संचालित दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' को राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ बाल पत्रिका के रूप में पुरस्कृत किया है। इसके तहत पत्रिका को 50 हजार रुपये की मानद राशि प्रदान की गई। कोरोना संक्रमण से उत्पन्न हालात के मद्देनजर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की ओर से अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा के आवास पर जाकर उन्हें सम्मान राशि 50 हजार रुपये का चेक भेंट किया गया।

बच्चों में संस्कार संवर्धन की दिशा में कई दशकों से कार्यरत अणुव्रत विश्व भारती की मासिक बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' का पिछले 22 वर्षों से नियमित प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका देशभर के विद्यालयों, बाल साहित्यकारों, परिवारों और बच्चों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। देशभर से अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने इस राष्ट्रीय उपलब्धि के लिए पत्रिका के संपादक श्री संचय जैन, सह संपादक श्री प्रकाश तातेड़ सहित पूरी टीम को बधाई दी है।



हैदराबाद

'आर्थिक सुदृढ़ता के लिए नैतिकता आवश्यक' विषयक संगोष्ठी

अणुव्रत समिति हैदराबाद की ओर से 4 अप्रैल को तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में 'आर्थिक सुदृढ़ता के लिए नैतिकता आवश्यक' विषय पर विशेष संगोष्ठी हुई। इस अवसर पर साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कहा कि समाज अर्थ तंत्र के सहारे चलता है, पर इस अर्थ को

अनैतिक तरीकों से प्राप्त करने से बचना चाहिए। अनैतिकता द्वारा प्राप्त अर्थ के उपभोग को रोकने में महिलाओं का विशिष्ट योगदान हो सकता है। अनैतिकता से प्राप्त धन से व्यक्ति भोग के विपुल साधन तो प्राप्त कर सकता है, पर मन—मस्तिष्क व शरीर से स्वरथ व निर्मल नहीं रह सकता।

मुख्य वक्ता साध्वीश्री डॉ. योगक्षेम प्रभा जी ने कहा कि सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक स्वच्छता व नैतिकता को सर्वोपरि मानकर व्यापार करने पर आर्थिक प्रगति कर सकते हैं। व्यापार में गुणवत्ता के साथ किसी प्रकार का समझौता व्यापार व व्यापारी की प्रतिष्ठा को कम ही करता है और अगर एक बार प्रतिष्ठा पर आंच आती है तो पुनः प्रतिष्ठित होना दुष्कर हो जाता है। नैतिकता के साथ किया गया विकास दृढ़ व स्थायी होता है।

अध्यक्ष श्री प्रकाश एच भंडारी ने अतिथियों का स्वागत किया व साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेरापंथी सभा सिकंदराबाद के लक्ष्मीपत बैद ने समिति को कार्यक्रम के आयोजन के लिए बधाई दी। सहमंत्री श्रीमती सविताराय सोनी ने धन्यवाद ज्ञापन तथा मंत्री श्री अशोक मेड़तवाल ने कार्यक्रम का संचालन किया।



अणुव्रत समाचार



अहमदाबाद

300 पुलिसकर्मियों के बीच संयमित जीवनशैली कार्यशाला

अणुव्रत समिति अहमदाबाद की ओर से 2 अप्रैल को सुभाष ब्रिज स्थित जे.डी.नगरवाला पुलिस स्टेडियम में पुलिसकर्मियों के लिए संयमित अणुव्रत जीवनशैली विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर एसीपी श्री के.एल. मकवाणा ने सभी पुलिसकर्मियों से अणुव्रत के नियमों को अपनाने

का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इससे प्रामाणिकता, संयमित आचरण, व्यसन मुक्ति जैसे गुणों का विकास होगा और संयमित जीवन जीने की कला सीखने को मिलेगी। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य श्री राकेश नौलखा ने बताया कि अणुव्रत से हर वर्ग, जाति और संप्रदाय के लोग जुड़ सकते हैं, छोटे-छोटे नियमों से हर व्यक्ति में परिवर्तन हो सकता है।

समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश बागरेचा ने कहा कि अणुव्रत एक अहिंसक और संयम आधारित जीवनशैली है, जो व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण करके स्वकल्याण का आधार तैयार करती है।

समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री जवेरीलाल संकलेचा ने नशामुक्ति व स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिए प्रेक्षाध्यान व अन्य उपयोगी प्रयोगों का अभ्यास कराया। सहमंत्री श्रीमती लाडदेवी बाफना ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में एसीपी श्री के.एल. मकवाणा का अणुव्रत अंगवस्त्र पहनाकर व साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यशाला में उपस्थित 300 से अधिक पुलिसकर्मियों को अणुव्रत आचार संहिता के पॉकेट कार्ड वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री मनोज सिंधी ने तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष श्री प्रकाशचंद धींग ने किया।



सायरा

अणुव्रत शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन

अणुव्रत समिति, सायरा की ओर से 30 मार्च को अणुव्रत शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वी डॉ. शुभ प्रभाजी ने अणुव्रत का महत्व समझाते हुए कहा कि छोटे-छोटे नियमों का संकल्प

करके जीवन को परिवर्तित किया जा सकता है। साध्वीश्री नीति प्रभाजी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वीश्री कुशल प्रभाजी ने भी विचार रखे।

समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री गिरधारी लाल व्यास ने बताया कि कैसे हम जीवन में संस्कार भर सकते हैं। उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय सायरा के नौशाद सर ने अणुव्रत सेवाभावी स्वर्गीय जसराज मेहता को याद करते हुए कहा कि हम दोनों ने यहां कई स्कूलों में अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए।

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल सायरा के शिक्षक श्री सोहनलाल मेघवाल और सायरा के सरपंच श्री सुरमा राम ने भी विचार व्यक्त किए। वार्ड पंच रेणुकादेवी धोका ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री जोधराज मेहता का विशेष सहयोग रहा।



अणुव्रत समाचार

लाडनूं

अणुव्रत समिति ने भेंट किए एक सौ परिंदे

अणुव्रत समिति लाडनूं ने स्व. अभिनव बैद की स्मृति में स्थानीय सेवा भारती संस्थान को पक्षियों के 100 परिंदे भेंट किए। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद, मंत्री डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल तथा सेवा भारती के कार्यकर्ताओं सहित बजरंगलाल यादव, राजेश भोजक, प्रकाश सोनी, रामेश्वरलाल जाट, कानाराम चौधरी, लोकेन्द्र नरुका, विवेक यादव सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

वहीं, अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में स्व. लिखमीचंद सिंघी और स्व. श्रीमती अमानदेवी सिंघी की पुण्य स्मृति में पुष्पराज सिंघी, किरणचंद सिंघी, कैलाशचंद सिंघी, प्रकाशचंद सिंघी एवं प्रभा बैद (लाडनूं—अनपरा—कोलकाता—नवसारी) के आर्थिक सौजन्य से जरूरतमंद परिवारों को राशन किट एवं मास्क वितरण किया जा रहा है। साथ ही इन्हें नशामुक्ति

का संकल्प भी दिलवाया जा रहा है।

इस अवसर पर सिंघी परिवार के प्रतिनिधि रमेश सिंह राठौड़, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, हनुमानमल शर्मा, राजाराम फौजी, मनीष प्रजापत, रामसिंह रैगर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। स्व. भंवरलाल सोहनीदेवी व अभिनव बैद की स्मृति में शांतिलाल अभिषेक बैद के आर्थिक सौजन्य से जरूरतमंद परिवारों को राशन किट एवं मास्क वितरण किया जा रहा है।

अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने बताया कि समिति की ओर से शीघ्र ही अणुव्रत जीवन शैली अपनाओ जन-जागरण अभियान चलाने के साथ ही अणुव्रत आरोग्य केन्द्र का नियमित संचालन भी किया जायेगा। इस अवसर पर समिति के सदस्य नपा के पूर्व उपाध्यक्ष भाणु खां टाक, श्रीमती प्रेम बैद, डॉ. मनीषा जैन, बहादुर खां, शरद जैन, अयूब खां, बजरंग जांगिड़, अभिषेक बैद सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

भीलवाड़ा

अणुव्रत स्लोगन प्रतियोगिता में अनुष्का प्रथम

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की ओर से 6 से 15 वर्ष के बच्चों के लिए ऑनलाइन अणुव्रत स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता के निर्णायक वैज्ञानिक श्री करणसिंह सिंघी थे।

समिति की अध्यक्ष श्रीमती आनंदबाला टोडरवाल ने व्हाट्सएप के माध्यम से परिणाम घोषित किये। इसमें अनुष्का कोठारी ने प्रथम, लविश कंठेड ने द्वितीय और आरोही जैन व काव्या मेहता ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। समिति के मंत्री श्री राजेश चोरडिया ने बताया कि प्रतियोगिता की संयोजक श्रीमती सुमन लोढ़ा व श्रीमती प्रेक्षा मेहता थीं।

हमारे विशिष्ट शहयोगी सदस्य



श्री मदनलाल मालू

पिता	:	श्री मोहनलाल मालू
माता	:	स्व. श्रीमती कलादेवी मालू
प्रवासी	:	सिलीगुड़ी
मूल निवासी	:	साढुलपुर, राजस्थान
व्यवसाय	:	सूखे मेवे
शिक्षा	:	बी.कॉम

दायित्व ::

- ◎ मंत्री, तेरापंथ युवक परिषद (दो कार्यकाल)
- ◎ अध्यक्ष, तेरापंथ युवक परिषद
- ◎ श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा सिलीगुड़ी के मंत्री, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष
- ◎ अणुव्रत महासमिति में राष्ट्रीय संगठन मंत्री
- ◎ अणुव्रत महासमिति में समन्वय समिति के सदस्य

सभी अणुव्रत समितियों से निवेदन है कि वे अपने कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट एवं चयनित फोटो anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ईमेल के माध्यम से भी भेजें, तभी उन्हें पत्रिका में प्रकाशित करना संभव हो पाएगा



जीवनशैली कार्यशाला

कोरोना से जंग में 'अणुव्रत' सबसे बड़ा हथियार

➡️ अप्रैल–मई 2021 में आई कोरोना महामारी की देशव्यापी दूसरी लहर ने आम जनजीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। लाखों लोग संक्रमित हो गये। देशभर के अस्पतालों में बेड और ऑक्सीजन के लिए मारामारी मची रही। बड़ी संख्या में लोगों को जान गंवानी पड़ी।

➡️ अणुव्रत एक सम्पूर्ण जीवनशैली है। अहिंसक और संयमप्रधान तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित अणुव्रत का दर्शन जीवन के हर पहलू को छूता है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से लड़ने में अणुव्रत सबसे बड़ा हथियार बन सकता है। अणुव्रत जीवनशैली की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए देशभर में फैली अणुव्रत समितियों ने ऑनलाइन कार्यशालाओं का आयोजन किया। इनमें प्रख्यात चिकित्सकों तथा अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों ने अणुव्रत दर्शन, संयमित जीवनशैली की आवश्यकता तथा कोरोना से बचाव और समाधान पर विचार रखे।

➡️ अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल, श्री राजेश सुराणा, श्री प्रताप दूगड़, महामंत्री श्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री श्री संजय जैन, उत्तरांचल की संगठन संयोजिका डॉ. कुसुम लूनिया, पूर्वांचल के संगठन संयोजक श्री राकेश मालू, वेस्ट जोन के संगठन मंत्री श्री विनोद कोठारी, अणुविभा के दक्षिणांचल के संगठन संयोजक श्री कन्हैयालाल विष्णु तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी ऑनलाइन कार्यशालाओं में सहभागिता कर अणुव्रत समितियों का उत्साहवर्धन किया।

अहमदाबाद

अणुव्रत समिति अहमदाबाद की ओर से 30 मई को आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य वक्ता उपासिका श्रीमती चाँददेवी पन्नालालजी छाजेड़ ने वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए अणुव्रत जीवनशैली को सहायक बताया। उन्होंने अणुव्रतों के 11 नियमों का विवेचन करते हुए अणुव्रतों को संप्रदायमुक्त धर्म बताया। विशेष वक्ता कार्डियोलॉजिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट डॉक्टर धवल अरविंदभाई दोशी ने बताया कि शाकाहार, नशामुक्त जीवन, संयमित जीवनशैली को अपनाकर रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास के साथ ही कोरोना से भी बचा जा सकता है। उन्होंने कार्यशाला में जुड़े प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। अणुव्रत समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष श्री सुरेश बागरेचा ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला का कुशल संचालन श्रीमती डिम्पल श्रीमाल ने किया। अणुव्रत समिति मंत्री श्री मनोज सिंधी ने आभार ज्ञापन किया।

दिल्ली

अणुव्रत समिति दिल्ली एवं सहयोगी संस्था तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम दिल्ली की ओर से 1 जून को समस्याएं अनेक–समाधान एक : संयमित जीवनशैली विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला हुई। मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) नलिन के. शास्त्री (विशेष कार्य पदाधिकारी जैन विश्व भारती मानित विश्वविद्यालय लाड्नू) ने कहा—अणुव्रत एवं संयमित जीवन शैली अपना कर हम वर्तमान परिस्थितियों में अपने जीवन को सुरक्षित रखने के साथ ही इसे सुंदर एवं सुखद बना सकते हैं। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने जो अणुव्रत दर्शन दिया है, वह आज की परिस्थितियों में हमारे लिए अत्यधिक महत्व रखता है। अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने कहा कि संयमित जीवन शैली को



डॉ. धवलभाई दोशी



श्रीमती चाँद देवी



डॉ. काउतिल्य श्यामसुंदर





प्रो. (डॉ.) नलिन के.शास्त्री

अपनाकर हम अपने आपको और भावी पीढ़ी को सुरक्षित रख सकते हैं और आगे बढ़ा सकते हैं। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष डॉ. कांति श्यामसुखा ने बताया कि कैसे हम योग, प्राणायाम द्वारा एवं स्वास्थ्यवर्धक भोजन से अपने आप को मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रख सकते हैं। उन्होंने कोरोना से बचाव और इससे पैदा होने वाली समस्याओं और उनका समाधान प्रस्तुत किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के महामंत्री श्री डालिम चंद बैद तथा अणुव्रत समिति दिल्ली के निर्वत्तमान अध्यक्ष डॉ. पी.सी. जैन ने भी विचार रखे। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कमल बैगाणी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया।

जोधपुर



श्रीमती गीतिका पाण्डेय

अणुव्रत समिति जोधपुर की ओर से 6 जून को आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य अतिथि मण्डल रेल प्रबन्धक गीतिका पाण्डेय ने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत हर जीव के अस्तित्व को स्वीकार करना सिखाता है। हमें पशुओं के प्रति करुणा भाव और पौधरोपण की ओर संकल्प पूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि रेलवे ट्रैक से पशुओं को बचाने के लिए रेलवे प्रशासन भरसक प्रयत्न कर रहा है। इससे पहले समिति की अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आज के संदर्भ में अणुव्रत की महत्ता बताई। जयपुर के डॉ. अनिल भंडारी ने बच्चों में कोरोना की समस्या और उसके समाधान और सावधानियों की जानकारी दी। अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने कहा कि छोटे-छोटे व्रतों को अपनाकर बहुत सारी समस्याओं को खत्म किया जा सकता है।

प्रो. डॉ. सोहनराज तातोड़ ने अणुव्रत को साइंस ऑफ लिविंग बताते हुए कहा कि यह सोयी हुई चेतना को जगाता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. अनिता जैन ने किया। समिति मंत्री मनीष पारख ने आभार ज्ञापित किया।

हिसार



श्री राजेन्द्र सेठिया

अणुव्रत समिति, हिसार की ओर से 6 जून को आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य वक्ता श्री राजेन्द्र सेठिया ने कहा कि अणुव्रत संयम की चाबी है। यह पवित्रता, ईमानदारी, क्रोध, आवेश मुक्त जीवन जीने की कला है। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार जैन ने अणुव्रत व संयमित जीवन शैली पर विचार रखे। अणुविभा के संगठन मंत्री श्री संजय जैन ने कहा कि हमें जीवन में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। अध्यक्ष श्री कुन्दन लाल गोयल ने वक्ताओं का स्वागत किया। समिति मंत्री श्री मुनीश जैन ने आभार ज्ञापन तथा संचालन सुश्री गरिमा जैन ने किया।

नेपाल



श्री मोतीलाल दूगड़

नेपाल अणुव्रत समिति की ओर से 7 जून को ऑनलाइन जीवन शैली कार्यशाला का आयोजन ह्यूस्टन (अमेरिका) में विराजित समणी निर्देशिका मलयप्रज्ञा जी और नीति प्रज्ञा जी के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर समणी मलयप्रज्ञा जी ने कहा कि व्यक्ति अणुव्रत के नियमों के अंश मात्र अपनाकर भी आध्यात्मिक तथा सांसारिक जीवन में उत्थान कर सकता है।

मुख्य वक्ता प्राध्यापक डॉ. श्री जगदीश अग्रवाल ने संयम और अनुशासन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन के हर क्षेत्र में अणुव्रत के नियमों का विशेष महत्व है।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन ने विश्वव्यापी कोरोना महामारी की वजह से आई इस विपदा के दौरान भी भारत की सीमा से बाहर नेपाल अणुव्रत समिति के इस प्रयास की प्रशंसा करते हुए कहा कि अणुव्रत के विश्व भर में प्रचार-प्रसार का रास्ता नेपाल से खुला।

मुख्य अतिथि नेपाल के प्रधानमंत्री के विशेष आर्थिक सलाहकार श्री मोतीलाल दूगड़ ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि अणुव्रत के कुछ नियमों का पालन करने से ही व्यक्ति



स्वरथ एवं प्रफुल्ल महसूस करने लगता है। इससे पहले नेपाल अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश कुमार नौलखा ने वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया।

नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद के अध्यक्ष श्री पवन मित्तल ने विपश्यना ध्यान तथा नेपाल अणुव्रत समिति के सलाहकार श्री हरिशंकर निरौला ने अणुव्रत के नियमों पर प्रकाश डाला। नेपाल अणुव्रत समिति के महासचिव श्री विमल चंद राखेचा ने धन्यवाद ज्ञापन तथा उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता सेठिया ने संचालन किया।



श्री प्रदीप बोरड



डॉ. प्रज्ञा कावड़िया



डॉ. आनंद जैन



डॉ. पंकज लोढ़ा



श्री अशोक संचेती

जयपुर

अणुव्रत समिति जयपुर की ओर से 10 जून को ऑनलाइन कार्यशाला हुई। इसमें मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त आईएएस व राजस्थान स्टेट पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड के निदेशक श्री प्रदीप बोरड ने कहा कि डर या घबराहट कोरोना संक्रमण का एक बहुत बड़ा कारण है। इसके इलाज में होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति काफी कारगर साबित हो रही है। एक अन्य वक्ता डॉ. प्रज्ञा कावड़िया ने ब्लैक फंगस के लक्षण बताते हुए कहा कि शुरुआती दौर में ही डॉक्टर की सलाह आवश्यक है। डायबिटीज व स्टेरोयॉड के प्रयोग की वजह से भी इसका प्रकोप बढ़ा है। इससे बचाव के लिए सफाई का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। इससे पहले समिति के अध्यक्ष श्री विमल गोलछा ने वक्ताओं तथा कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति जयपुर की मंत्री डॉ. जयश्री सिंद्धा ने किया। सह सचिव श्री विनोद बैद ने आभार व्यक्त किया।

सिलीगुड़ी

अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी की ओर से 10 जून को ऑनलाइन कार्यशाला समणी नियोजिका डॉ. भास्कर प्रज्ञाजी के सान्निध्य में हुई। इसमें मुख्य अतिथि शिशु विशेषज्ञ डॉ. प्रिंस पारख ने कोरोना काल में बच्चों की देखभाल से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। वहीं, दिल्ली के नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. आनंद जैन ने कोरोना संक्रमण के बाद मधुमेह के खतरे तथा किडनी संबंधी बीमारियों तथा उनके उपचार के बारे में बताया। कोरोना काल में बच्चों को कैसे सुरक्षित रखें—इस विषय पर श्री मदन मालू ने विचार रखे। अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी के अध्यक्ष श्री तोलाराम सेठिया ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती भारती मालू तथा आभार ज्ञापन श्री सुरेंद्र घोड़ावत ने किया।

मुम्बई

अणुव्रत समिति मुम्बई की ओर से 23 मई को आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि अणुव्रत सेवी राजेंद्र सेठिया जयपुर से तथा डॉ. पंकज लोढ़ा मुम्बई से शामिल हुए। दोनों वक्ताओं ने स्वरथ और खुशहाल जीवन के लिए महत्वपूर्ण टिप्प दिए। उन्होंने कहा कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए इन्द्रियों पर संयम रखना आवश्यक है। हमें खाने का संयम, त्याग की चेतना को जाग्रत करना, ध्यान—जप करना, नैतिकता व प्रामाणिकता पूर्ण आचरण करना तथा अणुव्रत के नियमों पर चलते हुए संयमित व अनुशासित जीवन जीना चाहिए। इससे हम कोरोना के विरुद्ध ही नहीं, बल्कि भविष्य में आने वाली हर विपदा पर विजय पा सकते हैं। अणुव्रत समिति मुम्बई की अध्यक्ष श्रीमती कंचन सोनी ने वक्ताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन समिति की मंत्री श्रीमती वनिता बापना ने किया।

भीलवाड़ा

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की ओर से 4 जून को आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य वक्ता श्री अशोक संचेती ने कहा कि जीवनशैली को अच्छा बनाना है तो हमें संयम और अपरिग्रह की साधना करनी चाहिए। डॉ. चेतन सामरा ने कोरोना से बचाव के उपायों की जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन मंत्री श्री राजेश चोरड़िया तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री श्रीमती सुमन लोढ़ा ने किया।

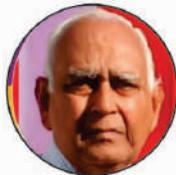




श्री जयप्रकाश दौड़



डॉ. प्रेमलता चोरड़िया



डॉ. महेन्द्र कर्णाकर



डॉ. पंकज पटावरी



श्री मर्यादा कोठारी



प्रो. डॉ. ओ.पी. गुप्ता



डॉ. रमित कौर

हावड़ा

अणुव्रत समिति हावड़ा की ओर से 31 मई को आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य वक्ता प्रो. सुमेरचंद जैन ने वैश्विक समस्याओं के समाधान में अणुव्रत जीवनशैली को सहायक बताया। एक अन्य वक्ता उपासिका डॉ. प्रेमलता चोरड़िया ने कहा कि अणुव्रत जीवनशैली जहाँ व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण कर स्वकल्याण का आधार तैयार करती है, वहीं समाज, राष्ट्र और विश्व के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह जीवनशैली इंसान को प्रकृति से जोड़ती है, मानव को मानव से जोड़ती है। उपासक श्री जयप्रकाश दौड़ ने कहा कि शाकाहार, नशामुक्त जीवन, संयमित जीवनशैली और रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास करके कोरोना से बच सकते हैं। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष श्री मनोज कुमार सिंधी ने सभी का स्वागत किया।

ग्रेटर सूरत

अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत की ओर से 31 मई को ऑनलाइन जीवनशैली कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अर्जन-विसर्जन में संतुलन बनाते हुए, वाणी संयम, खाद्य संयम आदि संयमित जीवन जीने में अणुव्रत को सशक्त माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग, अव्यवस्थित दिनचर्या, नशीले पदार्थों का सेवन, जरूरत से ज्यादा भोजन तथा आडम्बर-प्रदर्शन ही कोरोना महामारी एवं अन्य सभी समस्याओं के लिए जिम्मेदार हैं। दूसरे प्रमुख वक्ता डॉ. पंकज पटावरी ने कहा कि किसी भी बीमारी के शुरुआती लक्षण दिखते ही बिना विलम्ब किए चिकित्सक से दिखाएं। संतुलित भोजन, नित्य व्यायाम, स्वच्छता आदि का जागरूकता से पालन करें, केवल दवाएं खाने से आप स्वस्थ नहीं रह सकते। उन्होंने कोरोना और इसके बदलते स्वरूप तथा ब्लैक फंगस व व्हाइट फंगस के बारे में जानकारी देने के साथ ही प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। समिति अध्यक्ष श्री विजयकांत खटेड़े ने सभी का स्वागत किया। संचालन मंत्री श्री सुनील श्रीश्रीमाल तथा आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष श्री अरुण कानूंगा ने किया।

गुवाहाटी

समर्णी निर्देशिका विनीत प्रज्ञाजी व समर्णी जगत प्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में अणुव्रत समिति गुवाहाटी की ओर से 2 जून को ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। समर्णी निर्देशिका विनीतप्रज्ञाजी ने कहा कि इस कोरोना की वजह से हमने बहुत कुछ खोया है। फिर भी हमें नकारात्मक सोच को त्यागकर सकारात्मक सोच से अपने आत्मबल को मजबूत करना है। अणुव्रत संयम सिखाता है। हम संयम से ही अपने आपको कोरोना से बचा सकते हैं। मुख्य वक्ता प्रो. डॉ. ओ. पी. गुप्ता ने कहा कि संयम और अनुशासन को अपनाकर ही कोरोना से बचाव संभव हो सकेगा। उन्होंने कोरोना से बचाव और उपचार के कई घरेलू नुसखे भी बताए। समिति अध्यक्ष श्री बजरंग लाल डोसी ने सभी का स्वागत किया। संचालन कोषाध्यक्ष श्री संजय चोरड़िया तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री श्री पवन जम्मड़ ने किया।

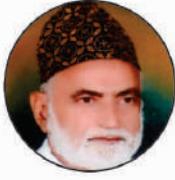
पालघर

23 मई को अणुव्रत समिति पालघर की ओर से आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ. रमित कौर साहनी व डॉ. ब्रिजमीत कौर ने स्वस्थ व खुशहाल जीवन के लिए जरूरी टिप्प दिए। उन्होंने कहा कि रोग प्रतिरोधक शक्ति के लिए सही पोषण की जरूरत है। इससे हम कोरोना के विरुद्ध ही नहीं, भविष्य में आने वाली हर विपदा पर विजय पा सकते हैं। समिति अध्यक्ष श्रीमती निधि सिंधवी ने सभी का स्वागत किया। संचालन श्री विक्रम बाफना और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष श्रीमती वनिता बाफना ने किया।





प्रो. सुमेरचंद जैन



सरदारअली पड़िहार



श्री भूपेन्द्र मुथा



डॉ. मनीषा चोपड़ा

बीकानेर

अणुव्रत समिति बीकानेर ने 23 मई को ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता प्रो. सुमेरचंद जैन ने कहा कि व्यक्ति अपनी वृत्तियों का परिमार्जन करे। नशामुक्त जीवन ही मानव का सच्चा शृंगार है। व्यसन मुक्त जीवन का संकल्प धारण कर व्यक्ति सही जीवनशैली अपना सकता है। प्रेक्षाध्यान प्रभारी साहेब सरदारअली पड़िहार ने कहा कि एकाग्रता से ही नैतिक संस्कारों का विकास किया जा सकता है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास को दिनचर्या में समाहित करने का आह्वान किया। जीवन विज्ञान प्रभारी श्री सुंदरलाल झाबक ने कहा कि संकल्प, कायोत्सर्ग, प्राणायाम हमारे उच्च जीवन के संकेत हैं। विद्या के प्रांगण में शिक्षा का नव-निर्माण जीवन विज्ञान से संभव हो सकता है। समिति के अध्यक्ष श्री झंवरलाल गोलछा ने कार्यशाला से जुड़े लोगों का अभिवादन व धन्यवाद ज्ञापन किया।

बैंगलुरु

अणुव्रत समिति बैंगलुरु की ओर से ऑनलाइन जीवनशैली कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता महासभा के पूर्व सहमंत्री व तेरापंथ द्रस्ट गांधीनगर के मंत्री भूपेन्द्र मुथा ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी की दूरदर्शिता का उल्लेख करते हुए अणुव्रत दर्शन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों का पालन कर हम कोरोना महामारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। एक अन्य वक्ता होम्योपैथिक डॉक्टर मनीषा चोपड़ा ने कोरोना से बचाव के लिए प्रेक्षाध्यान, प्राणायाम, व्यायाम तथा संतुलित आहार की आवश्यकता जताई। साथ ही इम्युनिटी बढ़ाने के लिए विटामिन सी, विटामिन डी, हल्दी, ग्रीन टी आदि का प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि फेफड़ों को स्वच्छ रखने के लिए गाजर का भी उपयोग किया जा सकता है। अणुविभा के संगठन मंत्री श्री कन्हैयालाल चिप्पड़, तेरापंथ सभा गांधीनगर के अध्यक्ष सुरेश दक व द्रस्ट अध्यक्ष श्री गौतम मुथा ने भी विचार रखे। इससे पहले समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पोरवाल ने वक्ताओं तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन और संयोजन श्रीमती शांति सकलेचा तथा आभार ज्ञापन मंत्री श्री माणकचंद संचेती ने किया।

◆◆ कार्यक्रम का उद्देश्य ◆◆

- प्रतिभागी व्यक्ति को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान विषय के प्रयोक्ता और प्रवक्ता बनाना व अणुव्रत आन्दोलन की हीरक जयंती तक देश-विदेश में दक्ष प्रबोधकों का एक वृहद नेटवर्क तैयार करना।
- प्रथम चरण में “अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता-2020” के श्रेष्ठ 340 प्रतिभागियों को यह अवसर सुलभ। सर्वे फॉर्म रूपी एक प्रश्नावली के माध्यम से 100 प्रतिभागियों का चयन। प्रश्नावली एक के लिए किसी पूर्व तैयारी की अपेक्षा नहीं होगी।
- 27-28-29 अगस्त को राजसमंद - भीलवाड़ा में 3 दिवसीय प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन। कार्यशाला के माध्यम से अणुव्रत प्रबोधक के रूप में भावी भूमिका की तैयारी।
- अणुव्रत प्रबोधक के रूप में अणुव्रत आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के इच्छुक अन्य साथियों के लिए भी अगले चरण की घोषणा शीघ्र।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

श्री मर्यादा कोठारी 9414134340



...तो कंधे पर सिलेंडर लादकर स्कूल जाएंगे नौनिहाल



४८ अणुव्रत विश्व भारती की ओर से ५ जून को "अब हर दिन पर्यावरण दिवस" विषयक वेबीनार का आयोजन किया गया। देशभर से बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल हुए। इस अवसर पर राजसमंद जिला के पिपलांत्री के पूर्व सरपंच पद्मश्री श्याम सुंदर पालीवाल ने कहा कि गांव के गरीब से गरीब लोग भी जनहितार्थ के काम करें तो वे भी महापुरुष बन सकते हैं। हमारा सबसे बड़ा तीर्थस्थान हमारा गांव है। हर ग्रामवासी को इस बात का अहसास होना चाहिए। हमने इसी भावना के साथ काम किया जिससे पिपलांत्री गांव को कई पुरस्कार मिले और आज देश ही नहीं, बल्कि दुनिया में इसका नाम है।

४९ श्री पालीवाल ने शुरुआती दौर को याद करते हुए कहा कि जब मैं सरपंच चुना गया था तब पानी की बड़ी किल्लत थी। मार्बल खदानों के कारण हरियाली का नामो-निशान नहीं था। मैंने लोगों से कहा कि सरकार से पंचायत के लिए जो पैसा आएगा, उससे आपके लिए विकास के कार्य कराऊंगा। मैं अपने घर से कुछ नहीं लाऊंगा न ही अपने घर एक पैसा ले जाऊंगा। मेरे गांव के लोगों ने सरकारी योजनाओं में मजदूरी और मानदेय लेकर काम किया। नतीजा सामने है। 15 साल पहले बनाई गई नालियां आज भी सुरक्षित हैं। तब के लगाए गए पौधे आज वृक्ष बन चुके हैं। चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती है। गांव का जलस्तर बढ़ गया है। राजस्थान के मुख्यमंत्री ने पिपलांत्री में प्रशिक्षण केंद्र खोला और अधिकारियों की नियुक्ति की। देश की कई पंचायतें आज पिपलांत्री मॉडल पर काम कर रही हैं। कई मुख्यमंत्रियों ने अपने यहां इसे शुरू करने का एलान

किया है। श्री पालीवाल ने प्रतिभागियों से पिपलांत्री आने का आह्वान करते हुए कहा कि कुछ हमें सिखा जाइए, कुछ हमसे सीख जाइए। हम सब मिलकर इस धरती को हरी-भरी बनाएं।

५० ग्रीनमैन के नाम से प्रसिद्ध श्री विजयपाल बघेल ने कहा कि हमलोग बचपन में केवल बस्ता लेकर स्कूल जाते थे, आज हमारे बच्चे पानी की बोतल लेकर स्कूल जाते हैं। हमने यदि वृक्ष लगाने की अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई तो आने वाली पीढ़ी के नौनिहालों को कंधे पर ऑक्सीजन का सिलेंडर लेकर स्कूल जाना पड़ेगा। आज हरियाली को खत्म किया जा रहा है। विनाशकारी विकास के नाम पर सैकड़ों पेड़ काटे जा रहे हैं। इसके एवज में पौधे लगाने की बात कही जाती है लेकिन पौधरोपण से इसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। पिछले कई दशकों के दौरान प्रकृति के साथ छेड़खानी की गई, इसका दुष्परिणाम आज कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी के रूप में हमारे सामने है। अभी हाल ही कोरोना की देशव्यापी विनाशकारी दूसरी लहर के दौरान गांवों में कम लोग प्रभावित हुए। इसकी वजह यही रही कि गांवों में अधिक पेड़ होने के कारण ऑक्सीजन लेवल सही रहा, जबकि शहरों में पेड़ कम होने के कारण लोगों को अधिक दुश्वारियां झेलनी पड़ीं। उन्होंने कहा कि प्रति व्यक्ति 500 पेड़ होने चाहिए, जबकि यह संख्या 422 ही है। हमें अगर जिंदा रहना है तो ऑक्सीजन चाहिए और इसके लिए हमें पौधे लगाने ही होंगे। हमें हर अगली सांस के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए हर तीन सेकंड के बाद पर्यावरण की चिन्ता करनी चाहिए।

५१ उन्होंने कहा कि हमारे यहां 84 लाख योनियों की बात कही जाती है, मगर उसमें प्रकृति को नुकसान पहुंचाने का कुत्सित कार्य केवल और केवल मनुष्य ही करता है। बाकी 83 लाख 99 हजार 999 योनियों के जीव प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलते हैं। वे प्रकृति को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। आचार्य श्री तुलसी के वक्तव्य "एकमात्र पेड़ से ही सकारात्मक ऊर्जा मिलती है" को उद्धृत करते हुए श्री बघेल ने आह्वान किया कि पेड़



WATER SAVING 365 DAYS

आइए जल संरक्षण को
बनाएं दैनिक जीवन का हिस्सा



5th JUNE
WORLD ENVIRONMENT DAY

मैं शपथ लेता/लेती हूं
कि मैं...

- मैं आरओ का उपयोग तभी करूँगा/करेंगी जब पानी का टीडीएस 150 से अधिक होगा। 150 टीडीएस से कम पानी के लिए मैं यूट्री फिल्टर का उपयोग करूँगा/करेंगी।
- यदि आरओ का उपयोग करता अनिवार्य है, तो मैं आरओ के अपशिष्ट जल का उपयोग वृक्षारोपण, हाउसकीपिंग, कफड़े धोने, फ्लशिंग आदि के लिए करूँगा/करेंगी।
- मैं ऐसे फलत टैंक का उपयोग करूँगा/करेंगी, जिसमें पानी के निपटन के दो विकल्प होंगे। क्योंकि प्रेशर के बाद फ्लश करने के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है।
- मैं पानी के रिसाव की नियमित जांच करता रहूँगा/रहेंगी।
- मैं औवरहेड टैंक में सेसर का उपयोग मोटर और पंप को ऑटो कार्टने के लिए करूँगा/करेंगी। जब टैंक भर जाएगा, यह टैंक के अतिप्राप्त को रोक देगा।
- मैं घर और ऑफिस में बाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम टैयर करूँगा/करेंगी।
- मैं ब्रांश करने और शैविंग करते समय पानी के उपयोग को कम से कम करने की कोशिश करूँगा/करेंगी। आवश्यकता पड़ने पर ही मैं नल खोलूँगा/खोलूँगी।



ANUVRAT
VISHWA
BHARATI
SOCIETY

“अब हर दिन पर्यावरण दिवस”

संकल्प अभियान का शुभारम्भ

* 5 जून, अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के अवसर पर अनुविभा द्वारा “अब हर दिन पर्यावरण दिवस” थीम से एक संकल्प अभियान प्रारम्भ किया गया है। इसी के साथ 3 पोस्टर जारी किए गए जिनमें 21 संकल्प दिए गए हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जागरूकता दिखाते हुए हम इनमें से यथासंभव संकल्प ले सकते हैं। अनुविभा आपको आमंत्रित करती है। आइए, छोटा एक कदम उठाएं, आप और हम मिल कर, अपने परिवार और साथियों को साथ जोड़ कर, आज की ओर आने वाली पीढ़ी को एक सुन्दर पर्यावरण उपहार में देने का संकल्प लें। संकल्पों के कुछ विकल्प आपको ऑनलाइन प्लेज के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे हैं। अपने अंतःकरण से पूछें, संकल्प लें और उन पर दृढ़ बने रहें। इसमें आपको अनुविभा का यह अभियान मदद करेगा, आप द्वारा लिए संकल्पों की याद दिलाएगा और आपको प्रेरित करेगा कि आप पर्यावरण के संरक्षण में कितने सहयोगी हो रहे हैं।

* आप ये संकल्प अपने मोबाइल, लैपटॉप पर कुछ मिनट का समय देकर ले सकते हैं। संकल्प लेने के बाद आप उसे कितनी दृढ़ता से निभा रहे हैं, इस दिशा में भी यह अभियान आपके साथ एक मित्र के रूप में खड़ा रहेगा और आपकी उपलब्धियों को सामने लायेगा।

* संकल्प पत्र के लिए देखें *

<https://anuvibha.org/environmet-conservation/>



अनुव्रत | मई–जुलाई 2021 | 71

पौधे लगाकर किया धरती का शृंगार

देश भर में स्थित अणुव्रत समितियों की ओर से पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाने के साथ ही इनकी देखभाल का संकल्प लिया गया। महिलाओं तथा बच्चों ने भी इसमें महत्वपूर्ण सहभागिता निभाई।

लाडनूँ

अणुव्रत समिति लाडनूँ की ओर से ग्राम खानपुर में सरपंच हरदयाल रुलानिया, समाजसेवी रघुवीर सिंह राठौड़, भाजपा जिलाध्यक्ष गजेन्द्र सिंह सहित समिति के सदस्यों ने 21 पौधे लगाए।

राजसंमद

राजसंमद अणुव्रत समिति की प्रेरणा से जिले में हर आयुर्वेद कर्मचारी ने पांच-पांच पौधे लगाये। इस प्रकार लगभग 600 पौधे लगाकर उनकी देखरेख का जिम्मा लिया गया। विभाग की पहल पर औषधीय पौधे लगाने में कई ग्राम पंचायतों के सरपंच एवं आम जनता ने भी सहयोग किया। समिति के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र महात्मा ने सभी का आभार ज्ञापित किया। इसके साथ ही अन्नपूर्णा माता की पहाड़ियों पर बीज का बिखराव भी किया गया।

इस्लामपुर

अणुव्रत समिति इस्लामपुर की ओर से कोरोना संक्रमण के मद्देनजर घर में ही पड़ोसियों के साथ मिलकर पौधे लगाए गए। बंगाईगांव अणुव्रत समिति के सदस्यों ने भी अपने-अपने घरों में एक-एक पौधा लगाया।

सुजानगढ़

अणुव्रत समिति सुजानगढ़ की ओर से उपखण्ड अधिकारी मूलचंद लूणियां के सान्निध्य में कृषि उपज मंडी के पीछे संतोष वाटिका में पौधारोपण के साथ ही पक्षियों के लिए परिंडे व घोंसले लगाए गए। समिति ने देव सागर सिंधी जैन मंदिर में भी 21 छायादार व 21 फलदार पौधे लगाए।

पौधे लगाने वालों में संतोष देवी जालान, तपन जैन व अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महेश तंवर, निवर्तमान अध्यक्ष सांवरमल जालान, उपाध्यक्ष गजानंद गुर्जर, सहमंत्री दीपक कौशिक, संगठन मंत्री व देव सागर सिंधी जैन मंदिर के मैनेजर हेमराज नाहटा, अरविंद जालान, ईशाक चौधरी, श्रवण जालान, चुन्नीलाल बावरी, नवीन बगड़ा, दिलीप तंवर, सलिल चौधरी आदि शामिल रहे।



लाडनूँ



गुवाहाटी



रायपुर



मुंबई

अणुव्रत समिति मुंबई की ओर से कांदीवली पूर्व, कुर्ला, पनवेल, खोपोली तथा घाटकोपर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश जैन, सह संयोजक जयेश छाजेड़, क्षेत्रीय सहसंयोजिका श्रीमती भारती राठौड़, अणुव्रत कार्यकारिणी समिति से श्रीमती मधु सियाल, क्षेत्रीय संयोजक राजेश मेहता, अणुव्रत कार्यकारिणी समिति से अलका मेहता व रायगढ़ से विकास मेहता, क्षेत्रीय संयोजक राजेश कुमठ, सह संयोजक मुकेश धाकड़, धनराज डांगी आदि ने महत्वपूर्ण सहभागिता निभाई।

गुवाहाटी

अणुव्रत समिति गुवाहाटी ने इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, गोपीनाथ नगर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। अध्यक्ष श्री बजरंग लाल डोसी ने बताया कि इस अवसर पर 20 पौधे लगाये गये। इस अवसर पर नन्हे—मुन्ने बच्चों के साथ वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बजरंग बैद, मंत्री श्री पवन जम्मड़, सहमंत्री श्री अशोक बोरड़ व श्री जयकुमार भंसाली, कोषाध्यक्ष श्री संजय चौराड़िया, कार्यकारिणी सदस्य श्री ताराचंद ठोलिया, श्री प्रकाश गोलछा व सदस्य श्री संदीप बैद उपस्थित थे।

सिलीगुड़ी

अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी की ओर से महावीर इंटरनेशनल द्वारा संचालित वृद्ध आश्रम में कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्षता श्री तोलाराम सेठिया ने की। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के निर्वत्मान अध्यक्ष श्री बच्छराज बोथरा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री राजेश केजरीवाल ने किया।

भुज

अणुव्रत समिति भुज द्वारा पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भाई मेहता, सभाध्यक्ष श्री हसमुखभाई मेहता, समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री वाडीलाल मेहता, तेयुप अध्यक्ष श्री भरत मेहता, मंत्री जयेश दोशी आदि ने पर्यावरण रख—रखावन हेतु सघन प्रयत्न करने की शपथ ली।

अन्य

अणुव्रत समिति किशनगंज और व्यारा के सदस्यों ने भी पौधे लगाए। अणुव्रत समिति दलखोला के अध्यक्ष श्री नागराज गधैया ने भी पौधरोपण किया।

अणुव्रत समिति रायपुर की ओर से आयोजित पौधरोपण कार्यक्रम में तेयुप रायपुर के अध्यक्ष श्री निर्मल बैंगाणी और उपाध्यक्ष श्री मनीष जी दुगर उपस्थित थे। फारबिसगंज अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रभा सेठिया एवं अन्य लोगों ने भी पौधे लगाये।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर वेबिनार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर वेबिनार का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विनीता नखत ने अणुव्रत गीत से किया। अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए योग के महत्व पर विचार रखे। जीवन विज्ञान विभाग के केन्द्रीय संयोजक श्री अरविन्द सेठिया ने भी विचार व्यक्त किये। योग विशेषज्ञ श्री हरीश भंडारी एवं श्रीमती संगीता बोहरा ने योग एवं प्राणायाम की विशेषताओं पर प्रकाश डालने के साथ ही वेबिनार से जुड़े प्रतिभागियों को योगाभ्यास एवं प्राणायाम करवाया।

अणुविभा के महामंत्री श्री भीखम सुराणा ने आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि आज की परिस्थिति में योग एवं प्राणायाम का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यक्रम का संचालन जीवन विज्ञान विभाग सह संयोजिका नम्रता गौतम कुमार ने किया।

श्री हनुमानमन जी बैंगानी का विशिष्ट सहयोग



श्री हनुमानमल बैंगानी बीदासर निवासी—दिल्ली प्रवासी श्री बच्छराज बैंगानी के सुपुत्र हैं। आध्यात्मिक नैतिक व्यक्तित्व के धनी हनुमानमलजी अपने पुत्र आभिषेक आदि के साथ सपरिवार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य प्रवर के पावन सन्निध्य में 15 दिनों तक दो बार सेवा का लाभ भी ले चुके हैं। इनकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती कुसुम देवी बैंगानी का हाल ही में आकस्मिक निधन हो गया था। हनुमानमल जी ने उनकी पुण्य स्मृति में बाल पत्रिका “बच्चों का देश” की 700 प्रतियों की एक वर्ष की सदस्यता के लिए आर्थिक सौजन्य प्रदान किया है। पत्रिका की लगभग 600 प्रतियां दिल्ली ज्ञानशाला तथा शेष पत्रिकाएं दिल्ली के अन्य विद्यालयों को भिजवायी जा रही हैं। अणुव्रत समिति दिल्ली के उपाध्यक्ष श्री कमल बैंगानी, मंत्री डॉ. कुसुम लूनिया तथा ज्ञानशाला संयोजक श्री अशोक बैद के विशेष प्रयास से हुए इस प्रेरक कार्य के लिए अणुव्रत विश्व भारती इन सभी का आभार व्यक्त करती है।





पाठ्कों के लिए विशेष प्रतियोगिता



अणुव्रत
Q10

आपको
करना है
बस इतना

- ❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के अप्रैल 2021 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
- ❖ अप्रैल 2021 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना



व्रत मनुष्य को किससे बचाता है? **01**



प्रेमचंद ने किसको भारत का मैक्सिसम गोर्की कहा था? **02**



बच्चों के संस्कारों की पहली शाला कौन-सी होती है? **03**



कर्मवाद की भाषा में तनाव का सबसे बड़ा हेतु कौन-सा कर्म है? **04**



अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता-2021 का लोकार्पण कब हुआ? **05**



पैरों से अपनी किस्मत लिखने वाली प्रिंसी गोगोई कहाँ पैदा हुई? **06**



'द साइंस ऑफ सेल्फ डिसिप्लीन' पुस्तक के लेखक कौन है? **07**



दुर्योधन के अन ने महाभारत के किस वीर को कमजोर और कापुरुष बना दिया? **08**



'ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वांगवाणी सरस्वती' भाषा की यह परिभाषा किस ग्रंथ में दी गई है? **09**



अणुव्रत के कौन-से स्थाना दिवस पर अणुविभा की ओर से "मैटिया के साथ अणुव्रत संवाद" का व्यापक आयोजन हुआ? **10**

ज्ञातव्य बिंदु

- प्रतियोगिता के प्रश्न अप्रैल 2021 के अंक पर आधारित।
- परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होती।
- प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर मैंजने वाला पाठक विजेता होगा।
- एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्वाचित होगा।
- विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- सही उत्तरदाताओं के नाम एवं स्थान का पत्रिका में उल्लेख होगा।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-2323 3345
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

- | | |
|------------------------|---|
| विजेता | <ul style="list-style-type: none"> नकद रु. 2100/- अणुव्रत पत्रिका की ड्रैवरीपृष्ठ सदस्यता |
| प्रोत्साहन - दो | <ul style="list-style-type: none"> नकद रु. 1100/- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता |
- उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 अगस्त, 2021

मार्च 2021 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(फरवरी 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है-

विजेता



-:- प्रोत्साहन पुरस्कार :-

श्रीमती ममतादेवी कंकरिया

पचपदरा

श्रीमती जागृति बोथरा

बीकानेर

श्री निलेश सकलेचा

बालोतरा

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

प्रणुत धीम	चैन्हाई	रोक लांगी
निलेश वैद	वैदन्द	शुभकरण वैद
सरजु चौरेड्या	बैगलुरु	सम्पतलाल रेडिया
मनु वैद	सूरत	ललिता वर्षोली
ज्ञा. कार्ति जैन	जोधपुर	मानाना देवी लुकड
ज्ञा. कार्ति तुकड	पचपदरा	लमलता
जैन दलीचंद कच्छारा	आमट	लगा मुखा
प्रणुत नाहर	जोधपुर	ज्योतिष नाहर
अलका देवी	पचपदरा	तुलाली देवी
विष्णु चौपडा	पचपदरा	मगवती चौपडा
विष्णु चौपडा	बोडमेर	विष्णु चौपडा
चारल चौपडा	पचपदरा	संवीता चौपडा
सुरेश चौपडा	पचपदरा	सिंधि जैन
तिलार्ह जैन	जोधपुर	जयिता चौपडा
अर्जुली चौपडा	पचपदरा	कविता चौपडा
निष्ठा सोठिया	सूरत	कमलसिंह बुल्ला
श्रीयस जैन	विठ्ठलीडगढ़	छोटालाल शह
जैदा मेहता	जोधपुर	सरता कोठरी
हर्षल मेहता	जोधपुर	गमता देवी
खुब्ब जैन	सूरत	जोधपुर
मनाली भवाली	सूरत	अजीती प्रसाद जैन
शोभा देवी भवाली	पचपदरा	खुब्ब बाठिया
मनीषी संकलेचा	पचपदरा	राजू संकलेचा
संकेता जैन	पचपदरा	रामविलास जैन

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

- | | | |
|---|------------------------------|--------|
| विशेष अंक पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर | उत्तर 01 : जीनावार्य कुदकुद | पृ. 29 |
| | उत्तर 02 : सत्य-शोधक वृति | पृ. 13 |
| | उत्तर 03 : तुलसीदास जी का | पृ. 18 |
| | उत्तर 04 : चावाक दर्शन | पृ. 06 |
| | उत्तर 05 : शोगासन और व्यायाम | पृ. 23 |
| | उत्तर 06 : रोमन क्रैजनेरिक | पृ. 24 |
| | उत्तर 07 : महरिकपर मश्वरी | पृ. 22 |
| | उत्तर 08 : मोह | पृ. 08 |
| | उत्तर 09 : नैतिकता के | पृ. 19 |
| | उत्तर 10 : 32 | पृ. 30 |



SAVING ENVIRONMENT 365 DAYS

Lets make Environment Conservation
a part of lifestyle...



Let us pledge
that...

1. मैं हर साल 5 पेड़ लगाऊंगा/लगाऊंगी और उनकी नियमित देखभाल करूँगा /करूँगी।
2. कार्यालय में कागज का उपयोग अत्यावश्यक होगा तभी करूँगा /करूँगी।
3. मैं कागज के गिलास, टिश्यू पेपर का उपयोग नहीं करूँगा /करूँगी।
4. रीसाइकल और रियूज किए हुए समान को प्राथमिकता दूंगा/दूंगी।
5. मैं आस-पास के क्षेत्र के लिए वाहन का उपयोग नहीं करूँगा/करूँगी।
6. साइकिल चलाने में हीनभावना नहीं वरन् गौरव अनुभव करूँगा/करूँगी।
7. भोजन की बर्बादी स्वयं नहीं करूँगा/करूँगी, अन्यत्र भी रोकने का प्रयास करूँगा/करूँगी।
8. शाकाहार को अपनाऊंगा और पारिस्थितिक सन्तुलन में सहयोगी बनूँगा/करूँगी।



ANUVRAT
VISHWA
BHARATI
SOCIETY

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
May-July, 2021

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23

Licence No. U(C)-215/2021-23

Licensed to post without pre-payment

Date of Publication 25/06/2021

Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.

We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:



India's first concept store
for stone display



Finest Selection of
Premium Tiles



Rajasthan's Largest Decorative
Lights Display



India's best collection of
Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -

The Urban Village by Galaxy Enclave, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

राजस्थान की राजधानी जयपुर की विश्व स्तरीय टाउनशिप में
बनायें अपने सपनों का आशियाना



RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364



GALAXY ENCLAVE THE URBAN VILLAGE

Modern Day Luxuries In Harmony With Nature

250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur

TO KNOW MORE, CALL US ON

+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in

www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुब्रत विश्व भारती की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संचय जैन